शक्तिवाद

(राजनीति सम्बन्धीय शक्तिशाली मतवाद)

ब्रह्मचारी सत्यानन्द

(राजनीति सम्बन्धीय शक्तिशाली मतवाद)

लेखक—

ब्रह्मचारी सत्यानन्द

(ग्रंथकार लिखित क्रमविकाश का पथ वंगभाषा में प्रकाशित हो गई है, हिन्दी भाषा में उस ग्रंथ का प्रथम खंड प्रकाशित हो चुका है)

प्रकाशक—

टीकेन्द्र नारायण राय चौधुरी

नं० १५, चौधरी पाड़ा, पो० उत्तर पाड़ा, हुगली।

जे० पी० अरोड़ा द्वारा—

लक्ष्मी-प्रेस, सोराकुआँ बनारस में मुद्रित।

सम्वत् १९९६ मकर संक्रान्ति

प्रथम संस्करण   सन् १९४० ई०   मूल्य ।।)

सूचीपत्र

———

ব্রহ্মচারী সত্যানন্দ

शक्तिवाद ?

१. केन्द्रीय शासन (स्टेट या गवर्नमेन्ट) को ऐसी नीति पर चलना चाहिये जिसका लक्ष्य होगा प्रत्येक स्तर के मनुष्य का व्यक्तिगत तथा समाजगत विकाशोन्मुखी गति को अग्रसर कर देने के अनुकूल होना और सब स्तर के मनुष्यों के विकाशविरुद्ध सब प्रकार के व्यक्तिगत तथा समाजगत आचरण के प्रतिकूल होना, एवं जो शासन नीति ऐसी कोई अनीति का प्रश्रय नहीं देती है जिसके द्वारा किसी स्तर के मनुष्यों में अन्न, वस्त्र, शिक्षा, एवं कर्मसमस्या का उद्भव हो सकता है वह शक्तिवाद है। शक्तिवाद को पूर्ण विकाशवाद भी कहा जा सकता है।

२. जो शासन नीति को उस प्रकार से परिचालित करने के लिये, गठन करने के लिये, एवं उस ओर अग्रसर कर देने के लिये कर्मपद्धति ग्रहण करते हैं वे शक्तिवादी हैं। शक्तिवादी पूर्ण विकाशवादी अथवा निष्काम कर्मवादी भी कहे जा सकते हैं।

३. शक्तिवादी अन्याय विरोधी, तथा आसुरिक विरोधी मनोवृत्ति पर अपने को गठन करेंगे एवं अभय, सत्य, प्रेम और शान्ति का अवलम्बन करेंगे।

४. भीरुगण शक्तिवाद ग्रहण करने का सामर्थ्य नहीं रखते। इस लिये शक्तिवाद में उनके लिये कोई स्थान नहीं है। गुण्डईपन और आसुरिकता करने में भी यथेष्ट दुःसाहस का परिचय मिलता है। पर शक्तिवादी का लक्ष्य यह नहीं है। वह बल्कि उसका विरोध कर सत्साहस अर्जन करेगा।

५. सत्य—सत्य का प्रचार ही सत्य है। झूठ बात कल्पना कर प्रचार करना आसुरिक कर्मनीति का लक्षण है। जिनके कर्मनीति में मनुष्य के मनोजगत का स्वाभाविक नैतिक समर्थन नहीं है वे मिथ्या प्रचार द्वारा अपनी अनीति को अपने दल द्वारा समर्थन कराने के लिये मिथ्या प्रचार करने को

बाध्य होते हैं। शक्तिवादी वैसा नहीं करेंगे क्योंकि शक्तिवाद मनुष्य के नैतिक भित्ति पर प्रतिष्ठित है।

६. प्रेम—विद्वेषहीनता ही प्रेम (गीता का अहिंसा) है। शक्तिवादी कोई समाज, जाति, धर्म और व्यक्ति को द्वेष न करने की नीति को मान कर गुण्डईपन और आसुरिकता को प्रश्रय नहीं देंगे, बल्कि इस अनीति के गति को समझ कर इसके प्रतिकार के लिये कठोर नीति का अनुसरण करेंगे। गुण्डईपन तथा आसुरिकता के पीछे यदि किसी समाज का गुप्त तथा प्रकाश्य समर्थन न हो तो प्रचार द्वारा समाज में घृणा जगा कर इस अनीति का प्रतिकार किया जा सकता है। परन्तु यदि कोई समाज इसे समर्थन करे तो प्रचार द्वारा इसका प्रतिकार नहीं हो सकता। ऐसे मौके पर कठोर नीति ग्रहण करना छोड़ दूसरा रास्ता नहीं है। जो समाज ऐसी अनीति के समर्थक हैं शक्तिवादी किसी प्रकार के विपद में भी उस समाज के अंगीभूत किसी को भी सहायता नहीं करेंगे। यहाँ तक कि उस समाज के किसी भिक्षुक तक को एक मुट्ठी भीख भी नहीं देंगे।

७. शान्ति—अपने अपने विश्वास के अनुसार उपासना करने का अधिकार मनुष्य मात्र ही को है। सभी धर्मों के उपासना के नित्य अनुष्ठान आडम्बरहीन तथा शान्ति लाभ के अनुकूल हैं। शक्तिवाद की वही शान्ति है। इसके अतिरिक्त धर्म के नैमित्तिक (जैसे दुर्गापूजा इत्यादि) तथा वाह्यिक (जैसे रामलीला, दसहरा, ताज़िया दफ़न इत्यादि) अनुष्ठान भी हैं। धर्म के वाह्य अनुष्ठान की आड़ में अकारण ही कुछ गुण्डईपन का उद्भव हुआ है। इसे सामने रख स्थानीय प्रचलित नीति का विरुद्धाचरण कर शान्ति भंग करने से उसे गुण्डईपन ही माना जायगा।

८. आसुरिकता—जिस शासननीति के प्रभाव द्वारा या दुर्बलता के कारण मनुष्य के व्यक्तिगत और समाजगत विकाशमुखी गति में बाधा आये, तथा व्यक्तिगत अनाचार या व्यक्तिगत गुण्डईपन, समाजगत अनाचार या समाजगत गुण्डईपन, या श्रेणीगत अनाचार या श्रेणीगत गुण्डईपन को उत्साह मिले और जिस शासननीति की अदूरदर्शिता के कारण मानव समाज में अन्न, वस्त्र, शिक्षा या कर्मसमस्या का उद्भव हो वह आसुरिक शासन है। उसके प्रतिकार की चेष्टा करने से केन्द्रीय शासन उसका प्रतिकार न कर प्रतिकार चाहने वाले समाज के ऊपर अत्याचार करने लगती है।

९. विकाश के लिये ही मनुष्य ने अपने समाज में शिक्षाविभाग, विचारविभाग, समाजविभाग, धर्मविभाग, शासनविभाग और सैन्यविभाग की स्थापना की है। इनमें से यदि कोई विभाग मनुष्य के विकाश में सहायक न हो कर यदि विकाश को बाधा देने के लिये किसी प्रकार की नीति सृष्टि करे तो इस प्रकार की चेष्टा को आसुरिकता समझना चाहिये। आसुरिक शासन ही में विकाशपथ में बाधाओं की सृष्टि होती है। स्त्रियों पर अत्याचार, हिंसा, द्वेष, परश्री से डाह (दूसरे की भलाई देख कर दुखी होना) और शांतिनिष्ट प्रतिवेशी (पड़ोसी) समाज के ऊपर अन्य समाज का बार बार आक्रमण ये सब केन्द्रीय नीति में आसुरिकता या दुर्बल मनोवृत्ति के लक्षण हैं।

१०. आसुरिक मनोवृत्ति सम्पन्न मनुष्य, समाज, देश वा श्रेणी किसी विभाग में ही सुविधा हस्तगत करने पर, अन्य समाज, अन्य देश और अन्य श्रेणी के ऊपर विकाशविरुद्ध नीति की प्रतिष्ठा में यत्नशील होते हैं। इस कारण उस प्रकार के मनोवृत्ति सम्पन्न व्यक्ति द्वारा परिचालित शासननीति का शासन अत्यन्त अनीतिपूर्ण होता है। इस प्रजातांत्रिक युग में निर्वाचन प्रार्थियों में कुछ विशेष सद्गुण रहना चाहिये। ये सद्गुण यदि शक्तिस्तर के अनुकूल न हो तो उनका परिचालित शासननीति कभी सब सम्प्रदाय और श्रेणियों के विकाशानुकूल नहीं हो सकता। निर्वाचित सदस्य जिससे शक्तिस्तर की नीति अनुसरण करने को बाध्य हों इस लिये कुछ कठोर कानून रहना चाहिये। केन्द्रीय शासन में अनुदार मनोवृत्ति का परिचय मिलने से जिस किसी सदस्य पर उसका प्रयोग हो सकेगा। अनीति के प्रतिकार के लिये राजतांत्रिक युग को तोड़ कर प्रजातांत्रिक युग में परिणत किया गया था। उस अनीति का (आसुरिक शासन) कठोर प्रतिकार होना चाहिये। स्वास्थ्य, शिक्षा, विचार और शासन विभाग के प्रत्येक पद पर उन्नत मस्तिष्क और मेधासम्पन्न लोगों को नियुक्त करने की नीति को प्रवर्त्तन न करने से जनशिक्षा और जनरक्षा विभाग का कार्य स्वभावतः ही विकाशप्रतिकूल होगा; यह आसुरिक नीति का परिचायक है।

११. देवासुर संग्राम—केन्द्रीय शासन की सदिच्छा रहने से सब स्तर के मनुष्यों के विकाशानुकूल कर्मविज्ञान द्वारा केन्द्रीय शासन नीति का संशोधन सहज होगा। जिन उपायों से समाज में नारियों की मर्यादा बढ़े

उन पर ध्यान देना विशेष आवश्यक है। प्रत्येक नारी के पीछे केन्द्रीय शासन शक्ति की इतनी शक्ति केन्द्रीभूत रहना चाहिये जिससे कोई स्त्री एक प्रान्त से अन्य प्रान्त पर्यन्त अकेली विचरण करते रहने पर भी कहीं किसी को उससे अमर्यादापूर्ण व्यवहार करने का साहस न हो। देश के बेकार समस्या को हल करने का प्रोग्राम बना कर तथा वैसी व्यवस्था कर बेकार समस्या को हल करना होगा। अन्न, वस्त्र, और दूध प्रत्येक मनुष्य के लिये व्यवस्था करनी होगी। बाध्यतामूलक प्राथमिक शिक्षा की भी व्यवस्था सबको विकाशवाद के अनुकूल कर शिक्षा देनी होगी। प्रत्येक खण्ड समाज या सम्प्रदाय शक्ति-वाद के विकाशवाद की भित्ति पर संगठित होने के लिये स्वाधीन रहेंगे। फिर जिससे कोई खण्ड समाज या सम्प्रदाय को आसुरिक भित्ति पर संगठित होने का सुयोग न मिल सके उसके लिये शासन में कठोर दण्डविधान बनाना पड़ेगा। यदि सहज उपाय से शक्तिवादी गण इन नीति द्वारा केन्द्रीय शासन को न नियमित कर सकें तो उसके फल स्वरूप देवासुर युद्ध का सूत्रपात होगा।

१२. केन्द्रीय नीति का यदि आसुरिक लक्ष्य हो तो अन्यायकारी गण इन्हीं के समर्थन से टिके रहेंगे। इसलिये सब प्रकार की अनीति की विरोधिता पर आन्दोलन और संगठन खड़ा कर शक्तिवादियों को अग्रसर होना पड़ेगा। अत्याचारकारियों के अनाचार का विरोध करने पर अनाचार के मूलस्थित केन्द्रीय आसुरिक नीति के साथ अवश्य प्रत्यक्ष या परोक्ष में संघर्ष आवेगा। मनुष्य मात्र ही नीति और अनीति समझने की शक्ति रखता है इस लिये उपयुक्त बाधा पाने पर आसुरिक चिन्ता के प्रभाव से दिग्भ्रान्त मनुष्यों की संख्या क्रमशः कम होती रहेगी। शक्तिवादी गण यदि इस अनीति का विरोध न करें तो इस अनीति का समर्थन दिन पर दिन बढ़ता ही रहेगा। केन्द्रीय नीति भी सम्मान, तथा पद मर्यादा दान कर इस अनीति के समर्थक गण को और दृढ़ बना देगी। अनेक अल्प विकसित चिंता द्वारा नियमित कर्म-नीति पर प्रतिष्ठित कर्मियों की ऐसी धारणा होना सम्भव है कि केन्द्रीय नीति की विरोधिता करने के साथ साथ समाज के मध्यस्थित इन अनाचारकारियों की भी विरोधिता करने से, केन्द्रीय नीति के साथ जो संघर्ष करना है वह लक्ष्यभ्रष्ट हो जायगा; परन्तु शक्तिवादी जान रखें कि इस प्रकार के भाव-प्रवण कर्मी दुर्बल कर्मी हैं। ये लोग कितने ही नामी पुरुष क्यों न हों शक्ति-वादी गण इनके वागाडम्बर से लक्ष्य भ्रष्ट न होंगे।

१३. कर्मविज्ञान—जो शक्तिवाद कर्मविज्ञान को विस्तारित समझना चाहते हैं वे हमारे मूल ग्रंथ 'क्रमविकाश का पथ' को पाठ करें। उस पुस्तक में मनुष्यों के मनोविकाश के किस किस स्तर से किस प्रकार चरित्र सम्पन्न मनुष्य आते हैं और किस स्तर से किस प्रकार मानवसभ्यता की किन किन विभागों की उत्पत्ति हुई है इत्यादि प्रश्नों की आलोचना की गई है। विचार-विभाग, शिक्षाविभाग, समाजविभाग, धर्मविभाग और शासनविभाग के मूल में जो मनुष्य के मनोविज्ञान से सम्बन्ध रखने वाली नीति अवस्थित है इसे समझ पाने पर कर्मियों का कर्मपथ सहज हो जायगा। प्रत्येक शक्तिवादी को उपरोक्त ग्रंथ का प्रत्येक अनुच्छेद (Para) विशेष मनोयोग से पाठ करना चाहिये। उसमें विकाश के सर्वोच्च स्तर को शक्तिस्तर नाम दिया गया है। इस स्तर के कर्मविज्ञान को अवलम्बन कर यह शक्तिवाद लिखा गया है। यह षोड़श कला का विकाशक्षेत्र है। जीव जगत से आरम्भ कर सर्व्वोच्च विकाशसम्पन्न मनुष्य का इस सोलह कला के विभाग में किसका स्थान कहाँ है उसकी विस्तारित आलोचना पाठक ग्रन्थ में पावेंगे। एक कला में उद्भिद जगत, दो कला में स्वेदज, तीन कला में अण्डज और चार कला में जरायुज रखे गये हैं। मनुष्य भी जरायुज कला का जीव है। निम्न स्तर के मनोविकाश सम्पन्न मनुष्य और उन्नत स्तर के पशुओं में भेद बहुत ही कम है।

१४. मनोविकाश के पाँच कला (साढ़े चार से अनूर्ध साढ़े पाँच तक पाँच कला, साढ़े पाँच से अनूर्ध साढ़े छ तक छ कला, इस प्रकार विभाग जानना) के स्तर से विचारविभाग की उत्पत्ति हुई है। स्थापत्य विभाग और विज्ञानविभाग इस स्तर ही से आया है। इस स्तर के विकाशसम्पन्न मनुष्य अन्यायविरोधी, त्यागनिष्ठ, युद्धप्रिय, उदार मनोवृत्ति सम्पन्न, तनिक हठी प्रकृति, चरित्रवान, स्वदेशप्रेमी, कष्ट सहिष्णु, न्यायनिष्ठ, दृढ़ भाषी, साहसी और जड़विज्ञान में निष्ठासम्पन्न होते हैं। ये अन्धविश्वासी नहीं होते। विचारक, ओवरसीयर, इंजीनियर, और युवकों के नेता इत्यादि में इस स्तर के मनुष्य अधिक मिलेंगे। ये अन्याय के प्रतिकार करने में कठोर हृदय होते हैं।

१५. पाँच कला की चिन्ता से उत्पन्न दर्शन सब नास्तिक दर्शन हैं। जड़विज्ञान को प्रधानता देकर दर्शनशास्त्र न बनाने से इन लोगों को प्रिय नहीं होता है। ये लोग विश्वासवाद नहीं पसन्द करते। इस स्तर के चिंता

की भित्ति पर वर्तमान युग का धनसाम्यवाद की उत्पत्ति हुई है। इस स्तर के चिंता विज्ञान पर विचारविभाग प्रतिष्ठित है। इस स्तर के चिंता के दार्शनिक भित्तिपर प्रतिष्ठित कर्मविज्ञान और दर्शनशास्त्र इस स्तर के विकाश सम्पन्नगण को प्रिय होता है। पाठक यह याद रखें कि कम से कम सात कला का विकाशसम्पन्न चिंताविज्ञान न होने से उसे मनुष्य समाज में नहीं चलाया जा सकता है। कुछ भी हो इस स्तर के चिता विज्ञान की भित्ति पर कम्यूनिज्म स्थापित है। भारत के एक बड़े हिस्से ने (विशेष कर युवकों ने) इस स्तर की चिंता से अपनी चिंता और कर्मविज्ञान को नियमित करने के लिये आत्मनियोग किया है। इस लिये इस विषय में भी कुछ कुछ आलोचना होगी। इस स्तर के चिंता का वैशिष्ट्य ही यही है कि कल्पना करने में तो यह बहुत अच्छा लगता है; किन्तु अल्प विकशित चिता से नियमित कर्म-विज्ञान होने के कारण इसे समाज में चालू नहीं किया जा सकता। इस स्तर के चिता का यह भी एक वैशिष्ट्य है कि इस स्तर का कर्मविज्ञान केवल युद्ध करने के लिये ही उत्साह देता है; परन्तु इस विज्ञान से शासन-तंत्र नहीं चलाया जा सकता।

१६. छ कला के स्तर से शिक्षाविभाग की उत्पत्ति हुई है। चिकित्सा विभाग, प्रचारविभाग, जिस किसी समाजसेवा का विभाग, और ज्योतिष-विभाग इस स्तर के चिंता का दान है। इस स्तर के मनुष्य प्रेमी, कोमल स्वभाव धीर, और हिसाबीप्रकृति के होते हैं; मेधावी, यशस्वी, विश्वासवादी, मृदुभाषी और भावप्रवण होते हैं। स्त्रियों में इस स्तर का विकाश बहुत अच्छा विकाश समझना चाहिये। इस स्तर के पुरुषों की चेष्टा, चरित्र, बात, और चेहरा जरा स्त्रियों के ढंग का होता है।

१७. इस स्तर का दर्शनशास्त्र विश्वासवाद के ऊपर प्रतिष्ठित है। पाँच कला का दर्शन नास्तिक दर्शन है, परन्तु छः कला का दर्शनशास्त्र विश्वासवाद का दर्शन है। हमारे देश में वैष्णववाद, राम कृष्णवाद, ब्राह्म समाज का भगवानवाद, इसलाम का ईश्वर, आर्यसमाज मत का ईश्वर, ईसा के भगवान, एवं प्रचलित प्रायः सब धर्मों के ईश्वर इस स्तर की दार्शनिक भीत्ति पर प्रतिष्ठित हैं। इसलाम और आर्यसमाज की सामाजिक नीति ने इस स्तर के कर्मविज्ञान की भित्ति को अतिक्रम कर सात कला के कर्म-विज्ञान को अवलम्बन किया है। कर्मविज्ञान तथा दार्शनिक ज्ञान में इस

प्रकार का भेद होने का कारण यह है कि, मनुष्य का जन्मगत चरित्र पूर्व पूर्व जन्मार्जित विकाश की भित्ति पर स्वभावतः ही आ जाता है। उसका कर्म और चरित्र उसी विकाश के अनुरूप चरित्र में प्रतिभात होता रहेगा; परन्तु अनुभूति का ज्ञान इस जन्म की साधना और तपस्या के ऊपर निर्भर करता है। किसी मनुष्य का विकाश सात कला तक होने से उसका अनुभूतिलब्ध ज्ञान भी सात कला का होगा, ऐसी कोई बात नहीं है। इस जन्म में अनुभूति के पथ में जो जितना अग्रसर हुआ है वह उसके सृष्टितत्व या ईश्वरतत्व निरूपण में पता चलेगा। फिर सात कला में प्रतिष्ठित बुद्धिमान मनुष्य छ कला के ईश्वर तत्व की आलोचना कर उस प्रकार के दर्शन की भित्ति पर सहज ही में ईश्वर सम्बन्धीय मतवाद खड़ा कर दे सकते हैं। यहाँ यह भी कह देना आवश्यक है कि जिनका कर्म वैशिष्ट्य जिस कला का है उनके लिये उस स्तर तक अनुभूति लाभ करना सहज है। अनुभूति का ज्ञान, जो जिस कला में ही क्यों न हो, पाँच, छै, सात ऐसे क्रम ही से आवेगा। परन्तु जो 'जातस्मर' हैं उन्हें अनुभूति भी जन्म के साथ ही साथ आयेगी। इन प्रश्नों की विस्तारित आलोचना इस स्थान में नहीं हो सकती।

१८. छ कला की कर्मनीति के ऊपर वर्त्तमान गान्धीवादी कांग्रेस की कर्मनीति और दार्शनिक भित्ति प्रतिष्ठित है। इस स्तर के विकाशसम्पन्न भाववादियों के निकट इसका मूल्य हो सकता है। किन्तु शक्तिवादी इन सब से सावधान रहेंगे। इसके द्वारा समाज परिचालित नहीं हो सकता तथा आसुरिक लक्ष्यसम्पन्न समाज प्रश्रय पाता है। इस स्तर के लोगों में जिन्हें थोड़ी प्रतिष्ठा और यश प्राप्त हुई है वे समय समय पर बड़ी बड़ी वाणी (सामाजिक स्थिति तथा संसार की स्थिति पर महापुरुषों की तरह कुछ कहना) देना पसन्द करते हैं। नाम, यश होना इस स्तर की विशेषता है। इस लिये इस स्तर के यशस्वीगणों की यह धारणा होती है कि—वे इस विश्व के सब से बड़े ज्ञानी हैं तथा उनकी कपोलकल्पित कथायें या हवाई वाणियों द्वारा यह पृथ्वी एक दिन स्वर्ग में परिणत हो जायगी। मरते समय भी ये कुछ न कुछ वाणी देने का ख्याल अवश्य रखते हैं। अदूरदर्शी युवकों को यह दो एक दिन के लिये बहुत अच्छा लगने पर भी इसके द्वारा समाज का कोई विशेष उपकार नहीं होता है। क्योंकि जो ठीक ठीक कर्मी हैं वे सात कला के विकाश सम्पन्न होते हैं तथा वे इन लोगों को खूब पहचानते हैं। इन लोगों को यदि

यह पता होता कि विकाश क्षेत्र में ये केवल छ कला के विकाश हैं तो चाहे दूसरे देश का न हो हमारे देश का तो विशेष मंगल होता। यशभिखारी होने के कारण ये यशलाभ करने का मौका देख वाणी दान करते हैं। ये पाँच कला के कर्म विज्ञान और दार्शनिक ज्ञान को कभी आन्तरिक रूप से ग्रहण नहीं करते; किन्तु यश के लोभ से सुविधा होने पर नास्तिक दर्शन और धनसाम्यवाद के सपक्ष वाणी देते हैं। इस स्तर के मनुष्य यदि शक्तिस्तर को समझने की चेष्टा करें तो इनकी यह अस्वाभाविक स्पर्धा कुछ कम होती रहेगी। ये समझते हैं कि ये अधिक उदार हैं। किन्तु शाक्तिवादी अच्छी तरह याद रखें कि इनकी उदारता के झाँसे में आ जाने से आसुरिक नीति पर प्रतिष्ठित समाज द्वारा अनिष्ट सहना पड़ेगा। क्योंकि समाज मात्र ही सात कला की चिन्तापुष्ट मनुष्यों द्वारा परिचालित हुआ करता है (सात कला सम्पन्न गण दैवी भावसम्पन्न और आसुरिक दोनों ही हो सकते हैं)। छ कला के यश भिखारीगण दुर्लभ यश का अभाव होगा यह सोच कर कौशलपूर्वक उनका मनोरंजन कर ऐसी आदर्श की वाणी देते रहते हैं जिसे मान कर चलने से गुण्डईपन से आत्मरक्षा करना कठिन हो जायगा।

१९. मेधावी छात्र, शिक्षक, मुख्तार, वकील, चिकित्सक, राजदूत, स्मृतिधर, दोभाषिया, धर्मप्रचारक, वक्ता, संवादपत्रसेवी, पुरोहित, गायक, कवि, सेवाश्रमधर्मी, अहिंसावादी, रेलवे कर्मचारी, सरकारी कर्मचारी और ज्योतिषगणों में इस स्तर के विकाशसम्पन्न मनुष्य बहुत मिलेंगे।

२०. सात कला के विकाश सम्पन्न गण समाज कर्तृत्व लाभ करते हैं। ये कर्तृत्व बुद्धि सम्पन्न, तीक्ष्ण बुद्धिमान, गम्भीर स्वभाव, चक्री, मन में और वाक्य में दो प्रकार के, व बातें तथा कर्म में दो प्रकार के भाव सम्पन्न होते हैं। ये स्वभावतः ही सन्दिग्ध होते हैं; परन्तु इस स्तर के मनुष्य अथवा इससे अधिक उन्नत स्तर के मनुष्य छोड़ कोई दूसरा उसे समझ नहीं पाता। ये संगठनशक्तिसम्पन्न, भोगीचरित्र होते हैं; आदर्शवादी बिलकुल नहीं होते।

२१. सात कला के विकाशसम्पन्न मनुष्यों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। (१) दैवी सम्पदसम्पन्न सात कला का विकाश (२) आसुरिक सम्पदसम्पन्न सात कला का विकाश।

२२. दैवी सम्पदसम्पन्न गण कोमल हृदय, समाज हितैषी, दाता,

उदार चरित्र, और गम्भीर भाषी होते हैं। आसुरिक सम्पदसम्पन्न गण निष्ठुर, उत्पीड़क, शोषक तथा सुविधावादी होते हैं। गीता का षोड़श अध्याय पाठ कीजिये।

२३. समाज मात्र ही में सात कला के चरित्र सम्पन्न लोगों की तरह चरित्र वाले और एक प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं। वे भी आसुरिक कला के विकाशसम्पन्न मनुष्यों की भांति अपना चरित्र बना लेते हैं। पाँच कला से कम विकाशसम्पन्न लोग और छः कला के विकाशसम्पन्न व्यक्ति ऐसा करते देखे जाते हैं। इन लोगों को अपुष्ट आसुरिक कहा जाता है। ये आसुरिकों से भी समाज को अधिक हानि पहुँचाते हैं। इस सम्बन्ध में विस्तारित आलोचना मूल ग्रंथ में पढ़िये। हमने मूल ग्रंथ में विभिन्न कला के विकाश को भिन्न भिन्न नाम दिया है।

२४. पाँच कला के विकाश सम्पन्न मनुष्यों को ग्रंथ में गणेशस्तर का विकाश कहा गया है। छ और सात कला के विकाश को सूर्य और विष्णु कहा गया है। पाठक नाम से या कला से जिन्हें जैसे सुविधा हो आलोचना कर सकते हैं।

२५. समाज मात्र ही सात कला चिंता पुष्ट मनुष्यों द्वारा परिचालित होता है। ये यदि आसुरिक हों तो इनके द्वारा परिचालित समाज भी आसुरिक मनोवृत्ति सम्पन्न होता है। और ये यदि दैवी सम्पदसम्पन्न हों तो इनका परिचालित समाज भी वैसा ही उदार मनोवृत्ति सम्पन्न होगा। समाज की परिचालना किस प्रकार के मनुष्य करते हैं जान लेने से उनका समाज कैसा होगा जाना जा सकता है। और समाज के मनोवृत्ति से पता चलेगा कि समाज के कर्त्ता कैसे हैं। समाज और समाज कर्त्ता के असली रूप को पहचानने का यही सब से अच्छा उपाय है। ये जितना शीघ्र एक समाज या राष्ट्र की चिंताधारा को एक नये विज्ञान या संस्कार के सांचे में गढ़ दे सकते हैं वैसा किसी स्तर के मनुष्य नहीं कर सकते। वर्तमान जापान और तुर्की जिनकी चिन्ताशक्ति की भित्ति पर गठित हो उठा था वे सभी इस स्तर के मनुष्य थे। भारत के भाग्य में ऐसा न हुआ। यहाँ का राष्ट्रीय नेतृत्व कभी पाँच और छ कला को अतिक्रम कर सात कला पर प्रतिष्ठित न हुआ और उसी कारण भारत की यह दुर्दशा है। मुसल्मानों में जो इस स्तर के चिंता पुष्ट हैं (जिन्ना इत्यादि) उनमें से कोई आज तक मुसल्मान समाज की

स्वार्थ की सीमा को लंघन कर कभी अपने चिंता की भित्ति पर राष्ट्र को गठन करने के लिये राष्ट्र क्षेत्र में नहीं उतरे हैं। हिन्दुओं में जो इस स्तर के चिंता शील हैं (भाई परमानन्द, सावकर इत्यादि) उनको अदूरदर्शी पाँच कला के चिंतापुष्ट कांग्रेस बाम पंथी एवं छः कला के चिंतापुष्ट कांग्रेस दक्षिण पंथी गण साम्प्रदायिक कह निन्दा करते हैं, इस लिये देश के युवकों पर उनका प्रभाव कम है। वे भी निम्न स्तर के चिंता से नियमित कांग्रेस की पताका के नीचे आत्मसमर्पण नहीं कर रहे हैं। मेरी समझ में कांग्रेस वाद के झांसे में हमारी जाति के मेरुदण्ड युवक गण और सात कला पुष्ट नेता दोनों ही भटक रहे हैं।

२६. इस स्तर के चरित्रसम्पन्न मनुष्य, राजा, जमीनदार, शासनकर्त्ता, राजप्रतिनिधि, खुफिया, पुलिस कर्मचारी, महाजन, बैंकर और सुखी कृषक इत्यादि लोगों में अधिक मिलेंगे।

२७. इस स्तर पर प्रतिष्ठित दार्शनिकों की आलोचना का कोई विशेष प्रयोजन नहीं है। एक जाति की प्राचीन चिंता का संस्कार ही इस स्तर के दर्शन की प्रधान भित्ति है। ये लोग जिस किसी संस्कार को सामने रख जन साधारण को नचा सकते हैं। इस स्तर के अच्छे विकाश सम्पन्न लोग जिस किसी प्रकार का शक्तिशाली कर्म विज्ञान उद्भावन करने की शक्ति रखते हैं और समाज में उसको प्रचलित कर समाज का महान उपकार कर सकते हैं। ये यदि आसुरिक हों तो अत्यन्त दाम्भिक होते हैं। इनकी कर्मनीति दाम्भिक होने पर भी पाँच और छः कला पुष्ट कर्मविज्ञान से हजारों गुना उन्नत और शक्तिशाली होती है। ये समाज के बड़े शक्तिशाली अंश हैं। समाज मात्र ही इस स्तर के लोगों की बातों से उठती बैठती है। (हिन्दू समाज में आजकल इस स्तर की चिंता का प्रभाव कम है। इसका कारण प्रयोजन होने से आगे कहूँगा) समाज से इनका प्रभाव उच्छेद करने की शक्ति कोई नहीं रखता। ये ही समाजकर्त्ता हैं और ये ही शासनकर्त्ता होते हैं। कैसा ही मतवाद क्यों न ले आवो ये ही लोग शासन करेंगे। राज शासन के युग में ये ही शासक होते थे। फिर प्रजातंत्र, गणतंत्र, कुछ भी क्यों न स्थापित करो शासक श्रेणी के लोग इस स्तर के विकाश सम्पन्न होंगे ही। इस स्तर के विकाश सम्पन्न शासक यदि आठ कला की चिंता को न समझें अथवा इस स्तर के शासकों को आठ कला के ज्ञानी परामर्श न दें तो ये प्रायः दाम्भिक

और आसुरिक हो जाते हैं। इस स्तर के शासकों को यदि छ कला के विकाशसम्पन्न लोग परामर्श दें और ये छ कला के आदर्श पर चलने लगें तो इस स्तर का शासन दुर्बल शासन होता तथा इस दुर्बलता के कारण आसुरिक मनोवृत्ति सम्पन्न समाज कर्त्ता द्वारा परिचालित समाज से देश को अत्याचार और उत्पात सहन करना पड़ेगा। छः कला के विकाशसम्पन्न वालों को शासकों का ठीक ठीक परामर्शदाता न कह कर चापलूस कहा जाय तो ठीक है। इस लिये इनका परामर्श शासन दायित्व के विपरीत जानना चाहिये। फिर समाज में यदि इस स्तर के लोगों का या इस स्तर की चिन्ता का प्रभाव अधिक हो तो शासकों को उसको मानने के सिवाय कोई उपाय नहीं रहता। उस अवस्था में शासकों को उचित है कि समाज में सात कला की चिन्ता ग्रहण करने का उपयोगी क्षेत्र प्रस्तुत करें, नहीं तो उनके शासन दायित्व में कमी आयेगी और उनके द्वारा शासित देश और समाज का पतन हो जायगा। सात कला के विकाश सम्पन्न शासकों को यदि आठ कला के विकाश सम्पन्न ज्ञानी लोग परामर्श दें अथवा सात कला के विकाशसम्पन्न शासक आदि आठ कला की ज्ञानशक्ति अर्जन कर सकें तो इनका शासन शक्तिस्तर की नीति के अनुरूप होगा।

२८. आठ कला के विकाशसम्पन्न लोग ही ऋषि स्तर के मनुष्य होते हैं। योगी, त्यागी, तपस्वीयों में इस स्तर के लोग पाये जायेंगे। वर्तमान समय में इस स्तर के लोग दुर्लभ हैं। ये सात कला के विकाश सम्पन्न शासकों को या भावी शासकों को धीरज धर कर शक्ति स्तर के आदर्श पर गठन करते हैं। यही इनका निष्काम कर्म है। ये समाज के कितने हितैषी हैं उसका परिमाप करना असम्भव है। ये पृथ्वी स्थित मनुष्यों के सर्वोत्तम हितैषी हैं। ये ही प्राचीन युग में राजगुरु होते थे। बौद्ध युग के पहले ही इस स्तर के महापुरुषों के स्थान में पुरोहित श्रेणी द्वारा शासकों की दीक्षा शिक्षा हो रही थी। बौद्ध युग के बाद भी इस स्तर के महापुरुषों की कदर कभी समाज तथा राजशिक्षा में हुई थी ऐसा प्रमाण नहीं है। इन पर समाज की जो गम्भीर श्रद्धा थी उसे पुरोहितों ने अपना लिया। इसके फलस्वरूप भारत का पतन हुआ। ये योग, मोह एवं अभिमान के परपारस्थित महापुरुष हैं। यह प्राकृतिक तथा सरल जीवन व्यतीत करते हैं। ये अत्यन्त तेजस्वी और अत्यन्त शान्त होते हैं। मूलग्रन्थ में हमने इन्हें उन्नत स्तर का

शिव कहा है। आठ से आरम्भ कर सोलह कला तक का विकाश राजा और ऋषियों में ही हुआ करता है। विस्तारित आलोचना मूल ग्रन्थ में देखिये।

२९. चार कला से अधिक और पाँच कला से कम विकाश सम्पन्न लोगों की संख्या इस पृथ्वी में सब से अधिक है। ये सरलधर्मविश्वासी, अल्पबुद्धिसम्पन्न और प्राकृतिक जीवन प्रिय होते हैं। मूल ग्रन्थ में हमने इनको निम्न स्तर का शिव कहा है। मजदूर, प्यादा, दफ्तरी, पुजारी, चपरासी, याचक, साधारण होटल वाले, मेहतर, प्रेस कम्पोजिटर, साईस, गाड़ीवान, झाड़ूदार, और बननिवासी मनुष्यों में इस स्तर के विकाश सम्पन्न मनुष्य अधिक पाये जायेंगे। इनको जिस किसी मतवाद द्वारा नचाया जा सकता है। कृपकों की बुद्धि का विकाश इस स्तर से ज्यादा नहीं है। किन्तु कृपकों का कर्मविकाश सात कला के अन्तर्गत होने के कारण कृपकों की मनोवृत्ति और इनकी मनोवृत्ति एक प्रकार की नहीं है।

३०. साढ़े चार कला की विकाश सम्पन्न मनुष्यों की संख्या प्रति ३०० में २९९ से भी अधिक होगी। पाँच कला की विकाश वालों की संख्या प्रति ७०० में एक से भी कम होगी। छ कला के विकाशसम्पन्न जनों की संख्या प्रति ६०० में एक से अधिक हो सकती है। सात कला तक विकशित मनुष्यों की संख्या प्रति सहस्र में एक से भी कम होगी। आठ कला से सोलह कला तक के विकाश सम्पन्न मनुष्य वर्तमान समय में बहुत ही विरल हैं। समाज में उनके कर्मस्थल की व्यवस्था होने पर उनकी संख्या प्रति दस लाख में शायद एक हो सकती है। आजकल पृथ्वी पर तथा हमारे देश में चिन्ता शक्ति और कर्मविज्ञान का अपकर्ष होने के कारण इन उन्नततम मनुष्यों की संख्या कम हो गई है। पाँच और सात कला के विकाश सम्पन्न जनों की भी संख्या घट गई है। छ कला कला के विकाश सम्पन्न लोगों की संख्या भी जैसा रहना चाहिये वैसा न रह कर पौरहित्यवाद, वैष्णववाद और गांधीवाद के प्रभाव से भारत में बहुत बढ़ गई है। छ कला की चिंता के प्रभाव से समाज का मन स्त्रियों की तरह बन जाता है। इसी लिये भारत भिन्न दूसरे देशों में उसका प्रश्रय कम है। अतएव उन सब देशों में छ कला पुष्ट मनुष्यों की संख्या कम है। हमारे देश में चिन्ता का उत्कर्ष होने से उन्नततम कला के विकाश सम्पन्न मनुष्य और पाँच और सात कला के विकाश सम्पन्न मध्य कला के मनुष्यों की संख्या की वृद्धि होगी

और निम्नतम कलाके मनुष्यों की संख्या कम होगी। जो सात कला के चिंता द्वारा नियमित अपुष्ट विकाश हैं उनकी संख्या बतलाना और न बतलाना बराबर ही है, क्योंकि यह कोई विकाश का स्तर नहीं है। वर्तमान समय में अपुष्ट विकाश वालों की संख्या वहुत बढ़ गई है। यह मानव समाज के लिये अत्यन्त विपद्सूचक है। जब तक शक्ति स्तर की कर्मनीति केन्द्रीय शासन में प्रतिष्ठित नहीं होगी तब तक इनकी संख्या बढ़ती ही रहेगी। इनको हम पतित कला का विकाश कह सकते हैं। इनकी संख्या अस्वाभाविक रूप से बढ़ जाना समाज का पतन सूचित करता है। छै कला के विकाश से जो अपुष्ट विष्णु होते हैं ऐसे लोगों के साथ भी हमारे भारत के इतिहास का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसकी आलोचना आगे होगी। निम्न स्तर से जो अपुष्ट सात कला होते हैं उनके साथ आसुरिक शासन और आसुरिक नीति पर प्रतिष्ठित शासन का सम्बन्ध अधिक है। ये लोग अधिकांश केन्द्रीय आसुरिक शासन या दूर्वल शासन के फल स्वरूप तैयार होते हैं। शिक्षा और सुसंस्कार दान कर और कठोर दमन नीति के प्रयोग से इनका मूलोच्छेद करना पड़ता है। समस्त स्तर के मनुष्यों के अन्न, वस्त्र की सुविधा और अनीति का मूलोच्छेद करना ही शासन का लक्ष्य है और यही आदर्श भी होना चाहिये। जब तक शक्तिवाद प्रतिष्ठित नहीं होता है तब तक ऐसा होना असम्भव है। एक मात्र शक्तिवाद ही पृथ्वी को स्वर्ग में परिणत कर सकता है और इसके अभाव से ही पृथ्वी में आज इतना दुःख बढ़ गया है। हमारे केन्द्रीय शासन की नीति ऐसी होनी चाहिये जिससे उन्नततम विकशित मनुष्यों की संख्या समाज में बढ़े और पतित कला कम हो जाय।

३१—यदि मनुष्य के समाज में विकाश के लिये ही विचारविभाग, शिक्षाविभाग, शासनविभाग और धर्मविभाग स्थापना करने की आवश्यकता हुई हो तो वोटवाद की भित्ति पर शासन कार्य नहीं चल सकता; क्योंकि निम्न कला के मनुष्यों की संख्या अत्यन्त अधिक है और ये केवल स्त्री, अन्न और वस्त्र का प्रयोजन मात्र समझते हैं। शासन-कार्य के अन्य किसी विषय को समझने की शक्ति ये नहीं रखते। इसलिये इनका वोट मिलना न मिलना एक ही बात है। इनके लिये अन्न, वस्त्र की प्रचुरता और यौन सम्बन्धी (Sexual) विषयों में कठोर शासन नीति का प्रयोग शासन विभाग में रहने ही से इनकी समस्या हल हो जाती है। चूँकि सात कला की चिन्ता की भित्ति पर

प्रतिष्ठित लोगों द्वारा शासन परिचालित होता है, इसलिये वोटवाद द्वारा शासन की नीति की उन्नति होने की कोई सम्भावना नहीं है। यदि शासन-नीति को उन्नत करना हो तो आठ कला के विकाश सम्पन्न तथा सात कला के विकाश सम्पन्न मनुष्यों की चिन्ता मिलित होना आवश्यक है। ऐसा होने से मनुष्य समाज में आगत तथा अनागत सब समस्यायें हल हो जायँगी। शासन व्यवस्था में आठ कला के विकाश सम्पन्न मनुष्यों का परामर्श ग्रहण करने की व्यवस्था रहने से सब स्तर के मनुष्यों के विकाश के लिये प्रजोजनीय वस्तुयें निरापद रहती हैं। शक्तिवाद इसी को सर्वश्रेष्ठ शासन नीति घोषणा करता है। पाँच और छ कला की चिंता मध्यविरा श्रेणी की चिंता है। ये उन्नत आदर्शवादी और समाज के प्रकृत मंगलकारक कर्मी हैं। सात कला के चितास्तर के मनुष्य अधिकतर धनी श्रेणी में पाये जाते हैं। ये आसुरिक होने पर इनके परिचालित समाज में पाँच और छ कला पुष्ट चिंता के आदर्श पर कोई कर्मक्षेत्र नहीं बन सकता और अपुष्ट सात कला के मनुष्यों द्वारा इनके मध्यस्तर का कार्य होता है। इनके समाज स्थित निम्न स्तर के मनुष्यों को लूट मार में जितना मौज मिलता है उतना अच्छे कामों में नहीं मिलता। जिनमें सात कला चिंता का दैवी विकाश है वे समाज में जो करना चाहते हैं वह पाँच और छ कला के विकाश स्तर के कर्म के अनुकूल होता है और समाज का क्रम विकाश पथ भी मुक्त रहता है। किन्तु सात कला के दैवी विकाशसम्पन्न लोग यदि आठ कला के विकाश सम्पन्न मनुष्यों द्वारा नियमित न हों तो इनका शासन आसुरिक नीति के निकट परास्त होगा। इसलिये यदि विकाशविज्ञान की भित्ति पर शासन चलाना हो तो शासन मंत्रणा में आठ कला के विकाशसम्पन्न लोगों का संयोग अपरिहार्य है। भारत का प्राचीन इतिहास पर्यालोचना करने से पता चलेगा कि आठ कला के विकाश को बढ़ाने के लिये राजशक्ति की कितनी विशेष चेष्टा थी। हम आज कल पाश्चात्य राजनीति की थोड़ी सी हवा लगा कर बड़े भारी राजनीतिज्ञ बन गये हैं और मानव-समाज के प्रकृत मंगलकारक मनष्य जिनके द्वारा बन सकते हैं उस योगी तथा साधुओं पर श्रद्धाहीन हुये हैं। यह हमारे नेतृचिंतन में पतन ही का लक्षण है। पूरा साधुसमाज विकाश पथ में कितना अग्रसर हुआ यह विचार न कर वे जो हमारे बालकों और हमारी चिंता को उन्नत पथ में आकर्षण करते हैं यह समझने की शक्ति हमें होनी

चाहिये। शासन का लक्ष्य यदि विकाश ही हो तो आसुरिक मनोवृत्ति-सम्पन्न मनुष्यों के विरुद्ध और उनके प्रभाव से बने हुए अपुष्ट कला के लोग जो लूटमार, स्त्री हरण और चोरी करने में उत्साहित होते हैं उनके विरुद्ध समाज में और शासन में कठोर दण्ड की व्यवस्था रहनी चाहिये। हमारे विचार में वोटवाद की नीति कुछ बदल देना चाहिये। स्वाधीनता के झाँसे में पड़ कर इसको हमने समाज में स्थान दिया था। इसके द्वारा आज तक शासन नीति को अवनति ही हुई है, उन्नति नहीं हुई। यह बड़ी खर्चीली शासन पद्धति भी है। वोटवाद में धनिकों के लिये ही सुविधा हो सकती है। वोटवाद रहेगा या जायगा इस विषय पर अभी हम सोचना नहीं चाहते, क्योंकि भारत की स्वाधीनता के लिये इसकी आवश्यकता हो सकती है, वोटवाद द्वारा यदि शासनलक्ष्य विपद्ग्रस्त (In denger) हो तो शासन में अनीति को प्रश्रय मिलेगा। इसके फलस्वरूप फिर देवासुरसंग्राम का सूत्रपात होगा। इस लिये शक्तिवादियों का लक्ष्य शासन पद्धति का सुधार है; न कि वोटवाद।

३२. पाँच, छ, सात और आठ कला की चिन्ता मिला कर जो शासन होता है वह उत्तम और शक्तिशाली शासन है। पाँच, छ, सात मिल कर दैवीशासन दुर्बल शासन है तथा पाँच, छ, सात मिल कर आसुरिक शासन जरा सबल होने पर भी काम्य नहीं है, क्योंकि यह शासक और शासित किसी के भी विकाश को अग्रसर करने में सहायक नहीं होता है। यह शासन स्थायी भी नहीं होता और इसमें शान्ति भी असम्भव है। इस लिये शक्ति स्तर की शासन नीति बिना देवासुर संग्राम अनिवार्य है। यहाँ यह कहना आवश्यक है कि सात कला या सोलह कला का कर्मविज्ञान बिना पाँच या छ कला से नियमित शासन पद्धति चल ही नहीं सकती। इस लिये शक्ति-वादी को चाहिये कि शक्तिस्तर का लक्ष्य छोड़ और किसी लक्ष्य में विभ्रान्त न हो।

३३. प्राचीन भारतीय शासकों में समय समय पर शक्तिस्तर की नीति की प्रतिष्ठा हुई थी। यह अवश्य ही राजशासन युग की बात है। ऋषियों का ज्ञान और शासकों की कर्म शक्ति के मिलन से ही यह सम्भव हुआ था। बौद्ध युग के पहले ही ऋषियों के स्थान पर समाज में पुरोहित श्रेणी का प्राधान्य बढ़ गया था तथा ऋषि स्तर की चिन्ता के स्थान पर उनकी चिन्ता

ने अधिकार जमा लिया था। ऋषि स्थान में पुरोहितों का प्राधान्य होने के कारण राजाओं की चिंताजगत में शक्तिहीनता के लक्षण दिखाई देने लगे। बौद्धयुग में भी राजाओं की कर्मशक्ति के साथ प्रकृत ज्ञानियों के ज्ञानशक्ति का संयोग न हो सका। बौद्ध भिक्षुकों में भी जो राजाओं के संस्पर्श में आये थे उनकी चिंता भी कभी छः कला (सूर्य स्तर) को अतिक्रम कर आठ कला (उन्नत शिव स्तर) पर प्रतिष्ठित न हुई। बौद्ध युग के बाद भी राजाओं के कर्मशक्ति के साथ ज्ञानशक्ति का संयोग नहीं हुआ। इस समय भी पुरोहित श्रेणी ही की प्रधानता रही। शास्त्र-ज्ञान की शेष सीमा छ कला की चिंता (सूर्य स्तर) को अतिक्रम करने की शक्ति नहीं रखती। इन लोगों (पुरोहितों) की शक्ति बहुत ही कम है। आठ कला तक विकशित (उन्नत शिव स्तर के) एक महापुरुष में जितना त्याग, तेजस्विता, उदारता तथा शान्ति रहती है उतना छ कला में कभी सम्भव नहीं है। छ कला (सूर्य स्तर) का ज्ञान शास्त्र ज्ञान मात्र है। किन्तु आठ कला का ज्ञान तपोलब्ध ज्ञान है। जिस शासन विज्ञान में किसी युग में सात और आठ कला का मिश्रण था वह सात और छ में आबद्ध हो गया। पहले ही कहा गया है कि यह शासन आसुरिक आक्रमण के सामने अवश्य ही छिन्नभिन्न हो जायगा।

३४. पुरोहित श्रेणी ने ऋषि स्थान में अपने को खड़ा कर अपने ही पतन की सूचना की। जो जैसा नहीं है वह यदि वैसा अपने को दिखाने की चेष्टा करे तो यह उसके पतन का ही लक्षण कहना चाहिये। अंत में राजाओं की खुशामद करना, समाज के सामने अपने को ऋषि साबित करना और समाज में अपना स्वार्थ रक्षा छोड़ समाज में इनका कोई काम और दायित्व नहीं था। छ कला के कर्म और चिंता ने अपने दायित्व और कर्त्तव्य को त्याग कर अपुष्ट सात को अवलम्बन किया। इन स्वार्थियों के प्रभाव से हमारी समाज और राजशक्ति दुर्बल हो गई थी।

३५. आसुरिक सात कला और अपुष्ट सात कला के मनुष्य को (छ से अपुष्ट सात और निम्न कला से अपुष्ट सात) अत्यन्त हीन मनोवृत्ति सम्पन्न जानना चाहिये। आसुरिक कला और अपुष्ट कला के मनुष्य अपना स्वार्थ छोड़ दूसरा कुछ सोच ही नहीं सकते। आसुरिक कला से अपुष्ट कला की चिंता और भी मलिन है। ये अपना स्वार्थ जितना समझते हैं उतना अन्य

किसी कला के मनुष्य नहीं समझ पाते। कितना ही उन्नत मतवाद या उन्नत शिक्षा अपुष्ट कला के लोगों को दिया जाय, वे सब समझने की शक्ति रखते हैं; परन्तु वे उसमें से केवल अपना स्वार्थं छोड़ और कुछ भी ग्रहण न करेंगे। इनको अपना स्वार्थं नष्ट होने का भय सब स्तर के मनुष्यों से अधिक है। अपुष्ट कला वाले स्वार्थं सूत्र को पकड़ कर अग्रसर होते हैं। आज कल पुरोहित, पंडा, गाड़ीवान, कृषक और निम्न श्रेणी के पुलिसों में अपुष्ट विकाश का लक्षण अधिक है। हमारे देश के सोश्यलिष्ट कर्मी कृषकों को जितना स्वार्थं समझाना चाहते हैं कृषक श्रेणी उससे भी अधिक स्वार्थं समझने की शक्ति रखती है। सोश्यलिस्ट कृषकों से देश सेवा के नाम पर जो थोड़ा त्याग आशा करते हैं कृषक सोश्यलिस्टों को स्वार्थं के लिये धोखा देकर विरुद्ध दल में चले जाने की शक्ति उससे अधिक रखते हैं। इतिहास इसका प्रमाण देगा। वंश परम्परा की स्वार्थं रक्षा के लिये पुरोहित श्रेणी ने समाज को विशेष हानि पहुँचाई थी। यहाँ यह भी कह रखना आवश्यक है कि इस श्रेणी की चिन्ताधारा कभी समाज के मंगल के अनुकूल नहीं हो सकती। मुसलमानों के आक्रमण के समय शासकगण इतने अभिमानी हो गये थे कि वे सब एक होकर आक्रमणकारियों को बाधा न दे सके। त्याग और तपःपूत ऋषियों के स्थान में स्वार्थान्ध और मलिन पुरोहित चिंता ने राजाओं के गुरु का स्थान अधिकार करने के कारण राजाओं के मानसिक पतन का प्रतिकार न हुआ। उस युग में पुरोहित चिंता ही समाज का कर्णधार हुई थी। समाज की शिक्षा, दीक्षा, यजन, याजन का भार इन्हीं के हाथ में था। समाज की आखों में इन्होंने अपने को बना लिया था देवता और अपने मनोजगत में ये थे घोर स्वार्थान्ध। मुसलमान आक्रमण में इनके प्रभाव से केवल हमारे राजशक्ति ही का पतन न हुआ था; बल्कि समाज का भी पतन हुआ। समाज को विभक्त करना, समाज के एक को दूसरे के सामने हीन बना रखना और अपनी स्वार्थरक्षा छोड़ इनकी चिंता में कोई उदार भित्ति नहीं है। आक्रमणकारियों ने हमारे समाज में अपने सभ्यता को प्रवेश करा दिया था और उसके द्वारा समाज के एक विराट अंश को उस युग में मुसलमान शासकगणों का समर्थक बना लिया था। इनकी वर्तमान संख्या सात करोड़ है। अनेक महापुरुषों ने छु कला (सूर्य स्तर) की चिंता की भित्ति पर धर्मस्थापना द्वारा समाज रक्षा करने की चेष्टा की। किंतु इस चेष्टा से भी पौरहित्यवाद

से प्रभावान्वित हमारे पतनोन्मुख समाज के पतन की गति को रुद्ध करना सम्भव न हुआ। मध्ययुग में गुरुगोविन्द सिंह नें कुछ शक्ति स्तर की चिंता की भित्ति पर समाज गठन कर और इस युग में स्वामी दयानन्दजी ने सात कला चिन्ता की भित्ति पर समाज गठन द्वारा पौरहित्यवाद का प्रभाव समाज के एक सामान्य अंश से दूर करने में समर्थ हुये थे। परन्तु समाज का जो अंश अब भी पौरहित्यवाद का मुँह ताकता है उस अंश ने अभी तक पौरहित्यवाद से अपने पतन गति को रुद्ध करने की शक्ति लाभ नहीं किया है।

३६. छ कला का काम है शक्ति स्तर की चिंताविज्ञान को प्रचार करना। लौकिक, अलौकिक जो ही शिक्षा क्यों न दी जाय, सब शक्ति स्तर की भित्ति पर होना प्रयोजन है। शक्ति स्तर की चिंता की प्रतिष्ठा करना ही हमारे आन्दोलन और प्रचार का लक्ष्य होना चाहिये। पुरोहितवाद के युग की तरह गांधीवाद वर्तमान युग में इस नीति का उल्लंघन कर रहा है। प्रचार-विभाग अहिंस रहेगा, किंतु अहिंसा [छ कला की शक्ति] द्वारा केन्द्रीय शक्ति को नियंत्रित करने की चेष्टा अत्यन्त मारात्मक तथा सर्वनाशकर बात है। केन्द्रीय नीति का लक्ष्य अहिंसा नहीं बल्कि शक्तिस्तर है। अहिंसा द्वारा असुरों का दमन नहीं हो सकता। अहिंसा की आड़ में प्रचार शक्तिशाली होता है। भारत की स्वाधीनता का अस्त्रस्वरूप अहिंसा का अवलम्बन का अर्थ शक्तिवादी की दृष्टि में यही है कि स्वाधीनता के लिये शक्तिशाली मांग दिया जा रहा है। यह कोई युद्ध की नीति नहीं है। यह मंगन ही की नीति है। जिस मांग के मूल में मनुष्य के मनोजगत का नैतिक समर्थन है उसे अहिंसा द्वारा लाभ किया जा सकता है (आसुरिक शासक नीति अनीति नहीं मानते)। किंतु इसको पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने का अस्त्र स्वीकार नहीं किया जा सकता। भारत की वर्तमान स्थिति में शायद मांग छोड़ दूसरा कोई रास्ता नहीं है, क्योंकि गांधीवाद ने भारत को ऐसा ही निकम्मा बना रक्खा है। कांग्रेस ने भी अब मंगन ही के रास्ते स्वराज्य पाने की नीति को मान लिया है। इनका मंगनपन अब एक से दो दरवाजों (सरकार तथा मुसलमान) में आबद्ध हो गया है। परन्तु यह मंगन मंगन ही तक रह जायगा और इसके जवाब में गुंडों के डंडे छोड़ और कुछ न मिलेगा। अहिंसात्मक विद्रोह कोई शक्तिशाली विद्रोह ही नहीं है। अहिंस विद्रोह को केन्द्रीय नीति के संशोधन के लिये अस्त्रस्वरूप ग्रहण किया जा सकता है। जन-साधारण

यदि अहिंसात्मक आंन्दोलन द्वारा केन्द्रीय नीति को संशोधन की चेष्टा करें तो ठीक ही होगा। परन्तु वृटेन यदि स्वेच्छापूर्वक न दे तो इससे स्वराज्य लाभ करना असम्भव है। यह मांग की नीति हो सकती है, किन्तु यह कभी केन्द्रीय शासन की नीति नहीं हो सकती। यदि कोई समाज इसे केन्द्रीय शासन के नीतिस्वरूप स्वीकार कर ले तो उस समाज की विशेष क्षति होगी।

३७. यदि कांग्रेस शासन करना चाहे तो उसकी नीति छः कला पर प्रतिष्ठित नहीं रह सकती, क्योंकि उस नीति द्वारा केन्द्रीय शासन नहीं चल सकता। उसे कम से कम सात कला की नीति को ग्रहण करना होगा। इस सात कला की नीति को यदि छः कला की नीति द्वारा परिचालित करने की चेष्टा की जाय तो वह दुर्बल शासन होगा। इसके द्वारा साम्प्रदायिक आसुरिकता, स्त्रियों पर अत्याचार, गुण्डईपन, अशान्ति, अत्याचार और अनाचार अत्यन्त बढ़ जायेगा। कांग्रेसवालों की यह बड़ी भ्रान्त धारणा है कि वे ही एकमात्र स्वदेश प्रेमी तथा समाजहितैषी हैं। वर्तमान भारत शासन पद्धति (Constitution) गांधीवादी आन्दोलन के फलस्वरूप नहीं मिला है। यह तो बहुत पहले ही का साइमन-कमिशन द्वारा निर्दिष्ट शासन पद्धति है। गांधीवादी इस आन्दोलन से देश को कुछ लाभ न हुआ। बल्कि यह आन्दोलन शासन पद्धति में ऐसा कुछ परिवर्तन लाने का कारण हुआ जिससे सच्चे स्वदेशकर्मी शासन यंत्र में कम संख्या में प्रवेश कर सकें। इससे साइमन कमिशन पद्धति पर कोई तरक्की न हुई; इस बात को सभी जानते हैं। गांधीवाद हिन्दुओं के हानि का ही कारण हुआ है। ऐसा न कर कांग्रेस यदि सात कला की चिन्ता के भित्ति पर खड़े होकर इसको संशोधित आकार में लेने के लिये आन्दोलन करती तो केन्द्रीय शासन में कांग्रेस इस समय से अधिक शक्तिशाली होती। इसके द्वारा बंगाल के हिन्दुओं की जितनी हानि हुई है उसे उपलब्धि करने की शक्ति गांधीवाद में नहीं है। हम यही कहना चाहते हैं कि गांधीवाद ने हमारे देश को बहुत हानि पहुँचाया है। छः कला तक विकसित कर्मनीति ने हमें जो हानि पहुँचाई है उसको जानते हुए भी यदि कांग्रेसवाले समझें कि वेही प्रकृत स्वदेश प्रेमी हैं और देश भी इस बात को मान ले तो समाज में इसे एक नये ढंग का पौरोहित्यवाद का आगमन कहना होगा। एक युग में जिस प्रकार राजा-लोग पुरोहितवाद के हाथ के खिलौने बन गये थे इस

समय कांग्रेस शासित प्रदेशों की भी वही दशा हुई है। छः कला की चिन्ता पर प्रतिष्ठित कांग्रेस उन्हें मनमाना उठाते, बैठाते व नाच नचाते हैं। जिस प्रकार राजा लोग पुरोहितों के अधीन होने पर बाध्य हुए थे, क्योंकि पुरोहित समाज को शास्त्रवचन द्वारा जब जैसे चाहे नचा सकते थे ठीक उसी प्रकार मंत्रिमंडल भी कांग्रेस के हाथ का खिलौना है; क्योंकि कांग्रेस जातीयतावाद के शास्त्र द्वारा देश को जिस प्रकार चाहे नचा सकता है। पुरोहित जिस प्रकार समाज की आँख में देवता बन गये थे ठीक उसी प्रकार कांग्रेस भी छः कला चिन्ता में बद्ध रहते हुए भी समाज के सामने देवता बन गयी है। कांग्रेस वाले यदि अपने चिन्ता का स्तर और कर्मनीति का लक्ष्य परिवर्तन न करें तो हिन्दुओं का सत्यानाश करके ही दम लेंगे। कांग्रेस कर्मी अत्यन्त भूल करेंगे यदि उन्हें ऐसी धारणा हुई हो कि वेही देश के एकमात्र सर्वस्व हैं। छः कला चिंता के स्तर में खड़े होकर मनुष्य जितना कर्मविज्ञान अधिकार कर सकता है उससे सात कला का कर्मविज्ञान श्रेष्ठ है। सात+आठ कला के स्तर की चिंता (विष्णु+शिव) और भी उन्नत है। कांग्रेस के अति अल्प विकशित कर्मविज्ञान अपनाने के कारण देश की जो हानि हुई है उसे संशोधन करने में बहुत दिन लगेंगे। थोड़ा सा जो शासनकर्तृत्व देश को मिला है उसको ठीक ठीक शक्तिस्तर के कर्मविज्ञान के अनुसार परिचालित करना या कराना होगा। शक्तिवादी सर्वत्र ऐसे आन्दोलन की सृष्टि करें जिससे केन्द्रीय नीति पक्षपातहीन होकर विकाशानुकूल रूप धारण करे। केन्द्रीय नीति यदि शक्तिस्तर के नीति पर चले तो जनसाधारण को उसके विरुद्ध आन्दोलन करने का कोई कारण नहीं रहता। परन्तु छः कला की चिंता पर प्रतिष्ठित किसी कर्मीसंघ से यह आशा नहीं की जा सकती है कि उनके शासन में सब स्तर के मनुष्यों का विकाश निरापद है। जन साधारण यह भी जान रखें कि वर्तमान कांग्रेसनीति के द्वारा अनाचार तथा आसुरिकता और बढ़ेगी।

३८. मुसलमान समाज के एक शक्तिशाली अंश ने छ कला के कर्मविज्ञान के नीति को अतिक्रम कर सात कला के कर्मनीति को ग्रहण किया है। हिन्दुओं का भी कर्तव्य है कि उसी प्रकार शक्तिशाली हिन्दू प्रतिष्ठान गढ़ कर अपने अधिकार और भारतीय कृष्टि की रक्षा करें। छ कला की कर्मनीति पर प्रतिष्ठित कांग्रेस सात कला पर प्रतिष्ठित मुसलिम लीग के सामने हिन्दुओं का अधिकार रक्षा करने की शक्ति नहीं रखता है। मुसलिम लीग ने अभी

तक मुसलमानों की स्वार्थरक्षा और देश की स्वाधीनता आन्दोलन की विरोधिता छोड़ और कोई उल्लेख योग कार्य नहीं किया है। इस युग में इनकी कर्मधारा अत्यन्त विस्मयकर है। इन्होंने अपने समाज में इस प्रकार आन्दोलन द्वारा जो बीज बोया उससे उस समाज में अपुष्ट सात कला की चिन्ता बढ़ेगी। कांग्रेस पन्थियों ने बातों में तो उस नीति के विरुद्ध मतप्रकाश किया है, किन्तु कार्यतः समर्थन ही किया है। यह कांग्रेस की नीति की दुर्बलता है। कांग्रेस चाहे कितनी ही चेष्टा क्यों न करे सात कला चिंता द्वारा नियमित उस समाज को अपने अन्दर नहीं ला सकती। बहुत लोग शायद यह कहेंगे कि कांग्रेस में भी बहुत से मुसलमान मेम्बर हैं। इस सम्बन्ध में हम सिर्फ यही कहना चाहते हैं कि उन्होंने हिन्दू समाज से खुशामद कराना छोड़ अपने समाज में कांग्रेस के सपक्ष कोई शक्तिशाली आन्दोलन की सृष्टि नहीं की। अपने समाज में भी उन्हें कोई समर्थन नहीं करता है। उनमें से बहुतेरे कांग्रेस की शक्ति से नाम और प्रतिष्ठा वृद्धि कर फिर साम्प्रदायिकता की गोद में खिसक जाते हैं। इनके बात तथा कार्य पर विशेष ध्यान देने से यह सिद्ध होता है कि अधिकांश कांग्रेसी मुसलमान प्रकाश्य साम्प्रदायिक मुसलमानों से भी कांग्रेस के लिये अधिक विपज्जनक हैं। कांग्रेस में रहते हुए भी इनकी मनोवृत्ति साम्प्रदायिक स्वार्थ से मुक्त नहीं है। इनका त्याग बहुत ही कम है। इधर वामपन्थी कांग्रेसवालों के उभाड़ने से कांग्रेस फेडरेशन के विरुद्ध लड़ने की बात सोच रही है। इसके फलस्वरूप अंगरेज और मुसलिम लीग की चाल से कांग्रेस ऐसा कुछ परिवर्तन उसमें लाभ करेगी जिसका परिणाम यह होगा कि कांग्रेस वर्तमान समय में फेडरेशन में जितना शक्तिशाली हो सकती है उससे अधिक शक्तिहीन हो जायगी। हम यह बात साफ़ बतला देना चाहते हैं कि अभी कांग्रेसवालों को राजनीति समझने की शक्ति नहीं हुई है। इनको अभी मि० जिन्ना और श्री सावरकर से बहुत सीखना है। कांग्रेस यदि अब भी कम से कम सात कला की चिंता को समझने की चेष्टा करे तो भारत को अनेक सुविधा होगी। यदि वैसा करना हो तो कांग्रेस को चाहिये कि हिन्दू प्रतिष्ठानों को शक्तिशाली हो उठने दे। उसके बाद हिन्दू, मुसलमान तथा अन्यान्य समाज के सामने अपनी प्रतिष्ठा समान भाव से रखे। हिन्दू महासभा शक्तिशाली होने से कांग्रेस की शक्ति बढ़ना छोड़ घटेगी नहीं।

३९. पहले कहा जा चुका है कि केन्द्रीय शासन में आसुरिक सात कला की भित्ति रहने से समाज में पाँच और छ कला के कर्मस्थल का संकोच होता है। परन्तु वर्तमान युग के सभी शक्तिशाली साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने आसुरिक आदर्श ग्रहण करने पर भी उनके देश में पाँच और छ कला की चिन्ता की अवनति नहीं हुई है। दूसरे देश को आक्रमण करना, दूसरों को शोषण करना यह सब आसुरिक केन्द्रीय नीति के लक्षण हैं। यूरोप के शक्तिशाली राष्ट्रों का यही आदर्श है। किन्तु उन्होंने अपने देश में आसुरिक नीति की स्थापना नहीं की है। इसलिये उनके देश में पाँच और छः कला की चिन्ता अटूट है।

४०. आसुरिक नीति स्थापन करना शक्तिवाद का लक्ष्य ही नहीं है। सात कला का आसुरिक विकाश उसके पतन ही का लक्षण है। तिस पर यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि आसुरिक विकाश अप्राकृतिक नहीं है। केन्द्रीय नीति में दुर्बलता रहने के कारण समाज को इनका अत्याचार सहन करना पड़ता है। समाज केन्द्रीय नीति को संशोधन करने का कार्य ग्रहण नहीं करती है, इसलिये यह समाज पर प्राकृतिक पीड़न है। समाज के दायित्वहीनता के लिये यह दण्ड उसे भोगना पड़ता है। प्राकृतिक नियम ही यह है कि केन्द्रीय नीति में शक्ति स्तर का कर्मविज्ञान प्रतिष्ठित रहे और प्रत्येक स्तर के मनुष्य का विकाशपथ खुला रहे। इस प्राकृतिक नियम में सहायता करना ही शक्तिवादी का लक्ष्य और कर्त्तव्य है। इस लक्ष्य पर काम कर मृत्यु-काल पर्य्यन्त हमें कितनी सफलता प्राप्त हुई या न हुई उसे देखने की हमें और कोई जरूरत नहीं है। हमें जिस स्थान में जितना सा कर्म क्षेत्र मिले वहाँ ठीक विकाश विज्ञान पर ही काम करेंगे। फिर जो कर्मी-संस्था दुर्बल कर्म विज्ञान से नियमित हैं उन्हें भी उनकी भूल समझाने की चेष्टा करेंगे। शक्तिवादी किसी प्रकार भी दुर्बल कर्मविज्ञान का सहायक नहीं होगा।

४१. राजशासन के युग की अपेक्षा वोटवाद के युग में शासननीति की अवनति ही हुई है। जिस लक्ष्य से राजा के हाथ से यह छीन लिया गया था वह लक्ष्य इसके द्वारा सफल नहीं हुआ है। राजा के आसुरिक शासन के कारण देवासुर युद्ध की सूचना हुई; किन्तु जो इस सूचना के ऋषि थे वे मनोविज्ञान और कर्मविज्ञान के रहस्य में अज्ञ होने के कारण उनके

इतिहासविज्ञान में गलती थी। इसलिये जिस स्वाधीनता, साम्य और मैत्री को प्राप्त करने के लिये इसका सूत्रपात हुआ इनमें से एक भी इस विप्लव द्वारा सिद्ध न हुआ। इसका फलस्वरूप आया समाज में वणिकों का शोषण और धनियों का मर्मस्पर्शी अत्याचार। सामन्तशासन में (Feudalism) जो अत्याचार था उससे यह अत्याचार अधिक मर्मस्पर्शी और करुण हुआ। फिर इसके फलस्वरूप धन-साम्यवाद का सूत्रपात हुआ। इसे मजदूर विप्लव कहा जाता है। इस विप्लव के ऋषि लोग भी अल्पदर्शी थे। इस लिये जिस लक्ष्य से इसका आरम्भ हुआ वह सफल नहीं हो सका। इन्होंने जो परिकल्पना की थी वह सब व्यर्थ हो गया है मनुष्य के मनोविज्ञान के साथ टक्कर लग कर।

४२. पाँच कला के विकाशसम्पन्न गण (गणेश केन्द्र पुष्ट) ही विप्लव के नाम से नाच उठते हैं। यह इस स्तर के मनुष्यों की अल्पज्ञता के कारण उनकी स्वाभाविक चपलता का लक्षण है। विप्लव के ऋषिगण पहले इस स्तर के लोगों को ही दीक्षा देना शुरू करते हैं। प्रत्येक विप्लव में इस स्तर के युवक पहले दीक्षा लेते हैं। इनकी चिंता का भोजन जुटाने के लिये धीरे धीरे लेखक श्रेणी भी जुट जाते हैं। लेखक श्रेणी (छ कला का कर्म जगत) केवल पैसे के बदले में इनके मन के अनुकूल चिंता फैलाते रहते हैं। इस प्रकार से विप्लव का प्रचार प्रबल होता है। अर्थ के लोभ से इस श्रेणी की चिन्ता का प्रश्रय देकर ये प्रगतिपन्थी लेखक नामक सम्मानसूचक पदवी ग्रहण करते हैं और इस प्रकार से ये यश और अर्थ दोनों ही कमा लेते हैं। ऐसा न करें तो ये भोजन बिना सूखने लगें। क्रमशः इनकी चिंता शक्तिशाली होने पर इन्हें सात कला पुष्ट नेता भी मिल जाते हैं और विप्लव भी सफल हो जाता है। कुछ दिन बाद यही दीखता है कि मनुष्य के मनोजगत के कर्त्ता प्रकृति ने न जाने किस शक्ति बल से केन्द्रीय शासन के कर्णधार को सात कला का मनुष्य बना कर गद्दी पर बैठा दिया है। प्रगति लेखक श्रेणी कुछ दिन बाद फिर वही पेट के वास्ते उन्हीं की चिन्ता की स्तुति आरम्भ कर देते हैं। हम यहाँ यह बतला देना चाहते हैं कि शक्तिवाद विप्लव समर्थन नहीं करता। प्रजाशक्ति, गणशक्ति, युवकशक्ति, समाजशक्ति सभी का मूल्य हम स्वीकार करते हैं यदि केन्द्रीय नीति में आसुरिक नीति या दुर्बल नीति का प्रश्रय हो। परन्तु केन्द्रीय नीति में यदि शक्तिस्तर रहे तो किसी की शक्ति

नहीं है कि विप्लव ला सके। चार कला के मनुष्य को तुम कभी नहीं नचा सकते यदि उनका पेट भरा रहे। पाँच और छ कला के लोगों को भी तुम नहीं नचा सकोगे यदि स्त्रियों पर अत्याचार गुंडईपन तथा सभ्यता की विभिन्न शाखाओं में अनीति का प्रश्रय न हो और इस स्तर के लोगों में बेकार समस्या न हो। शक्तिस्तर के शासन में यह सब नहीं रहता है। केन्द्रीय शासन यदि आसुरिक हो तो देवासुर संग्राम अवश्यम्भावी होता है। फिर केन्द्रीय नीति की दुर्बलता के फलस्वरूप असुर सृष्टि होने से देवासुर संग्राम अपरिहार्य होता है। केन्द्रीय नीति असुरों को प्रश्रय देती है, इसी कारण विप्लव होता है तथा विप्लव का स्वप्न विप्लव के ऋषि देखते हैं। किन्तु विप्लव के ऋषि अत्यन्त अदूरदर्शी होने के कारण ही वे संशोधन का निर्देश न देकर विप्लव का पथ दिखलाना चाहते हैं। विप्लव द्वारा समस्या की जटिलता ही वृद्धि होती है और विप्लव का लक्ष्य भी व्यर्थ होता है। अतएव संशोधन ही प्राकृतिक नियम है; विप्लव नहीं। शक्तिवाद विप्लव नहीं चाहता; शक्तिवाद चाहता है केन्द्रीय नीति का संशोधन। उसको शक्ति-स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिये बराबर आन्दोलन और संगठन करना होगा। जनमत प्रबल होकर जब तक केन्द्रीय शासन को ध्वंस करने के लिये प्रस्तुत न होगी तब तक शक्तिवादियों के कर्मनीति को इसी में आबद्ध कर रखना प्रयोजन है। इससे केन्द्रीय नीति संशोधित होने पर बाध्य होगी। यदि न हो तो केन्द्रीय नीति को स्वतः ही विद्रोह या विप्लव का सामना करना होगा। केन्द्रीय नीति का लक्ष्य अनासुरिक होने से उसका संशोधन सहज हो जायगा। यदि वह आसुरिक हो तो उसका पतन अनिवार्य होगा। शक्तिवाद यह भलीभाँति प्रमाण कर सकता है।

४३. विष्णु स्तर की (सात कला) कर्म नीति की भित्ति पर ही साम्राज्यवाद, धनतन्त्रवाद और फैसिज्म स्थापित है। सोश्यलिज्म गणेश स्तर (पाँच कला) की कर्मविज्ञान की भित्ति को लेकर खड़ा हुआ था, परन्तु उस नीति से शासन नहीं चल सकता है इसलिये स्टैलिन का रूस अब सोश्यलिज्म का रूस नहीं है। इसके लिये स्टैलिन को दोष नहीं दिया जा सकता है। उस देश के मार्क्सपन्थियों के गले जो फाँसी की रस्सी लटक रही है, इसके लिये गणेश स्तर (पाँच कला) के चिन्ता से नियमित विज्ञान ही दायी है। साधारण मनुष्य इन सब बातों को क्या जानें? वे लोग अब तक सुन आये

हैं कि देश के धनियों के समान अर्थ उनको मिलना चाहिये। यदि स्टैलिन राज उसे न दे सके तो उसे उलट देना होगा। नेतागण भी सब समझते हैं, परन्तु प्रभुत्व और नेतृत्व करने का मोह उनको ऐसा हीन कर्म करने को उत्साहित करता है। इसलिये वे उस मृतविज्ञान से काम पाने के लिये वृथा आन्दोलन और षड्यन्त्र रचने का सुयोग पाते हैं। उस देश के सोश्यलिज़्म को अब मार्क्स या लेनिन का सोश्यलिज़्म नहीं कहा जा सकता। अब हम उसे 'मस्कोवाद' नाम दे सकते हैं। मस्कोवाद यदि इस प्रतिनियत फाँसी घरके फाटक को बन्द करना चाहे तो इसे सोश्यलिज़्म नामक कर्मविज्ञान को रद्द घोषणा करना पड़ेगा और कम से कम विष्णुस्तर (सात कला) के कर्मविज्ञान से नियमित किसी समाजविज्ञान को लोगों को समझने के लिये देना होगा। जब तक समाज पाँच कला के कर्मविज्ञान का मोह नहीं त्याग करेगी तब तक इस रक्तपात का शेष न होगा। हम राजतन्त्र, गणतन्त्र, दलतन्त्र (Party dictatorship) सभी समर्थन करते हैं यदि उसकी नीति शक्तिस्तर की नीति हो। फिर उनमें से जिस किसी को हम संशोधन कर ले सकते हैं यदि वह आसुरिक हो और यदि प्रजाशक्ति और संगठन शक्ति पर हमारा विश्वास हो। हमने शक्तिवाद नामक संघ की भित्ति इसी विज्ञान पर दिया है। इस संघ का व्यापकत्व मंत्री सभा के मंत्री से लेकर एक साधारण मजदूर तक और बनिवासी योगी से लेकर वृक्षतल निवासी भिखारी तक सर्वत्र फैलाना होगा। शक्तिवाद संशोधन के पथ में ही आन्दोलन चलायेगा; विप्लव के पथ में नहीं।

४४. मनुष्य का समाज प्रगति के रास्ते में बढ़ते बढ़ते अन्त तक स्टेट हीन (शासन यन्त्रहीन) समाज में परिणत हो जायगा यह कवि भी कल्पना नहीं कर सकते। मनुष्य समाज का इतिहास ऐसा कोई प्रगति का इतिहास नहीं है। उत्पादन के कारण व प्रणाली (Means and manner of produition) में परिवर्तन होने के साथ ही साथ समाज में कोई परिवर्तन नहीं आता। मनुष्य के विकाशविज्ञान का तत्त्व न जानने से यह बात सिर्फ मुँह ही से कहा जा सकता है, किंतु कार्यतः ऐसा नहीं होता; क्योंकि विकाशविज्ञान से यह नहीं मिलता है। जो विकाशविज्ञान से नहीं मिलता है उसे यदि करने चलें तो उल्टी अशांति भोग करनी पड़ेगी। केन्द्रीय शासन नीति में पूर्ण स्तर तक विकाश का सुयोग और अनुकूल व्यवस्था रखना प्रयोजन है। फिर

किसी स्तर के पतित कला (अपुष्ट विष्णु) के अनीति को प्रश्रय देने से नहीं चलेगा। मनुष्य प्रथम युग में प्राकृतिक शासन के अधीन था। उस युग में पाँच, छै कला के मनुष्य जन्म ही नहीं लेते थे। बाद में पाँच, छ कला के मनुष्यों के जन्म के साथ ही साथ युग में परिवर्तन आया। जब तक पाँच, छ कला के मनुष्यों को इस पृथ्वी पर जन्मग्रहण करने के पथ में बाधा न दी जायगी तब तक स्टेटहीन समाज असम्भव है। मार्क्सपन्थी लोग जिस प्रकार स्टेटहीन समाज का स्वप्न देखते हैं उसका स्वरूप उपरोक्त शासकहीन समाज की भाँति नहीं है। वह दूसरे प्रकार का है। वह मनोविज्ञान की अत्यन्त अभिज्ञताहीन समाज की कल्पना है। इस प्रकार कल्पना लेकर जो जीवित रहना चाहते हैं उन्हें हम देवता कह श्रद्धा नहीं कर सकते; क्योंकि इसके फलस्वरूप समाज में दैत्य नीति आने को बाध्य है।

४९. मार्क्सपन्थी लोग जन्मान्तर नहीं मानते। मनुष्य के स्वतंन्त्र व्यक्तित्व को भी नहीं मानते। उनके मतानुसार मनुष्य कुछ सामाजिक सम्बन्धों का समष्टि मात्र है। उनके मतानुसार मनुष्य मरता है, समाज नहीं मरता। बन्दर की तरह कोई जीव का समाज अन्न समस्या के कारण पूँछ कटा कर मनुष्य रूप में परिणत हो गया। वह समाज पारिपार्श्विक स्थिति में आत्मरक्षा के लिये नाना प्रकार घात प्रतिघात के सम्मुखीन हुआ, इसी से वह अपना उत्पादन प्रणाली बदलता रहा। इस प्रकार से वह अब हमारे वर्तमान सामाजिक अवस्था में आ पहुँचा है और यह प्रगति के पथ में अन्त में स्टेटहीन समाज में परिणत होगी। हमारे देश के युवकों को इस प्रकार का वैज्ञानिक इतिहास तत्व बहुत अच्छा लगा है। इसलिये उन्होंने इतिहास की गति को अग्रसर कर देने के लिये कर्मक्षेत्र में आत्मनियोग किया है। ये नीति अनीति नहीं मानते; न ये मनुष्य को पशु से कुछ अधिक समझते हैं। उनके पूर्वज बन्दर होने के कारण स्त्रियों पर अत्याचार का प्रतिवाद सुनने से ये 'यह तो आदर्शवादी का काम है' ऐसा कह ताली बजाते हैं। जिनकी नीति पाँच कला के चिन्ताविज्ञान से नियमित है उनके द्वारा पशु सुलभ मनोविज्ञान की इस अभेद नीति का समर्थन स्वाभाविक है। ये इतना गिर गये हैं कि जब तक नीति अनीति समझाने की मशीन न बनेगी तब तक इनको नीति अनीति समझाना असम्भव है। कुछ भी हो वे यदि

अपने अतिप्रिय रूस देश की हवा खा आते तो उन्हें इतिहास की प्रगति को मिलाने का सुयोग होगा।

४६. शक्तिवादी जन्मान्तर मानेंगे या न मानेंगे इस पर हमें कुछ सोचना नहीं है; क्योंकि जन्मान्तर सत्य होने पर भी उसे न मानना एक स्तर (गणेश) का विकाश वैशिष्ट्य है। मनुष्य के मनोजगत के विकाश के विभाग पर हमने जो विज्ञान सजाया है वह वैज्ञानिक की परीक्षा में अक्षर अक्षर सत्य है। इसे जो चाहे परीक्षा कर सकते हैं। उसमें कल्पना की एक भी बात नहीं है। शक्तिवाद केन्द्रीय नीति में इनके प्रत्येक के विकाशानुकूल सुविधा रहेगी। इसके अतिरिक्त हमारा और कुछ वक्तव्य नहीं है। मनुष्य के प्रथम समाज में दो प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं; एक चार कला के, दूसरे आठ कला के। जितने दिन तक समाज में केवल इस श्रेणी के मनुष्य रहे उस समय को हमने अपने ग्रन्थ में शिव का युग या आदि युग कहा है। इनके लिये शासन व्यवस्था का प्रयोजन नहीं होता। इसके बाद सामाजिक शासन का युग (विष्णु युग) आया। सामाजिक शासन के युग के बाद राजशासन युग की सूचना हुई। राज शासन युग में शासन नीति कभी सात कला के नीति विज्ञान पर कभी दैवी, कभी आसुरिक और कभी सोलह कला के नीति विज्ञान से अर्थात् पूर्ण नीति के स्तर से नियमित शासन विज्ञान था। आदि युग से मनुष्य के समाज में जो परिवर्तन विभिन्न प्रकार विकाशसम्पन्न मनुष्यों के आविर्भाव से हुआ था और राजशासन के युग की उत्पत्ति के बाद शासन की इस नीति के परिवर्तन, उत्थान और पतन की कथा ही मानव समाज का इतिहास है; यह सोश्यलिज्म का प्रगति का इतिहास नहीं है। किस प्रकार की शासन व्यवस्था में किस प्रकार विकाश का क्षेत्र प्रस्तुत होता है और किस प्रकार दर्शन, रीति, नीति किस प्रकार के केन्द्रीय शासन के परिणाम स्वरूप होना स्वाभाविक है इस सम्बन्ध में विस्तारित आलोचना यहाँ करना असम्भव है। भारत में ज्ञान का इतना अद्भुत विकास होने का कारण है। शक्तिस्तर के कर्मविज्ञान से नियमित केन्द्रीय शासन व्यवस्था आसुरिक नीति से टक्कर लेने के लिये शक्तिशाली होती है और उन्नत विकाशसम्पन्न मनुष्यों के जन्म ग्रहण करने के लिये अनुकूल है। शक्तिस्तर की नीति पर शासननीति प्रतिष्ठित रहे यही प्राकृतिक निर्देश है और प्रकृत समाज मंगलकर कर्मनीति है। यदि किसी प्रकार से उसका व्यतिक्रम हो तो

आसुरिक अनाचार आरम्भ होता है। जब तक केन्द्रीय नीति शक्तिस्तर की नीति को नहीं ग्रहण करता तब तक इसका स्थायी प्रतिकार नहीं होता। मार्क्सपन्थियों के कथानुसार स्टेट है एक श्रेणी द्वारा दूसरे श्रेणी को दबा रखने का 'यंत्र'। अतएव जब तक स्टेटहीन समाज नहीं आता है तब तक मार्क्सपन्थियों को विश्राम नहीं। हम बन्दर ऐसे कोई जीव को मनुष्य समाज के आदि में नहीं स्वीकार करते, न स्टेटहीन समाज के इस पृथ्वी पर प्रतिष्ठित होने की सम्भावना ही स्वीकार करते हैं। स्टेट यदि एक समाज को शोषण कर दूसरे समाज को पोषण करने का यन्त्र बन गया हो तो वह हमारे विज्ञानानुसार आसुरिक शासन है। उसको परिवर्तन कर शक्तिस्तर की शासन नीति स्थापना करनी होगी। शक्तिवादियों का करूँलक्ष्य शक्तिवादियों के विकाश में सहायता करता है। किंतु मार्क्सिजिम मार्क्सपन्थियों को पशु या पशु से कुछ उन्नत स्तर के चिंता पर लाने पर भी उसके द्वारा हमारा विकाश पाँच कला से ऊपर आना असम्भव है। मार्क्सपन्थी कर्मी बन कर जो लाभ करते हैं वह इतना ही है। स्टैलिन के कर्मनीति में सात कला की चिंता और कर्मविज्ञान प्रस्फुटित है। जिस विप्लव ने रूस के शोषणवाद का अंत कर बहुत से लोगों को मुक्त किया उसका हम सम्मान करते हैं, किन्तु जिस नीति ने एक दिन धनियों के खून से देश को रंग कर फिर धनवैषम्य स्थापना करने को उत्साह दिया है उसको हम क्या कहेंगे। फिर जिस नीति पर दृढ़ रह कर वीर कर्मियों ने एक विराट विप्लव मचा दिया वही कर्मी लोग नये शासन व्यवस्था में शिरश्छेद के उपयुक्त विवेचित हुये। यह क्या कोई नीतिज्ञ की नीति हो सकती है? कुछ भी हो पाठक जान रखें कि पाँच कला की चिंता और कर्मविज्ञान पर स्टेट चल ही नहीं सकता। स्टेट चलाना हो तो कम से कम विष्णुस्तर पर आना ही होगा।

४७. सात कला के आसुरिक स्टेट को बहुत अशान्ति भोगनी पड़ती है और निष्ठुर आचरण द्वारा परिचालित करना पड़ता है। इसलिये शक्ति स्तर की कर्म और नीति विज्ञान से स्टेट या केन्द्रीय शासन का नियमित होना प्रयोजन है।

४८. गांधीवादी कांग्रेस की चिंता ज़ोर पकड़ने के कारण हमारे देश के कर्मियों का नीतिज्ञान निष्प्रभ हो गया है। फलतः गुंडों का गुंडईपन

अत्यन्त बढ़ गया है। इधर शोश्यलिज़्म के प्रगति के इतिहास ने हमलोगों को बंदर और बंदरिया या कुत्ता और कुत्तिया के ऐसा स्वाधीन जीवन का लोभ दिखाया है। उधर गांधीवाद ने कर्मियों को नपुन्सक बना दिया है। इसके फलस्वरूप उच्छृंखलता और गुंडईपन दिन पर दिन बढ़ रहा है और लोगों को उच्छृंखल बना रहा है शोश्यलिज़्म के ढाँचे पर तरह तरह की काल्पनिक बातें ; गुंडईपन करनेवाले अधिकतर मुसलमान होने के कारण कांग्रेसी लोग उस सम्बन्ध में कुछ कहने नहीं देते। कांग्रेस के समर्थक संवाद-पत्र इस गुंडई का प्रतिवाद तक नहीं करते। जो कांग्रेस साम्प्रदायिकवादी मुस्लिम लीग के साथ हिन्दुओं की ओर से सन्धि करने के लिये प्रस्तुत है वह कांग्रेस जातीयतावादी कैसे है ? जो कांग्रेस जातीय स्वार्थ के विरुद्ध नीति पर प्रतिष्ठित साम्प्रदायिक वादियों को प्रसन्न करने के लिये उनके अस्वाभाविक मांगों को मानकर उनका लाड़ और बढ़ा रही है उसको हम जातीयतावादी प्रतिष्ठान नहीं स्वीकार करते। जातीयतावादी संघ माने यदि जाति के प्रत्येक स्तर के नर नारी के विकाश का सहायक कोई प्रतिष्ठान हो और जाति के प्रत्येक स्तर के मनुष्य में से गुंडई और अत्याचार के उच्छेद के लिये दृढ़प्रतिज्ञ और निष्ठासम्पन्न कोई शक्तिशाली प्रतिष्ठान हो तो उसे हम जातीयतावादी प्रतिष्ठान मान सकते हैं वरना नहीं। यह केवल शक्तिवाद विज्ञान से नियमित किसी चिन्ताशील मनुष्य और प्रतिष्ठान ही में सम्भव है तथा शक्तिवाद विज्ञान से नियमित कोई शासन नीति ही अपने को जातीयतावादी कहने का दावा कर सकती है। पण्डित जवाहरलाल कहते हैं कि उनके अंतर में किसी सम्प्रदाय का छाप नहीं है। तो फिर वे मुस्लिम लीग के पास हिन्दू होकर हिन्दू मुसलमान की मीमांसा करने जाते हैं कैसे ? कांग्रेस के संवादपत्र स्त्रियों पर संघवद्ध गुंडई को हिन्दू समाज में विधवाओं का विवाह न होना तथा वर्णभेद रहने के कारण दिखाकर इस नीति को ढाँकने की चेष्टा करते हैं। हम इन सब आलोचनाओं में असली चीज़ को ढाँकने की नीति की अत्यन्त घृणा के सहित निन्दा करते हैं। हिन्दू समाज की कोई प्रथा यदि स्त्री जाति के विकाश विरुद्ध हो तो कानून द्वारा या समाज में आन्दोलन द्वारा उसका संशोधन हम समर्थन करेंगे। किंतु यदि स्त्रियों पर गुंडों के अत्याचार समर्थन आरम्भ हो तब वह जातीयतावाद की नीति नहीं हो सकती। स्त्रियाँ क्या जाति के बाहर की कोई चीज़ हैं ?

विकाशविज्ञान के आधार पर चिंता कर देखिये कि यह एक स्त्री के लिये कैसे विकाशविरुद्ध नीति का प्रश्रय है। जातीयतावाद के लिये कोई शक्तिशाली भित्ति हो तो उसका सबसे पहला कर्त्तव्य यही है कि स्त्रियों के विकाश के अनुकूल कानून बनाने के लिये और समाज की चिन्ता धारा को नियमित करने के लिये पूरी शक्ति प्रयोग करना। यह हमारे समझ ही में नहीं आती कि स्त्रियाँ किस प्रकार इस नपुंसक जातीयतावाद के आश्रय में जातीय पताका उत्तोलन करती हैं। गांधीवादी हिंदू महासभा का नाम सुनते ही चौंक उठते हैं कि कहीं नवयुवक उनके प्रभाव में न आ जायँ और कांग्रेसी नेताओं का नेतृत्व नष्ट हो जाय। हम कांग्रेस के अनेक कार्य तथा नीति का विश्लेषण कर प्रमाण कर दे सकते हैं कि यह जातीयतावादी प्रतिष्ठान नहीं है। यह भाववादी और साम्प्रदायिक है एवं इसकी अनेक चिंता में विजातीय चिंता की भित्ति पर स्थापित अदूरदर्शी नीति द्वारा नियमित हैं। कांग्रेसी लोग भारतीय चिन्ता के पास तक नहीं फटके हैं। भारत के चिंता में बहुत ही शक्तिशाली जातीय चिंता की भित्ति है। कांग्रेस को यदि जातीयतावादी प्रतिष्ठान मान लिया जाय तो हम कहेंगे कि शक्तिवाद इस प्रकार का जातीयतावाद नहीं चाहता। कांग्रेस अभी पाँच और छ कला की नीति द्वारा परिचालित हिंदू प्रतिष्ठान है। यह असाम्प्रदायिक प्रतिष्ठान नहीं है। यह इसके बहुत से कर्मों द्वारा स्पष्ट हो गया है। इसकी कर्मनीति से हिन्दू महासभा की कर्मनीति और चिंताधारा अनेक उन्नत है। उसमें सात कला की चिंता की भित्ति है और उसके चिंता से शक्तिस्तर की चिंता की भित्ति विपद्ग्रस्त नहीं हुई है। उसके आश्रय में जातीयतावाद अधिक निरापद है। या तो कांग्रेस को अपनी नीति बदलना पड़ेगा अथवा देशवासियों के एक बहुत बड़े अंश से कांग्रेस का प्रभाव मिट जायगा। कांग्रेस शक्तिवाद ग्रहण करने की शक्ति रखती है यह हम विश्वास तक नहीं कर सकते। हम हिन्दू महासभा के नेतागणों को शक्तिवाद ग्रहण कर जाति को मुक्ति का पथ दिखाने के लिये आह्वान करते हैं।

४९. जिन प्रदेशों में हिन्दू संख्यालघिष्ठ हैं उन प्रदेशों में पाँच और छ कला से नियमित कांग्रेस की चिंता द्वारा स्वाधीनता आन्दोलन विशेष दुर्बल होगा। कांग्रेस ने जिन प्रदेशों में मन्त्रित्व ग्रहण किया है वहाँ कांग्रेस की भीतरी नीति सात कला का कर्मविज्ञान ग्रहण करने पर बाध्य होगी। किंतु जिन

प्रदेशों में हिन्दुओं की संख्याल्पता के कारण कांग्रेस मन्त्रित्व नहीं ले सकी है वहाँ हिंदू यदि सात कला की चिन्ता से नियमित महासभा के आश्रय में अपनी कृष्टि (Culture) और स्वार्थरक्षा न करें तो वहाँ पाँच और छ कला की चिन्ता से नियमित कांग्रेस उसके समर्थक हिंदू सम्प्रदाय का सर्वनाश ही कर छोड़ेगी।

५०. शक्तिवाद की दृष्टि में भारत की स्वाधीनता (i)—शक्तिवाद राजतन्त्र को अस्वीकार नहीं करता। राजतन्त्र के द्वारा भी शक्तिवाद की नीति केन्द्रीय शासन में प्रतिष्ठित हो सकती है; यह शक्तिवाद स्वीकार करता है। अतएव बृटिश पार्लियामेन्ट जिस प्रकार सम्राट के अधीन रह कर ब्रिटेनवासियों के प्रतिनिधित्व के ज़ोर से ब्रिटेन की शासन व्यवस्था का परिचालना करती है और अन्य देश के किसी मन्त्रिसभा को उसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है, ठीक उसी प्रकार भारतीय मन्त्रिसभा भारतवासियों के प्रतिनिधित्व के ज़ोर से सम्राट के अधीन रह भारत का भीतरी शासनकार्य और वैदेशिक नीति को परिचालना करने में स्वाधीन रहेगी। भारतीय मन्त्रिसभा का इस अवस्था में स्थित होना शक्तिवाद की दृष्टि में भारत का स्वाधीन होना है।

(ii) बृटिश मन्त्रिसभा मित्र रूप से भारतीय मन्त्रिसभा को परामर्श दे सकेगी और भारतीय मन्त्रिसभा जब चाहे ब्रिटिश मन्त्रिसभा के साथ सम्बन्ध छिन्न कर केवल सम्राट के अधीन में भारत की भीतरी और वैदेशिक नीति स्वाधीन भाव से परिचालना करने को स्वतंत्र रहेगी। भारतीय मन्त्रिसभा की ऐसी स्थिति आने पर शक्तिवाद उसे स्वाधीन भारत स्वीकार करेगा।

(iii) भारत ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध छिन्न कर भीतरी और वैदेशिक विषयों में सम्पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र में परिणत होगा और स्वाधीन मन्त्रिसभा गठित होगी। इस प्रकार स्वाधीनता को शक्तिवाद भारत का स्वाधीन होना स्वीकार करता है।

५१. भारत किन उपायों से स्वाधीन हो सकता है—ब्रिटेन के विपद्काल में भारतीय जन साधारण की पराधीनता विरोधी मनोवृत्ति और शक्ति का आधिक्य देख कर ब्रिटेन भारत को अपने प्रयोजन में लगाने के लिये यदि समझे कि भारत को संतुष्ट करना आवश्यक है तो भारत उपरोक्त (i) और

(ii) चिह्नित प्रकार की स्वाधीनता प्राप्त कर सकता है। (iii) चिह्नित प्रकार की स्वाधीनता भारत ब्रिटेन के विपद् के समय ब्रिटेन के किसी शक्तिशाली शत्रु की सहायता से लाभ कर सकेगी।

५२. भारत यदि शक्तिवाद न समझ सके और पाँच और छ कला की चिंता में बद्ध रहे तो भारत ब्रिटेन के विपद के समय अपना प्राप्य न पा सकेगी। विपद् काल में कुछ लाभ करने के लिये छ कला की चिंता तो कोई शक्तिशाली चिंता ही नहीं है तथा पाँच कला की चिंता में भारत यदि बद्ध रहे तो भारत की शक्ति दो विरुद्ध दलों में बँट जाने के कारण भारत सुयोग पाने पर भी मौका खो देगी। पाँच कला की चिंता विज्ञान पर लड़ाई छेड़ने से देशका एक शक्तिशाली और बृहत्तर अंश साम्राज्यवादियों से मिल जायगा तथा उनके झण्डे के नीचे खड़ा होकर इस लड़ाई का मूलोच्छेद करेगा। ब्रिटेन यदि विपद में न पड़े तो भारत कभी पूर्ण स्वाधीन न हो सकेगा और यदि ब्रिटेन विपद में पड़े तो पाँच, छ कला चिंता पुष्ट वर्तमान कांग्रेस कोई शक्तिशाली वस्तु लाभ न कर सकेगी। ऐसी स्थिति में भारत यदि लड़ाई छेड़े तो यह सिर्फ हारेगा ही नहीं बल्कि जातीय शक्ति के मूल में विशेष दुर्बलता का बीज बोयेगा। ब्रिटेन को यदि अभी विपद् आ पड़े तो भारत के साथ सम्बन्धसूत्र में फरक होने का भय अभी उन्हें नहीं है। वे जानते हैं कि भारत का वर्तमान चिन्ताविज्ञान उनके अनुकूल है। कांग्रेस यदि छ कला की चिंता विज्ञान पर प्रतिष्ठित रह कर साम्राज्यवाद के साथ लड़ना चाहे तो शक्तिवादी उस लड़ाई में भाग न लेंगे; क्योंकि शक्तिवादी जानते हैं कि उस विज्ञान के अनुसार लड़ाई छेड़ने से भारत का स्वाधीनता चाहने वाला अंश शक्तिहीन हो जायगा। शक्तिवाद जानता है कि वर्तमान चिंता विज्ञान पर प्रतिष्ठित मुसलमान समाज भारत के मुक्ति संग्राम में योगदान नहीं करेगी। अतएव कांग्रेस यदि शक्तिविज्ञान न समझ कर ही वर्तमान चिंता की भित्ति पर लड़ाई छेड़े तो कांग्रेस विशेष भूल करेगी। यदि लड़ाई लड़ना हो तो शक्तिशाली भित्ति पर ही संग्राम छेड़ना कर्त्तव्य है। अहिंसा संग्राम-अपेक्षा आवेदन निवेदन श्रेष्ठ है। इस सम्बन्ध में हम और कुछ कहना नहीं चाहते। हमारी समझ में भारत के मुक्तियुद्ध के लिये यह अहिंस कर्मविज्ञान अत्यन्त विपज्जनक है। यह मतवाद मिट जाने ही से भारत का मंगल होगा।

शक्तिवाद की कर्मपद्धति के विभिन्न दिक्

५३. शक्तिवाद ऐसे सुन्दर और उदार चिन्ता विज्ञान से नियमित है कि इसी को एकमात्र अन्तर्जातिक राष्ट्रीय नीति कहा जा सकता है। इसको कोई राष्ट्र, देश, जाति, समाज या व्यक्ति राष्ट्रगत, देशगत, जातिगत, समाजगत और व्यक्तिगत भाव से ग्रहण करे तो भी असाम्प्रदायिक शक्तिवादी के कर्मविज्ञान और चिन्ताविज्ञान पर प्रतिष्ठित कर्मी से उनके कर्म और चिन्ता का भेद न होगा। अतएव प्रत्येक राष्ट्र, देश, जाति, समाज, सम्प्रदाय, श्रेणी और व्यक्ति इसको सीमाबद्ध भाव से ग्रहण करने पर भी उनका कर्म कोई दूषित कर्म न होगा। यदि कोई सीमाबद्ध हो कर शक्तिवाद ग्रहण करना चाहे तो भी मूल शक्तिवादी संघ उनको सहायता तथा उत्साह ही देगा। कहना आवश्यक है कि इसके द्वारा समाज का मंगल छोड़ अमंगल नहीं होगा।

५४. शक्तिवाद विज्ञानानुसार श्रेणीसंघर्ष और सोश्यलिज्म आसुरिकता के जन्मदाता हैं। सोश्यलिज्म किसी भी देश में प्रतिष्ठित नहीं हो सकता। पृथ्वी का वर्तमान इतिहास पर्यालोचना करने से यही पता चलता है कि इसके द्वारा किसी देश का मंगल साधन नहीं हुआ है। जिस देश में इसकी प्रतिष्ठा करने की चेष्टा की गई है उसी देश में इसने लोगों को परस्पर लड़नेवाले दो विरुद्ध दलों में विभक्त कर दिया है। भारत को भी यह चिंता दो विरुद्ध दलों में विभक्त कर देगी। हम विशेष कर बंगाल के समाजतंत्रियों को सतर्क कर देना चाहते हैं कि वे यदि बंगाल के कृषकों में अपना मतवाद फैलाने की चेष्टा करें तो वे अवश्य विफल मनोरथ होंगे। कृषक श्रेणी में सात कला की अपुष्ट चिंता स्वभावतः ही अधिक प्रस्फुटित रहती है। बंगाल के कृषक अधिकतर मुसलमान हैं और मुसलिग लीग सात कला से नियमित चिंताधारा ग्रहण करने के कारण बंगाल के मुसलमानों को समाजतान्त्रिक गण किसी प्रकार से साम्प्रदायिकता के बाहर नहीं ला सकते। पाँच कला की चिंता और कर्मनीति की सब प्रकार चेष्टाओं को सात कला की चिंताद्वारा नियमित मुस्लिम लीग व्यर्थ कर देगी। मुसलिम लीग ने सात कला की चिंता ग्रहण करने के कारण उनकी चिंता ऐसे सामंजस्यपूर्ण भित्ति पर अग्रसर हो रही है कि वे अपने सम्प्रदाय के धनी, मध्यवित्त तथा गरीबों की चिंताधारा को एक ही रेखा पर नियमित कर चल रहे हैं। जिस सम्प्रदाय के मध्यवित्तों

में बेकार समस्या नहीं है उस सम्प्रदाय में विप्लवी कर्मविज्ञान ग्रहण करने के उपयुक्त मनुष्य शीघ्र नहीं मिलते। हम पहले ही प्रमाण कर चुके हैं कि विप्लव कर्मियों के कर्मलक्ष्य के अनुकूल नहीं होता। इसलिये हम समाजतन्त्रवादियों को उस नीति को त्याग कर शक्तिवाद ग्रहण करने को आह्वान करते हैं।

२५. शक्तिवाद की अर्थ नीति—शक्तिवाद मतानुसार सब स्तर के मनुष्यों के लिये अन्न, वस्त्र और दूध की प्रचुरता होना ही सर्वश्रेष्ठ अर्थनीति है। केन्द्रीय शासन में प्रतिष्ठित शक्तिवाद इस तरह की व्यवस्था करने के लिये जो कुछ प्रयोजन होगा वही करेगा। केन्द्रीय नीति यदि वैसा न करे तो उसके लिये शक्तिशाली आन्दोलन करना शक्तिवादी कर्मनीति के अन्तर्गत है। शक्तिवाद श्रेणी संघर्ष को समर्थन नहीं करता क्योंकि श्रेणी संघर्ष, आसुरिकता है। धनतन्त्रवाद के नाम पर धनिकों का शासन और धनसाम्यवाद के नाम पर मजूरतन्त्रवाद को भी शक्तिवाद समर्थन नहीं करता। धनतन्त्रवाद वैश्य शासन और मजूर तन्त्रवाद शूद्र शासन है। शक्तिवाद इनमें से किसी को भी समर्थन नहीं करता। शक्तिवाद उत्पादन के करणों को स्टेट की सम्पत्ति करना और उत्पादन को स्टेट द्वारा नियन्त्रित कर उसमें शासकदल के लोगों को प्रतिपालन करने की नीति को विकाशप्रतिकूल घोषणा करता है। वैसा स्टेट आसुरिक स्टेट बन जाने का सुविधा पाता है। गरीबों का अन्न वस्त्र और बेकारों के काम की व्यवस्था करने के लिये देश के प्रयोजनानुसार शिल्प और उत्पादन की प्रणाली स्टेट प्रतिष्ठित करेगी। यह बहुत कुछ ग्राम्य शिल्प की भांति होना आवश्यक है। जिससे मनुष्य ग्राम्य जीवन और सामाजिक जीवन के सुख के साथ साथ यन्त्रों की सुविधा लेकर अन्न और कर्म समस्या का समाधान कर सके, स्टेट इस ओर ही अधिक ध्यान देगा। और स्टेट ऐसी व्यवस्था करेगा जिससे विदेशी शिल्प देश में घुस कर देशी शिल्प को नष्ट न कर दे। सिंचाई का बन्दोबस्त कर गोपालन और खेती के लिये वृहत परिकल्पना बनाना आवश्यक है। इसके लिये उन सब प्रान्तों को ही चुन लेना होगा जहाँ खेती और जन संख्या की अल्पता के कारण काफी जमीन खाली पड़ी है। उन सब स्थानों में उपनिवेश स्थापन करने के लिये कार्यकर परिकल्पना बनाना होगा। सर्व्वत्र गोपालन की व्यवस्था करने के लिये यथेष्ट गोचरभूमि की व्यवस्था करनी होगी। वर्तमान

कांग्रेसकर्मियों ने कृषकों को जमीनदारों के विरुद्ध उभाड़ने की नीति ग्रहण किया है। इनकी कर्मनीति द्वारा जमीनदारों को हानि पहुँचाना और सुखी कृषकों के सुख को बढ़ाना छोड़ ठीक ठीक बेकार और गरीबों की किसी प्रकार की सुविधा नहीं हो सकती। इसलिये शक्तिवाद उसे समर्थन नहीं करता। जमीनदारों को इस प्रकार हानि न पहुँचाकर उनसे यथेष्ट गोचर भूमि की व्यवस्था करा लेने से उसमें बेकार लोग गोपालन द्वारा अपने अन्न समस्या को हल करने का सुयोग पाते। इससे समाज का भी विशेष उपकार होता। शक्तिवाद चाहता है कि ग्राम्य शिल्प और ग्राम्य जीवन, गो पालन और खेती का नित्य नया प्रोग्राम बनाने के लिये केन्द्रीय शासन पर दबाव डालने के लिये सब आन्दोलन करें। केन्द्रीय शासनयन्त्र में इस प्रकार प्रोग्राम बनाने के लिये एक शक्तिशाली विभाग रहना आवश्यक है। इन सब परिकल्पनाओं को कार्य में परिणत करने के लिये शक्तिवाद धनिक श्रेणी पर आयकर लगाने की व्यवस्था समर्थन करेगा। मिलमालिक लोग मजदूरों के वासस्थान के लिये सुव्यवस्था करें इस लिये कानून बनाना और मजदूर जिससे मिलमालिकों को और मालिक मजदूरों को अकारण विरक्त न कर सकें इसलिये व्यवस्था करना प्रयोजन है। उससे स्टेट ही को हानि पहुँचती है। शक्तिवाद यह समर्थन नहीं करता कि—कर्मी लोग श्रेणीविद्वेष प्रचार द्वारा देश की चिताक्षेत्र को विषाक्त कर दें। विद्वेष प्रचार करने से अपुष्ट सात कला की चिंता बढ़ती है। देश की बेकारों की तालिका बनाना होगा और उनकी कर्मपन्था स्थिर करने के लिये शक्तिवाद केन्द्रीय नीति पर दबाव डालने के आन्दोलन को समर्थन करेगा। दुग्ध, अन्न और वस्त्र की प्रचुरता ही सर्वश्रेष्ठ अर्थनीति है और भारत में ऐसा होना बहुत सहल है। यह केवल शक्तिवाद ही की अर्थनीति नहीं है, यह प्राच्य चिंता का सर्वश्रेष्ठ विशेषता है। पाश्चात्य विषधारा लाकर प्राच्यचिंता विषाक्त करने से हमारा सामाजिक सुख नष्ट हो जायगा। शक्तिवाद इस विषाक्तकरण नीति को समर्थन नहीं करता। प्राच्य चिंता में अनेक सुंदर उपादान हैं और मानवकल्याण के लिये उनका विशेष प्रयोजन है। धनसाम्य के लिये लड़ाई दंगा मनुष्य को शोभा नहीं देता। विकाशविज्ञान से विचार करने से पता चलता है कि धनवैषम्य अपरिहार्य है। हम यही जानते हैं कि एक साधारण मजदूर से लेकर एक राजा तक और एक भिखारी से लेकर उन्नत स्तर पर प्रतिष्ठित एक योगी

तक सब का शरीर, मन और ज्ञान पुष्ट करने के लिये सब प्रकार के उपादान अन्न और दूध में विद्यमान हैं और इनकी प्रचुरता ही प्रकृत अर्थनीति है। धनसाम्य के नाम पर अकारण द्वेष फैलाना कोई उन्नत आदर्श का लक्षण नहीं है। जो केन्द्रीय शासन में प्रवेश किये हैं उनको चाहिये कि इस ओर लक्ष्य रख कर विदेशीय शोषण जाल को किस प्रकार छिन्न किया जा सकता है चिन्ता करें। कर्मियों को चाहिये कि देश के अंदर भेदबुद्धि को प्रश्रय न देकर, देश की चिंताधारा का ऐक्य को रक्षा करते हुए, देश के बेकार और अन्नसमस्या के समाधान को सामने रख कर विदेशी शोषण पर दबाव डालने की चेष्टा करें।

२६. गांधीवाद और शक्तिवाद—गांधीवाद क्या चीज है यह शायद कोई आज तक ठीक ठीक समझ नहीं पाये हैं। शक्तिविज्ञान से विश्लेषण कर हमने इसे यथास्थान समझाया है। वह हमारे देश के जातीयतावादियों का स्वीकृत मतवाद है, जो एक ओर तो शृंखलाबद्ध साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़नेवाले और दूसरी ओर गुंडईपन को प्रश्रय देनेवाले हैं। यह गान्धीवाद मुसलमान सम्प्रदाय के साम्प्रदायिकता की आग में ईंधन देकर उसकी शक्ति वृद्धि करने को उत्साही है, फिर दूसरी ओर यदि हिन्दू लोग उनकी बढ़ती हुई ज्यादती से पिस जाने के पहले सतर्क होना चाहें तो उस चेष्टा को साम्प्रदायिक कह उससे युवकगणों को दूर रखने का यंत्र विशेष है। यह ऐसी एक बढ़ियाँ मतवाद है कि जो स्त्रियों को तो पर्दा त्याग कर सड़क पर आने को कहता है और गुंडों को उन पर अत्याचार करने का मौका देता है। इस मतवाद का एक मजा यह भी है कि यह इन दोनों का सामंजस्य कैसे हो सके उसका विज्ञान नहीं दे सकता। गांधीवादी कांग्रेस ऐसी एक प्रतिष्ठान है जो जमींदारों का उच्छेद करने के लिये कर्मियों को कृषकों को उभाड़ने की सम्मति देता है और धनिकों को अपनी गोद की आड़ में छिपाता है। यह एक ऐसा मतवाद है जिसमें अर्थनीति, समाजनीति और शासननीति का कोई सुनिर्दिष्ट विज्ञान नहीं है। इसके द्वारा भारत एक चमत्कार रामराज में परिणत हुआ है। यह चोरों को चोरी करने में प्रश्रय देता है और अच्छे गृहस्थ को कहता है कि "मेरे दल में नाम लिखाओ"। उसके द्वारा नियमित कांग्रेस एक आश्चर्यजनक असाम्प्रदायिक प्रतिष्ठान है जो मुसलमानों के साम्प्रदायिक लाड़ के सामने हिन्दुओं का पक्ष लेकर काम

करने पर भी साम्प्रदायिक नहीं होता। इसका नमूना एक सांख्य दर्शन के पुरुष तत्त्व को छोड़ इस मर्त्यलोक में तो कहीं मिलना असम्भव है। यह ऐसी मतवाद है जो मुसलमानशासित देशीय राज्यों में स्वाधीनता-आन्दोलन करने से डरती है और हिंदूशासित देशी राज्यों में स्वाधीनता-आन्दोलन की पुरोहित बनती है। गान्धीवाद की जातीयता एक ऐसा मतवाद है जो वीरता और भीरुता का नमूना एक ही चरित्र में प्रतिभात कराने में सर्वश्रेष्ठ नीति का समर्थक है। इस मतवाद का सब से मजेदार वैशिष्ट्य यह है कि यह पराजय को विजय कह कर डुग्गी फेरते हैं। सत्य और अहिंसा के इस विजयी मतवाद ने किस प्रकार से सरासर झूठ बोला है तथा धोखा देकर जातीय स्वार्थ की हिंसा की है उसके हजारों प्रमाण हैं। शक्तिवाद की दृष्टि में यह 'न ग्रहण न वर्जन' नीति न होकर साफ साफ 'वर्जन की नीति' (त्याज्य) होने ही से अच्छा होता है। भारत से इसका प्रभाव पूर्णतया न मिट जाने से भारत एक कदम भी आगे न बढ़ सकेगा यह हम निःसन्देह कह सकते हैं।

९७. इस चिन्ता ने नेतागणों को इतना अदूरदर्शी बना दिया है कि वर्तमान साम्प्रदायिक निर्णय (Coumunal award) की भित्ति पर इन्होंने हमारे जाति और भाषा को पाश्चात्यकरण करने का काम हाथ में उठाया है। हम नेतागणों को यही कह सकते हैं कि यदि कमाल आतातुर्क बनने का शौक उन्हें इतना ज्यादा चढ़ा हो तो उन्हें चाहिये कि पहले शक्तिवाद समझें। वर्तमान शासन पद्धति (Coustitution) की भित्ति पर पाश्चात्यकरण करने का स्वप्न शीघ्र ही मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा के पदाघात से चूर हो जायगा। इनकी आविष्कृत 'हिन्दुस्तानी भाषा' हिन्दी की एक चमत्कार सुन्नत की हुई संस्करण है। इनका प्रत्येक काम शक्तिवादियों के उद्विग्न होने का कारण हो रहा है। कांग्रेस चाहती है हमारी भाषा के अक्षरों को बदल कर हमारे भविष्यत् वंशजों को हमारे पूर्वजों के चिन्ता से अलग करें और हिन्दुस्तानी भाषा के नाम पर हिंदुओं की चिता मकासुखो करें। शक्तिवादी इसका विरोध करेंगे, क्योंकि वे जानते हैं कि कोई चिन्ता ही भारतीय चिंता के समकक्ष नहीं हो सकती।

९८. हम पहले कह चुके हैं कि गांधीवाद छ कला से आया है। इसका प्रयोग क्षेत्र भी है। संसार में इसका प्रयोजन भी है। यदि इसे अपने

जगह पर रखा जाये तो इसके द्वारा समाज का विशेष उपकार ही होगा। परन्तु इसे अपने स्तर से अधिक मर्यादा देने से भारत की विशेष हानि होगी। भारत के जातीय चिंता में इस दुर्बल नीति का प्रवेश होने के कारण ही भारत आज़ प्रादेशिकता के विष से (Provincialism) विच्छिन्न दशा प्राप्त होने की ओर चला है। इस नीति का दोष ही यह है कि मुँह से तो यह अंतर्जातिकता की आदर्श की बातें कहता है किन्तु कार्यतः यह मनुष्य को अत्यन्त संकीर्ण बना देता है। वर्तमान समय भारत में हिन्दुओं ही को इस नीति द्वारा विशेष हानि सहनी पड़ी है। प्रादेशिकता ने हिन्दुओं को विच्छिन्न कर दिया है। कांग्रेसदक्षिणपन्थी, कांग्रेसवामपन्थी और महासभापन्थी सभी हिन्दुओं का जातीय शक्ति की विच्छिन्न दशा के नमूने हैं। एक युग में पौरहित्यवाद ने जिस प्रकार भारत को भाग कर दिया था इस युग में गांधीवाद भारत को उससे भी अधिक विच्छिन्न दशा प्राप्त कराने का कारण होगा। इस दुर्बल नीति के द्वारा भारत का विशेष अनिष्ट होगा। इस विश्वासवाद तथा आशावाद की मरीचिका के पीछे दौड़ कर भारत यदि शक्तिविज्ञान न समझे तो भारत के सर्वनाश को कोई रोक नहीं सकेगा।

५९. गांधीवाद को 'अंतर्जातिक धोखा' भी कहा जा सकता है। जो जगत्गुरु, अन्तर्जातिक महापुरुष इत्यादि बड़े बड़े नामों से परिचित होने का स्वप्न देखा करते हैं वही इसे ग्रहण कर पृथ्वीस्थित आसुरिक समाजों का समर्थक बनने के लिये अग्रसर हों। परन्तु जो अपने देश, अपनी जाति तथा अपने समाज की भलाई करना चाहें तो इसे अवश्य त्याग दें।

६०. **सोश्यलिज्म और शक्तिवाद**—यूरोप में सामन्त तान्त्रिक (Fundal) युग में प्रजासाधारण पर अत्याचार तथा उत्पीड़न के कारण विप्लव हुआ। उस विप्लव में राजतन्त्र का मूलोच्छेद और प्रजातन्त्र की प्रतिष्ठा आरम्भ हुई। फ्रान्स देश में सर्वप्रथम ऐसा विप्लव हुआ। इसमें वोटवाद की स्थापना हुई। वोटवाद का वैशिष्ट्य ही यह है कि इसके द्वारा धनी श्रेणी का राज्यस्थापना होती है। इसके परिणाम स्वरूप शोषणवाद ने भयंकर रूप धारण किया और वेकारी फैलकर मजदूरों और कृषकों का कष्ट बढ़ गया। मनुष्यों में बेकारी और कष्ट बढ़ जाने के कारण धनसाम्यवाद का आविर्भाव हुआ। रूसदेश में सर्वप्रथम इस प्रकार का विप्लव

हुआ। इसी विप्लव के फल स्वरूप दलतंत्र का राज्य हुआ। पहले ही कहा जा चुका है कि विप्लव के ऋषि की अदूरदर्शिता के कारण विप्लव का लक्ष्य व्यर्थ होता है। वोट (Vote) वाद में वोटरगण अधिकतर मजदूर और कृषक श्रेणी के होते हैं। वे समाज में निम्नतम विकाश सम्पन्न मनुष्य हैं। उनकी संख्या सब स्तर के मनुष्यों अपेक्षा सैकड़ों गुनी अधिक है। ये अल्पविकशित हैं, इसलिये कम बुद्धिमान हैं। अतएव ये केवल वोट ही देते हैं, पर मजा लूटती है धनी श्रेणी। जब प्रथम विप्लव हुआ उस समय जमीदार श्रेणी केन्द्रीय शासन की परिचालना करते थे, इसलिये सब दोष इन्हीं की नीति पर आरोपित होकर विप्लव आरम्भ हुआ। इनकी चिंता धनी श्रेणी से उदार होने पर भी पृथिवी में इनका सब से अधिक बदनाम है। अतएव वोटवाद में इनका स्थान न होकर धनिकों का प्राधान्य अधिक होता है। धन साम्यवाद के नाम पर जो विप्लव हुआ उसमें वोट तंत्र के स्थान पर दलतंत्र की स्थापना हुई और बेकार समस्या का भी समाधान हुआ। इस विप्लव के पहले ही इनका मतवाद सारे संसार में फैल चुका था। फलतः, वोटवाद के परिणाम स्वरून, सारे संसार में जो बेकार समस्या और मजदूरों पर अत्याचार की बाढ़ आई थी उसकी गति बुद्धिमान राजनीतिज्ञ देशों में मंद हो गई। फ्रेञ्च विप्लव की अभिज्ञता द्वारा राजनीतिज्ञ राजाओं ने प्रजातंत्र के आवरण में आत्मरक्षा की। किंतु जो राजा राजनीतिज्ञता के अभाव से कम बुद्धिमान थे वे प्रजाशक्ति के निकट परास्त हुये। रूस विप्लव के पहले और बाद राजतान्त्रिक, राजा और प्रजामिश्रतांत्रिक, और प्रजा तांत्रिक देशों में विधिव्यवस्था की परिवर्तन हुई। इसका फल यही हुआ कि बेकार और गरीब समस्या ने, जो भीषण आकार ग्रहण किया था, उस ओर सब का लक्ष्य निबद्ध हो गया। अतएव मजदूर विप्लव की गति को रुद्ध करना सम्भव हुआ। प्रजाविप्लव और मजूरविप्लव के सपक्ष नाना प्रकार के वैज्ञानिक इतिहासों का आविर्भाव युवकों को उत्तेजित करने के लिये हुआ था। हम इस विषय पर आलोचना कर वृथा समय नष्ट करना नहीं चाहते।

६१. ये सब विज्ञान भित्तिहीन और काल्पनिक कथा मात्र हैं। इसका प्रमाण विप्लव द्वारा प्रतिष्ठित नये शासन नीति ही ने दिया है। हमारे दृष्टि में विप्लव नामक कोई वस्तु ही नहीं है। वास्तव में विप्लव होता ही नहीं।

केन्द्रीय शासन की अनीति के कारण देवासुर युद्ध का होना ही मुख्य वस्तु है। केन्द्रीय शासन यदि विकाश-विज्ञान का दायित्व पालन करे तो देवासुर युद्ध नहीं आता। इसीलिये शक्तिवाद संशोधन स्वीकार करता है, विप्लव का होना स्वीकार नहीं करता। विप्लव ने जो आसुरिक शासन का उत्पाटन किया है यही उसकी बहादुरी है; परन्तु विप्लव द्वारा प्रतिष्ठित शासन जो फिर आसुरिक शासन में परिणत हो जाता है यही विप्लव की अदूरदर्शिता का प्रमाण है। शक्तिवाद विप्लव नहीं चाहता किन्तु आसुरिक शासन को उलट देने की शक्ति रखता है। केन्द्रीय नीति दायित्वहीन होने से उसका पतन अनिवार्य है।

६२. अस्त्रधारी जो अस्त्रधारण कर केन्द्रीय नीति के लिये युद्ध करता है उसके मूल में यही है कि वह मनुष्य के विकाश का दायित्व पालन कर रहा है। वह जानता है कि यह उसके विकाश के अनुकूल और अखिल मानव समाज के विकाश के अनुकूल है। वह यदि समझता कि केन्द्रीय शक्ति आसुरिक है तब वह यह भी समझ पाता कि यह उसके विकाश के प्रतिकूल, उसके दायित्व के प्रतिकूल और अखिल मानवसमाज के विकाश के प्रतिकूल है। फिर किसकी शक्ति है कि उनसे अस्त्र धारण कराये? इस प्रकार प्रत्येक विभाग ही में शक्ति नीति को अति सुगमता से प्रतिष्ठित किया जा सकता है, फिर केन्द्रीय नीति यदि आसुरिकता न छोड़े तो उसकी समस्त शक्ति को व्यर्थ कर उनका पतन भी लाया जा सकता है।

६३. केन्द्रीय नीति प्रजा के दुःख को वृद्धि कर तथा अपने दायित्व को नष्ट कर आसुरिक हो गई थी। उसके फलस्वरूप फ्रेंच विप्लव का सूत्रपात हुआ। केन्द्रीय नीति ने शोषण और पीड़न को प्रश्रय दिया था; इसलिये धन साम्यवाद की उत्पत्ति हुई और रूस देश में उसका विप्लव हुआ। फलतः सब देशों की केन्द्रीय शक्ति सजग हो गई हैं और मजदूर विप्लव का मूल छिन्न हो गया है। सोश्यलिज्म ने पृथ्वी को जो दिया है उससे पृथ्वी पर दलतन्त्र की प्रतिष्ठा हुई है और बेकारों पर केन्द्रीय नीति का दायित्व बढ़ गया है। दल तान्त्रिक देशों में बेकारों की समस्या नहीं है। किन्तु धन-तान्त्रिक देश इस विषय में पिछड़े हैं। धनतान्त्रिक देशों में जिससे विप्लव न हो सके इसलिये बेकारों के लिये अन्नप्राप्ति की व्यवस्था है। धन साम्य असम्भव है। विकाश के लिये धनसाम्य का कोई प्रयोजन

नहीं है। विकाशवादी जानता है कि अन्न, वस्त्र और शिक्षा विकाश के लिये अत्यन्त प्रयोजनीय हैं। केन्द्रीय नीति यदि इच्छा करे तो इन समस्याओं का समाधान सहज है, और केन्द्रीय नीति वैसा न करे तो उसका पतन भी कठिन नहीं है। शक्तिवाद केन्द्रीय नीति पर संशोधन के लिये दबाव डालेगा, विप्लव के लिये नहीं।

६४. शक्तिवाद और फैसिज्म—राजतन्त्र के स्थान पर वोटवाद की स्थापना हुई। वोटवाद में धनिकों का शासन अवश्यम्भावी है। यही धनसाम्यवाद की उत्पत्ति का कारण है। धनसाम्यवाद के नाम पर अन्त तक मजदूरतन्त्र की सृष्टि हुई। धनसाम्यवाद की नीति मजदूरतान्त्रिक राज्य में भी कार्य में परिणत न हो सकी। यहाँ तक कि उस रूस देश में एक ही मतवाद पर प्रतिष्ठित दो शक्तिशाली दल अपनी शक्ति नष्ट करने लगे। इधर मजूरतन्त्र के प्रेमीगण प्रत्येक देश में प्रबल हो उठे। और धनतन्त्र तथा मजूर तंत्र की भित्ति पर रूस के प्रतिवेशी देशों में दो शक्तिशाली विरोधी दल का आविर्भाव हुआ। मुसोलिनी ने देखा कि धन तंत्रवाद में बेकारसमस्या हल नहीं होती और सोश्यलिज्म आने से देश में दो परस्पर विरोधी शक्तिशाली दलों की सृष्टि होती है। उन्होंने दलतांत्रिकता की सबलता ग्रहण कर और सोश्यलिज्म की दुर्बलता त्याग कर फैसिज्म नामक दलतान्त्रिक मतवाद की नीव डाली। यह नया मतवाद धनतंत्र और मजदूरतन्त्र की सीमा के बाहर जाति को ले जाकर उसकी एकता रक्षा करने में समर्थ हुआ। धनतांत्रिकता धनिकों के अनुकूल शासन और मजूर तांत्रिकता धनिकों का उच्छेद करनेवाला शासन होने के कारण ये दोनों प्रकार के शासन ही उन्हें कमजोर मालूम पड़े। उन्होंने धनी और मजदूर के मोह के परे जाकर जातीयतावाद की भित्ति पर फैसिज्म का जन्म दिया। यह भी दलतांत्रिकता है। यह वैश्य आसुरिकता पर जैसा खड़गहस्त है, वैसे मजूर आसुरिकता पर भी तीव्र दृष्टि रखता है। फैसिज्म ने वोटवाद का उच्छेद किया है। पूर्व्वोक्त दोनों प्रकार की शासन व्यवस्था अपेक्षा फैसिज्म उन्नततस्तर की भित्ति पर प्रतिष्ठित है। रूस की नीति और इनकी नीति में यही भेद है कि फैसिस्ट इटली या नाजी जर्मनी में रूस की तरह एक ही मतवाद की भित्ति पर परस्पर विरोधी दो दलों का स्थान नहीं है। रूस देश में जैसे बेकारसमस्या नहीं है वैसे ही फैसिस्ट देशों में भी बेकार समस्या

नहीं है। रूस के शासनविरोधी असली सोश्यलिस्ट यदि आज विलुप्त हो जायँ तो कल ही रूस देश की नीति और फैसिस्ट नीति एक ही रेखा में आ खड़ी होगी। स्टैलिन अब सोश्यलिस्ट निधनकारी समाजतंत्री हुये हैं। फैसिस्टों ने सोशलिष्टों की अपेक्षा उन्नत नीति की भित्ति ली है यह बात तो सच है; किंतु वे विदेशियों पर आसुरिक नीति ही का अनुसरण करते हैं, यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता। दलतांत्रिक और वोटवादी देशों में यही अंतर है कि वोटवादियों के देश में बेकारसमस्या है और दलतांत्रिक देशों में नहीं है। फैसिस्ट नीति के साथ यदि हम शिवस्तर की (आठ कला) ज्ञानशक्ति को मिलित कर सकें तो वह शक्तिस्तर की नीति के बराबर होगा। परन्तु सोश्यलिष्ट नीति के साथ आठ कला की नीति को योग करने का कोई रास्ता नहीं है; क्योंकि सोश्यलिष्ट नीति अत्यन्त अल्प विकशित कला द्वारा नियमित मतवाद है। यह आप ही आप मिट जायगा। वोटवादी या धनतांत्रिक, मजूरदल तांत्रिक या सोश्यलिष्ट और चात्रदलतांत्रिक या फैसिस्ट इन तीन प्रकार मतवादों में फैसिस्ट पन्थी अधिक शक्तिशाली हैं। सोश्यलिज्म अपने देशों में आसुरिकता का जन्म देनेवाला है। यह विद्वेष पूर्ण मनोवृत्ति को जन्म देनेवाला मतवाद है। सोश्यलिज्म को विद्वेषवादी मतवाद कहा जा सकता है। यह शक्तिवादियों का काम्य नहीं हो सकता है। फैसिस्ट गण अत्यन्त दाम्भिक है। इनके सहित यदि आठ कला की ज्ञान शक्ति मिलित होती तो इनकी यह दुर्बलता न रहती। सोश्यलिज्म कभी जातीयतावाद नहीं हो सकता। सोश्यलिज्म की आड़ में रह, स्टेलिन जो चलाना चाहते हैं उसमें भी शक्तिवाद आ सकता है; किन्तु विशुद्ध सोश्यलिज्म के साथ शक्तिवाद का मेल नहीं हो सकता। फैसिज्म जातीयतावादी होने पर भी अन्य जातियों की स्वाधीनता नष्ट करने का पक्षपाती है। इसे जातीयतावाद का आदर्श नहीं कहा जा सकता है। शक्तिवाद में ये सब बातें नहीं हैं।

६९. शक्तिवाद में नारियों का स्थान—शक्तिवाद स्त्रियों के लिये पर्दाप्रथा का समर्थन नहीं करता; क्योंकि यह भारतीय कृष्टि का विरोधी है और स्त्रियों के लिये विकाशप्रतिकूल है। सामाजिक जीवन में नारियों के विकाश की त्रिविधभावधारायें हैं—कन्याभाव, स्त्रीभाव, और मातृभाव। पाश्चात्य चिंताधारा में नारियों को केवल भोग्य दृष्ट किया है। नारियों के

जीवन में स्त्रीत्व को व्यापक रूप से देखने की रीति भारतीय चिंता के अनुकूल नहीं है। यह नारियों के भी विकाश के अनुकूल नहीं है। पाश्चात्य चिंता ने नारियों को अत्यन्त संकुचित स्थान में आबद्ध कर दिया है। मातृत्व में सौन्दर्य्य तथा गाम्भीर्य्य दोनों ही अधिक हैं। इन त्रिविध भावजगतों के परे भी नारियों का स्थान है। वह ज्ञान और निष्कामकर्म्म का जगत है। नारियों का वहाँ भी अधिकार है। शक्तिवाद यह स्वीकार करता है कि सामाजिक जीवन में नारियों का प्रयोजन पुरुषों से कुछ दूसरे तरह का है। साथ ही शक्तिवाद यह भी स्वीकार करता है कि राष्ट्रीय जीवन में नारियों की मर्य्यादा पुरुषों के समान है। शक्तिवाद पुरुष और स्त्रियों के सहशिक्षा का प्रयोजन स्वीकार नहीं करता। नारियों के विकाशानुकूल सामाजिक मर्य्यादा बढ़ाने के लिये शक्तिवाद उनके अर्थोपार्जन की प्रयोजनीयता स्वीकार करता है। नारियों के लिये कुछ विशेष विभागों में काम संरक्षण कर रखने का प्रयोजन शायद हो सकता है। शक्तिवाद यंत्र मिश्रित ग्राम्य शिल्प द्वारा नारियों का अर्थोपार्जन समाज के विकाश के अधिक अनुकूल समझता है।

६६. कांग्रेस की वर्तमान चिंताधारा दुर्बल होने के कारण जाति के इस जागरण के दिन में नारियों की मर्य्यादा अत्यन्त बुरी तरह से विपद्ग्रस्त हो रही है। एक अंग्रेज महिला अकेले ही हमारे देश के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक बेडर भ्रमण कर सकती है; किंतु हमारे देश की स्त्रियों को गुंडे घर से बाहर खींच ले जाने का साहस करते हैं। गुंडे जानते हैं कि हमारे देश के जातीयतावादी गण नारियों की मर्य्यादा नहीं जानते। परन्तु, एक अंग्रेज-महिला के पीछे उन्होंने अपनी जातीयता के संपूर्ण संघवद्ध शक्ति को एक मुखी कर रखा है। नारियों की पर्दा प्रथा दूर करने के लिये जो लोग अंदोलन करते हैं उन्होंने समाज में तथा कानून में गुंडा विरोधी किसी नीति की स्थापना करने की चेष्टा क्यों नहीं किया है यह अब हमें अज्ञात नहीं है। देश के प्रत्येक नारी का कर्तव्य है कि सर्वत्र शक्तिसंघ की स्थापना कर अपनी मर्य्यादानुकूल सामाजिक चिंता और कानून बनाने के लिये आन्दोलन की सृष्टि करें। नारियों की मर्य्यादा सर्वत्र माता के सदृश्य पवित्र होना चाहिये; केवल इसलिये ही अब नारियों को आन्दोलन करना कर्तव्य है। अन्न, वस्त्र, शिक्षा और सामाजिक मर्य्यादा का अधिकारी होना ही

स्वाधीनता है। इसके अतिरिक्त स्वाधीनता किसे कहते हैं यह शक्तिवादी नहीं जानता। नारियों के लिये गुंडों का प्राधान्य कभी स्वाधीना नहीं कहा जा सकता। कांग्रेस उसका प्रश्रय देनेवाली है, यह बात शक्तिवादी एकमत से प्रचार करते हैं। एक नारी की मर्य्यादा के लिये समस्त नारियों को एकमत होना होगा। मुसलमान समाज के नेतृत्व में सात कला के चिता की भिरि है। इसलिये उसमें नारीगण उतनी विपद्ग्रस्त नहीं है। किंतु कांग्रेस हिन्दूगण को छः कला के चिता में गिरा देने के कारण हिन्दू नारी असहाय हो गई है। हिन्दू महासभा भारतगवर्न्मेंन्ट द्वारा स्वीकृत प्रतिष्ठान है। इसका आश्रय न ग्रहण करने से हिन्दू नारियों का आन्दोलन शक्तिशाली नहीं हो सकता। शक्तिवादी विज्ञान का यही नियम है कि विकाश का पथ करने के लिये जिस ओर से शक्ति मिले उसी ओर झुकना होगा। जातीयतावाद के नारे लगाकर जिन्होंने स्त्रियों के अपमान का पथ खोल दिया है उनके बातों में अब न भूल कर पहले गुंडों के हाथ से बचने का रास्ता करना होगा। शक्तिवाद ग्रहण करने से साम्प्रदायिकतावाद किसी को मलिन नहीं कर सकता है।

६७. **शक्तिवाद और मुसलमान समाज**—ऋषि के निर्देश के स्थान में पुरोहितों के निर्देश ने जिस युग में भारत के शासक और समाज के पतन की सूचना की थी उस युग में भारत पर मुसलमान आक्रमण आरम्भ हुआ। समाजनीति पहले ही पुरोहितवाद के कठोर पीड़न से शक्तिहीन हो चुकी थी। मुसलमान शासकों ने उस सुयोग को ग्रहण किया और देशवासियों के एक बड़े अंश को अपना समर्थक करने के लिये अपने समाज में मिला लिया। शासकों की शीक्षा दीक्षा के कारण ये उनके समर्थक हो गये। मुसलमान सभ्यता का प्रचार जिस किसी देश ही में हुआ है उसी देश के निवासियों के एक अंश को उन्होंने मुसलमान शासकों के अनुकूल और उस जातीय सभ्यता के प्रतिकूल कर तैयार करने के निमित्त अरबी अक्षर और भाषा के सहित सम्बन्ध स्थापना करने की चेष्टा की है। भारत में मुसलमान शासन के विस्तार के साथ उन्होंने इस नीति को कायम रखा। हमारे देश के मुसलमान बहुत दिनों से अरबी अक्षर और कृष्टि के भक्त होने के कारण जातीयतावाद के प्रति उनकी श्रद्धा कम है। इस कारण वे भारतीय कृष्टि और सभ्यता को अपनी चीज नहीं समझते। मुसलिम लीग

मुसलमानों का एक शक्तिशाली प्रतिष्ठान है। इसने भारतीय मुसलमानों को जातीयतावाद के प्रभाव से मुक्त रखने के लिये शक्तिशाली उद्यम आरम्भ किया है। भारत के जातीय नेतागण दुर्बल चिंता में इतने मुग्ध हैं कि इनको जातीयतावाद के झंडे के नीचे लाने के लिये उन्होंने इनकी सब साम्प्रदायिक मांग और दुलार को स्वीकार कर लिया। यदि तुर्की वीर कमाल अतातुर्क की भांति कोई वीर जातीयतावादी तथा शक्तिशाली पुरुष हमारे देश के मुसलमान समाज में जन्म ग्रहण करें तो इस अरब मुखी सम्प्रदाय की चिंता को अपने जातीय कृष्टि की ओर घुमा दे सकेंगे। कांग्रेसियों में कोई ऐसी शक्ति नहीं रखता। अतातुर्क ने देश के जातीय चिंता की अरबमुखी गति को फेर देने के लिये एक ही दिन में अपने देश से अरबी अक्षरों को निकाल बाहर किया और विजातीय अरबी कृष्टि को अपनी जातीय कृष्टि की तुलना में तुच्छ समझ, अपना अरबी नाम कमालपाशा त्याग कर कमाल अतातुर्क नाम ग्रहण किया। भारतीय मुसलमानों की मति गति और चिंताशक्ति कितनी दुर्बल है और पृथिवी के अन्य देशों और भारत के अन्यान्य सम्प्रदायों की तुलना में ये सब विषयों में कितने पिछड़े हुये हैं इसकी समालोचना हम नहीं करना चाहते। ये अपने को भारतीय कृष्टि और ज्ञान से दूर रख अर्थात् अपनी जातीय कृष्टि को त्याग कर अरबी कृष्टि तथा ज्ञान सम्पद से संयुक्त रहना चाहते हैं। जिस देश की कृष्टि तथा ज्ञान समुद्र की भांति अनन्त है, उसे त्याग कर ये बिंदु के लिये लालायित है। इन्होंने अपने भविष्यत वंशजों को कितनी हानि पहुँचाई इसका प्रमाण इनके भविष्य वंशधर ही देंगे। भारत में यदि शक्तिवाद कर्मनीति की प्रतिष्ठित न हो और गांधीवाद ही यदि भारत की चिंता की भित्ति बनी रहे तो वर्तमान स्थिति में रहकर भी ये राजनैतिक भारत के शक्तिशाली अंश में परिणत होंगे। ये अपने को स्वतंत्र जाति कह अलग रखना चाहते हैं, इसलिये उसमें बाधा देने की नीति शक्तिवादी त्याग करेंगे। शक्तिवाद मनुष्य मात्र का विकाशानुकूल मतवाद है, इसलिये शक्तिवादी इनमें भी प्रचार करने की चेष्टा करेंगे। इस सम्प्रदाय में पांच और छ कला के चिंता का प्रभाव वर्तमान समय में कम होने के कारण कोई भी उन्नत चिंताशील की चिंता इनके समाज में सुगमता से प्रवेश करने का सुयोग नहीं पाती। साम्प्रदायिक होना कोई बुरी बात नहीं है किंतु कोई सम्प्रदाय यदि (अपने उचित प्राप्य के अतिरिक्त) अन्य

सम्प्रदाय अपेक्षा अधिक सुविधाओं के लिये झगड़ा करना चाहती हो तो उसे शक्तिवाद की दृष्टि में आसुरिक नीति कहना होगा। किसी सम्प्रदाय की उसके उचित प्राप्य से अधिक मांगों को मान लेना दुर्बल नीति के अन्तर्गत है, वह शक्तिवादी नीति नहीं है। हम मुसलमानसमाज से केवल यही कह सकते हैं कि वे यदि शक्तिवाद की चिंता ग्रहण करें तो यह उनके सम्प्रदाय के अनुकूल ही होगा और उनकी चिंता की प्रधान दुर्बलता—दूसरे समाज के लिये कुछ न सोच सकना—यह भी इसके प्रभाव से दूर होगा। हमारी समझ में मुसलमानसमाज ने अभी तक कोई उन्नत चिंता और कृष्टि ग्रहण करने की शक्ति यथेष्ट अर्जन नहीं किया है। इसलिये इस ओर अधिक शक्ति क्षय न कर शक्तिवादी लोग आगे बढ़ेंगे। जब एक संख्यागरिष्ट सम्प्रदाय शक्तिवाद को ग्रहण करता है तो संख्या लघु सम्प्रदाय उसे बिना ग्रहण किये रह ही नहीं सकता। एक संख्यालघु सम्प्रदाय एक संख्यागरिष्ट शक्तिवादी सम्प्रदाय के निकट आसुरिक नीति का आश्रय ग्रहण कर जीवित रहने की शक्ति नहीं रखता। इसलिये या तो मुसलमान समाज शक्तिवाद ग्रहण करेगा या देश के किसी अनुन्नत सम्प्रदाय की तरह स्थान ग्रहण कर जीवित रहेगा।

६८. शक्तिवाद और अनुन्नत श्रेणी के हिन्दू—हिन्दुओं को उन्नत और अनुन्नत श्रेणी में विभक्त करने के लिये साम्राज्यवादियों ने जो इतिहास लिखा है उसे हमारा कोई प्राचीन शास्त्र समर्थन नहीं करता। आर्य्य पश्चिम देशों से भारत में आये हैं, और उन्होंने इस देश के आदि अधिवासियों को पराजय कर उनको अछूत कर रखा है, इस प्रकार के इतिहास को शक्तिवाद काल्पनिक और मिथ्या घोषणा करता है। उन्नत और अनुन्नत श्रेणी के हिन्दू तथा इस देश के मुसलमान सभी आर्य्यसन्तान तथा भारतसन्तान हैं। उन्नत और अनुन्नत श्रेणी के हिन्दू आर्य्य और अनार्य्य नाम ये सभी एक ही आर्य सभ्यता की अंगीभूत कथायें हैं। पहले कहा गया है कि आदि युग में आठ कला के विकाशसम्पन्न और चार कला के विकाशसम्पन्न मनुष्य ही थे। इन दोनों की सभ्यता करीब करीब एक ही तरह की है। अष्टम कला के विकाश से ही मनुष्य की उत्पत्ति हुई है। येही आदि मानव हैं। इनको ऋषि कहा गया है। पृथिवी के समस्त मनुष्य इन ऋषियों के सन्तान हैं। ऋषि का प्रथम आविर्भाव भारत ही में हुआ था।

यहाँ से सारे पृथिवी में उनके वंशधर गण फैल गये थे। भारत के ऋषि सन्तानों की सभ्यता बहुत दिनों तक इस आदि सभ्यता के ढाँचे पर ही रही। इस युग को हमने वैदिक युग या शिव का युग कहा है। सामाजिक युग में सामाजिक सभ्यता के नियमों को मानने तथा न मानने के सिद्धान्त पर ऋषि सन्तान गण दो भागों में विभक्त हो गये। जो सामाजिक सभ्यता की नियमों पर चलते थे उनको आर्य्य कहा जाता था और जो सामाजिक सभ्यता का व्यतिक्रम करते थे वे अनार्य्य कहलाये। सब आपस में मिल कर रहेंगे, यही सामाजिक सभ्यता का विज्ञान है। वैसा न कर, जो अकारण अशान्ति करते थे उन्हें उस युग के ज्ञानीगण अनार्य्य कह तिरस्कार करते थे। सामाजिक सभ्यता के युग में आर्य्य और तथा अनार्य्य दोनों ओर ही समाज पतियों का सृष्टि हुआ। इनमें (आर्य्य अनार्य्य) कभी कभी झगड़ा भी होता था। इसके फलस्वरूप एक शाखा में कार्य्य के विभाग के स्वाभाविक परिणति से चार वर्णों की उत्पत्ति हुई। ये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं। अब तक ऋषिसन्तान गण पाँच भागों में विभक्त हुये—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अनार्य्य। ये सभी वैदिक सभ्यता के अन्तर्गत थे। इसके बाद समाज व्यवस्था समन्वित शास्त्रों की उत्पत्ति हुई। बहुत लोग उसकी नीति न मानने के कारण आर्य्यसमाज और बहुत से भागों में विभक्त हो गया। विवाह तथा वृत्ति व्यवस्था ही समाज व्यवस्था का मूल सूत्र था। कोई विवाहविधान तोड़ने से या वृत्तिव्यवस्था लंघन करने से उस पर सामाजिक शासन की व्यवस्था थी। विवाहप्रथा में एक प्रधान बात यह थी कि विलोम विवाह नहीं हो सकता था। इस नीति के भंग होने से पंचम जाति की सृष्टि हुई। इनको और अनार्य्य श्रेणी के ऋषिसन्तान गणों को वर्तमान स्वार्थी साम्राज्यवादियों की खुशामद कर पेट भरने वाले ऐतिहासिकों ने इस देश का आदि निवासी कहा है। हम जोरों के साथ कह सकते हैं कि ऐसे इतिहास केवल कपोल कल्पनायें हैं। भारत के इतिहास को नये तरह से लिखने की चेष्टा हो रही है। कांग्रेस की चिंता हमारी जातीयता को अतिक्रम कर विदेशी चिंता पर प्रतिष्ठित है। अतएव हिन्दू महासभा से हमारा निवेदन यह है कि वे इस इतिहास को संशोधन करने के लिये आन्दोलन करें। सामाजिक शासन के फल स्वरूप अस्पृश्य जातियों की उत्पत्ति हुई। इसका मूल विज्ञान इस प्रकार है—ब्राह्मण कन्या तथा क्षत्रिय, वैश्य या शूद्रपुत्र

मिलित होने से जो संतान होती है वह पंचम जाति है। ब्राह्मण या क्षत्रिय कन्या तथा वैश्य या शूद्रपुत्र के मिलन से पंचम जाति। ब्राह्मण, क्षत्रिय, या वैश्यकन्या और शूद्र पुत्र के मिलन से पंचम जाति। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, या शूद्रकन्या और पंचम जाति के पुत्र के मिलन से पंचम जाति। पंचम जाति का पुत्र और पंचम जाति की कन्या के मिलन से पंचम जाति होती है। भारत के ऋषि सन्तानगण में सामाजिक भेद का इतिहास यही है। इसमें जो सामाजिक शासन का सूत्र है उसमें किसी शास्त्र में यह नहीं कहा गया है कि वर्तमान अनुन्नत गण आर्य्य सभ्यता के बाहर की कोई जाति हैं। जिन ऋषि सन्तानगण को आर्य्य कह कर तिरस्कार किया गया था वे सब क्षत्रिय तथा ब्राह्मण श्रेणी के अन्तर्गत माने जाते हैं। इन सभी का गोत्र है और वैदिक संस्कार का अधिकार भी सब को है। सभी वेद और ऋषि को मानते हैं। शास्त्र भी इसे समर्थन करता है। सामाजिक शासन के कारण समाज ने जिनका बहिष्कार किया था वे तथा सभ्य शाखा के ऋषि सन्तानगण दो भिन्न जातियाँ नहीं हैं। उनकी सभ्यता भी दो सभ्यता नहीं है। प्रथम युग में ऋषि संतानगणों में से जो पृथिवी के चारों ओर फैल रहे थे उनमें से जिनके साथ हमारा मिलन का सूत्रपात होता था उनसे भी हमारी सभ्यता का बहुत लेन देन हुआ था। इस समय भी, उसके चिन्ह स्वरूप अनेक प्रमाण हम संग्रह कर सकते हैं किन्तु जिन लोगों से विच्छिन्न हो जाने के बाद अनेक युग तक मिलन होने का कोई संयोग न हुआ उनकी भाषा और सभ्यता से हमारी भाषा और सभ्यता का स्वाभाविक सम्पर्क कम हो गया। खैर सामाजिक शासन के युग में और इस समय भी सामाजिक शासन के फल से अनुन्नत श्रेणी की उत्पत्ति हो सकती है। उच्च वंश की कन्या और निम्न वंश के पुत्र के मिलन को नीच जाति का लक्षण मानना ही पड़ेगा, ऐसी कोई बात नहीं है। शक्तिवाद भी उसको स्वीकार नहीं करता है। हम यही कह सकते हैं कि वह एक समय हमारे सामाजिक सभ्यता की रीति थी। अनुन्नत श्रेणी का आर्थिक प्राचुर्य्य हो जाने से वे लोग अपने ही इसको समझेंगे और दूसरों को भी समझायेंगे। सामाजिक शासन के बाद राज शासन युग में जैसा शासन हुआ था उसको सात कला (विष्णुस्तर) का दुर्बल शासन, सात कला का आसुरिक शासन और शक्तिस्तर का शक्तिशाली शासन ऐसे तीन भागों में विभक्त किया गया है। शासन दुर्बल या आसुरिक

होने से ही नाना प्रकार गोलमाल होता है। पृथ्वी के सब देशों के इतिहास में इसका प्रमाण है। यही देवासुर युद्ध का इतिहास है। देव, असुर, आर्य, अनार्य, सिर्फ ऐसे ऐसे शब्दों के प्रयोग से उनका बाहरी जाति या भीतरी जाति होना प्रमाणित नहीं होता। हमारे शक्तिस्तर के कर्मविज्ञान के सहित अनुन्नत श्रेणी का क्या सम्बन्ध है उसे सभी समझ सकते हैं। इस मतानुसार हम कह सकते हैं कि उन्नत या अनुन्नत श्रेणी के लोग एक ही सभ्यता, कृष्टि (Culture), धर्म और समाज के अंश हैं। शक्तिवादी मात्र ही स्वीकार करते हैं कि धर्म स्थानों और धर्म कार्यों में इनका उन्नत समाज के बराबर अधिकार है। विवाह समाजव्यवस्था के साथ सम्बन्ध रखता है और खान पान का सम्बन्ध स्वास्थ्यरक्षण के नियमों के अन्तर्गत है; इन बातों पर शक्तिवादी उदासीन रहेंगे। मंदिरप्रवेश के प्रश्न का और समाज में इन पर अपमानजनक व्यवहार का प्रतिकार कानून द्वारा करना आवश्यक है। उन्नत तथा अनुन्नत श्रेणी के हिन्दू पारस्परिक सुख, दुःख में और आपदों में एक दूसरे का साथ देंगे, एक दूसरे के लिये लड़ेंगे और धर्मस्थान में दोनों का समान अधिकार होगा; शक्तिवाद के अनुसार हिन्दुओं की एकता यही है। शक्तिवादी खान पान और विवाह को एकता का सूत्र नहीं समझता। एक ही विज्ञान की कर्मनीति ग्रहण कर एक ही आदर्श के लिये लड़ना ही असली एकता है। एक ही कृष्टि, सभ्यता और धर्म के अधीन रहना एकता का दूसरा अंश है। विवाह तथा खान पान की एकता कोई एकता ही नहीं है। इन प्रश्नों को लेकर जो लड़ना चाहते हैं, वे लड़ें; शक्तिवादी उसमें भाग न लेंगे।

६९. **शक्तिवाद और देशीय राज्य**—शक्तिवाद राजतंत्र की प्रशंसा ही करता है; क्योंकि यह सहज ही में शक्तिस्तर के शासन में परिणत हो सकता है। परन्तु वर्तमान युग प्रजातांत्रिक युग है। प्रजा चाहती है वह कुछ कर्त्तृत्व करे। देशी राजागण यदि इसमें उनको उत्साहित करें तो उनकी अपनी ही शक्ति वृद्धि होगी। राजागण यदि अपने मंत्रिसभा में प्रजातन्त्र की स्थापना करें तो राजाओं की शक्ति तथा स्थिति विशेष शक्तिशाली होगी। वर्तमान समय में राजाओं का अस्तित्व साम्राज्यवाद के कृपा पर निर्भर करता है। यदि उनके पीछे प्रजा का समर्थन रहे तो वे अपनी नैतिक शक्ति वृद्धि कर सकेंगे।

७०. कांग्रेस की नीति को त्याग कर देशीय प्रजागण को चाहिये कि राजतंत्र मिश्रित प्रजातंत्र के लिये आन्दोलन करें। हिन्दूमहासभा तथा मुस्लिम लीग दोनों प्रतिष्ठानों ही से हमारा यह अनुरोध है कि वे देशीय प्रजाओं के मंगल के लिये तथा निज निज सम्प्रदाय की स्वार्थ तथा कृष्टि रक्षा करने के लिये देशीय प्रजाओं की चिन्ता शक्तिवाद विज्ञानानुसार नियमित करने की चेष्टा करें। देशीय राजाओं को भी चाहिये कि वे प्रजाओं में शक्तिवाद प्रचार करने की चेष्टा करें। इसके द्वारा राजा, प्रजा दोनों ही का उपकार होगा।

७१. शक्तिवाद और हिन्दू महासभा—हिंदू महासभा को साम्प्रदायिक कह कांग्रेस उसे जनसाधारण से दूर रखना चाहती है। हम हिंदू महासभा को शक्तिवाद ग्रहण करने के लिये अनुरोध करते हैं। शक्तिवाद कोई साम्प्रदायिक कर्मविज्ञान नहीं है। यह भारतीय कृष्टि तथा चिंता पर प्रतिष्ठित भारत का प्रकृत जातीयतावाद है। इसे ग्रहण करने से कोई सम्प्रदाय अन्य सम्प्रदाय के न्यायपूर्ण अधिकारों को नष्ट न कर अपने सम्प्रदाय की न्यायपूर्ण अधिकारों की रक्षा कर सकता है। अतएव, यदि कोई सम्प्रदाय चाहे तो इसे साम्प्रदायिक सीमा के भीतर भी ग्रहण कर सकता है। हिंदू महासभा को जनसाधारण के सामने तुच्छ करने के कारण कांग्रेस स्वयं हिन्दुओं के साम्प्रदायिक प्रतिष्ठान में परिणत हो गया है। हिंदू महासभा ने यह कहा है कि हिन्दू वही है जो भारत को अपना जन्मभूमि तथा पुण्यभूमि मानता है। परन्तु यदि कोई मुसलमान महासभा का सदस्य होना चाहे तो वह नहीं हो सकता। एक ही साथ उदारता तथा अनुदारता का यह विरुद्ध नियम शायद गान्धीवादियों को महासभा में प्रवेश करने में बाधा देने के लिये ही बनाया गया है। गांधीवादियों की दुर्बल चिंता जिससे महासभा को भी अन्तर्जातिक धोखेबाजों के अड्डे में परिणत न कर दे इसलिये महासभा का यह नियम उपयुक्त ही हुआ है। क्योंकि अन्तर्जातिक धोखेबाज लोग अपने को इतना कुलीन समझते हैं कि साम्प्रदायिक (?) प्रतिष्ठान में प्रवेश कर वे अपने कौलीन्य की मर्यादा कभी नष्ट न करेंगे यह स्वतःसिद्ध बात है। परन्तु महासभा के गठनतांत्रिक नियम में यदि शक्तिवाद की स्थापना की जाय तो महासभा की इस अनुदारता को सहज ही में मेट दिया जा सकता है। महासभा में जब नाना प्रकार के विरुद्ध आचारविचारसम्पन्न

बहुत से साम्प्रदायों को स्थान मिला है तो उसमें भारतीय मुसलमानों को भी स्थान मिल सकता था। यदि महासभा की वैसी इच्छा हो तो शक्तिवाद ग्रहण कर महासभा सब ओर ही से सामञ्जस्य कर सकता है। परन्तु महासभा इसे अभी करे ऐसा कोई विशेष आवश्यकता भी नहीं है। महासभा स्वतंत्र प्रतिष्ठान रह कर भी यदि शक्तिवाद ग्रहण करे तो हमारी जाति का कल्याण होगा।

७२. हिंदूमहासभा को साम्प्रदायिक प्रतिष्ठान नहीं कहा जा सकता। वास्तविक हिन्दूधर्म कोई साम्प्रदायिक विश्वासवाद नहीं है। हमारे देश में मुसलमान धर्म प्रचारित होने के पहले और पीछे जितने प्रकार मतवाद और धर्मों की उत्पत्ति हुई है उन सभी का स्थान इसमें है। हिंदूसमाज के समाजिक व्यवस्था के साथ धर्मविश्वास का कोई सम्बन्ध नहीं है। यह वृत्ति-विभाग और विवाहप्रथा के भेद पर अवस्थित एक विराट राष्ट्र के दायित्व की भित्ति पर प्रतिष्ठित धर्म है। हिंदू इस देश की सर्व प्रकार की कृष्टि और सभ्यता के उपादान को अपनाये हुये हैं। कांग्रेस ने विदेशी चिंता की भित्ति पर जातीयतावाद की प्रतिष्ठा कर हमारे जातीयतावाद की भित्ति को दुर्बल कर दिया है। कांग्रेस की एक बड़ी दुर्बलता यह है कि वह पाश्चात्य चिंता की भित्ति पर यहाँ समस्याओं की सृष्टि करती है और पाश्चात्य रीति पर ही उन समस्याओं का समाधान करना चाहती है। कांग्रेस ने भारत का एक बड़ा उपकार यह किया है कि उसने हमारी जातीय चिंता से पौरहित्यवाद के प्रभाव को निष्प्रभ कर दिया है। इसलिये चिंताशील मात्र ही उसकी प्रशंसा करेंगे। हिंदू महासभा का एक वैशिष्य यह है कि उसने आज तक कभी जातीय आंदोलन की विरोधिता नहीं किया है। यह सब समय ही साम्राज्यवाद का विरोधी रहा है; किंतु इनके पीछे कोई शक्तिशाली चिंताविज्ञान न रहने के कारण पग पग पर भूल करेंगे इसमें कोई संदेह नहीं। कांग्रेस ने जब ही आन्दोलन किया है तभी हिंसापंथियों ने भी उसमें योगदान किया है। इससे यही पता चलता है कि हिंसापंथियों के इस आन्दोलन में कांग्रेस का परोक्ष समर्थन था। किंतु कांग्रेस ने सब स्थानों में केवल अहिंसा के आदर्श की रक्षा करना छोड़ जाति के प्रति कोई शक्तिशाली सहानुभूति नहीं दिखाया है। हिंदुओं पर गुंडई, अनाचार, अत्याचार नारियों का अपमान सभी को ये प्रश्रय दे रहे हैं। आज बंगाल में हिंदू किस प्रकार

असहाय हो गये हैं यह प्रत्येक बंगाली अच्छी तरह अनुभव करता है। कांग्रेस बंगाल की इस असहाय अवस्था की जड़ में है। आज गांधीजी अहिंसा के विजय स्तंभ की स्थापना का आयोजन कर रहे हैं। यह क्या किसी जाति का विजय चिह्न है? विजयी जाति को उसके विजय के पुरस्कार स्वरूप इस प्रकार का कम्यूनल ऐवार्ड क्या कोई दे सकता है? यदि यह सचमुच विजय हो तो क्या विजित विजयी को इस प्रकार का शासन पद्धति भेंट चढ़ा सकते हैं? सीमाप्रान्त में हिन्दुओं के ऊपर जो अनाचार हो रहा है उस विषय में, वहाँ से हिन्दुओं को चले आने का निर्देश देना छोड़, यह विजयी वीर (गांधीजी) क्या—किसी प्रकार आत्मरक्षा की सलाह दे सके? वहाँ की कांग्रेस सरकार ने क्या किया है? विजय का यदि यही नमूना हो, फिर आत्मप्रवंचना किसे कहते हैं? कम्युनल ऐवार्ड क्या कभी प्रजातंत्र के अनुकूल हो सकता है? इसका तो गांधीवादियों ने कोई विरोध न किया किंतु फेडरेल ऐसेम्ब्ली में देशी राज्यों के प्रतिनिधि गण प्रजा द्वारा निर्वाचित सदस्य नहीं हैं इसलिये उसको बदलने के फिर इतनी लड़ाई को तैयारी क्यों? एक मेम्बर को एक सम्प्रदाय ने चुना, परन्तु दूसरे सम्प्रदाय को उसे चुनके का अधिकार ही न मिला। फिर वह प्रधान मंत्री के पद पर आसीन होता है। ऐसे मंत्री को क्या देश के सर्वसाधारण का मंत्री माना जा सकता है? यदि यह भी प्रजातंत्र हो तो पार्लियामेन्ट के मंत्रियों का हमारे देश की ओर से मंत्रित्व करने में क्या हानि थी? कांग्रेस की इस कपटता की समालोचना करने के लिये सब शब्द ही अपर्याप्त है। फजलुलहक यदि बंगाल के हिन्दुओं द्वारा निर्वाचित न होकर ही हिन्दुओं की ओर से मंत्रित्व कर सके तो मिस्टर चेम्बरलेन हिन्दुओं की ओर से मंतित्व क्यों न कर सकेंगे? जिन प्रदेशों में हिन्दू संख्या में अल्प हैं उन प्रदेशों के लिये हिन्दू महासभा का उत्थान आवश्यक है। हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि गांधीवादी लोग जातीय मुक्ति के पथ में विपद स्वरूप हुये हैं। हम कांग्रेस, महासभा, मुस्लिम लीग और सब प्रतिष्ठानों ही को शक्तिवाद ग्रहण करने के लिये अनुरोध करते हैं। हम सब गवर्नमेन्टों ही को दुर्बलस्तर की शासननीति तथा आसुरिक शासन नीति त्याग कर शक्तिवाद ग्रहण कर लोकप्रिय प्रतिष्ठानों में परिणत होने को कहते हैं। कांग्रेस यदि शक्तिशाली कर्मविज्ञान ग्रहण करती तो हिन्दू महासभा को राजनैतिक क्षेत्र में कभी उतरने की आवश्यकता ही न होती।

७३. हिन्दू महासभा के राजनीति से दूर रहने के कारण हिन्दुओं को विशेष हानि पहुँची है। वर्तमान भारत शासनपद्धति में जिस प्रकार से हिन्दुओं को ठगा गया है उसका प्रतिकार करने के लिये महासभा का कर्तव्य है कि शक्तिशाली आन्दोलन की नीव डालें। यदि कोई सम्प्रदाय भारतीय जातीयता की भित्ति त्याग कर कोई संख्यालघु सम्प्रदाय की सृष्टि कर पूर्ण स्वाधीनता की जड़ काटना चाहे तो हिन्दूसभा को चाहिये कि जिससे उनको अपनी संख्या से एक भी सीट अधिक न मिले उसके लिये तन, मन, धन से लग जाये तथा आखिर तक उस लक्ष्य से च्युत न हों। साम्प्रदायिक बटोवारा ही यदि इस देश की शासननीति का मूल सूत्र हुआ हो तो उसमें सम्प्रदायों को संख्यानुपात से आसन देने की व्यवस्था करनी होगी। हिंदू महासभा का कर्तव्य है कि दुर्बल चिंता पुष्ट कांग्रेस की बातों में न पड़ कर शक्तिशाली भित्ति पर कर्मक्षेत्र में उतर आयें। साम्राज्यवाद ने केवल मुस्लिम लीग को खड़ा करके ही छ कला की चिता द्वारा नियमित कांग्रेस को लूला बना दिया है। इस भावप्रवण, अदूरदर्शी प्रतिष्ठान में अब यह दम नहीं रह गया है कि यह साम्राज्यवादियों से किसी जमाने में लड़ सके। अब यह प्रतिष्ठान साम्राज्यवादियों से मित्रता कर चलने को बाध्य होगा। इनके मध्यस्थित वामपंथियों को ये ज़मीदार तथा देशी राज्यों के विरुद्ध लड़ाकर अपने साथ रखना चाहते हैं। इनके मतानुसार यही साम्राज्य-वादियों के विरुद्ध लड़ाई है। चिंताशील कांग्रेसकर्मियों से हमारा यह अनुरोध है कि वे शक्तिवाद विज्ञान को समझने की चेष्टा करें तथा पुरानी नीति त्याग कर इस विज्ञान के अनुसार संघर्ष की तैय्यारी करें। ये अत्यन्त भावप्रवण हो गये हैं। इनको चाहिये कि कुछ दिन चुपचाप रह कुछ समझने की चेष्टा करें। वर्तमान समय में भारत में जितने प्रकार के राजनैतिक प्रतिष्ठान हैं उनमें हिन्दूसभा ही शक्तिवाद ग्रहण करने को सब से अधिक उपयुक्त है; क्योंकि इसने कभी किसी सम्प्रदाय के न्यायपूर्ण अधिकारों में कमी करने की चेष्टा नहीं की।

७४. कांग्रेसपंथी जातीयतावादी हैं यह हम नहीं स्वीकार करते। साम्प्र-दायिक मुस्लिमलीग के डर के मारे उसने जातीयतावाद के सब प्रकार उपादानों को त्याग दिया है। मुस्लिम लीग साम्राज्यवादियों के इशारे से ऐसा नाच नाच रही है कि जातीय शक्ति तथा संस्कृति के किसी प्रकार उपादान को ग्रहण

करने की शक्ति अब कांग्रेस में नहीं है। कांग्रेस जातीयतावाद के लिये पाश्चात्य चिंता और नीति के अतिरिक्त ज्योंही किसी प्रकार की भी अपनी जातीय चिंता ग्रहण करने की ओर झुकती है त्योंही मुस्लिम लीग एक डंडा दिखा उसका सिर नीचा कर देती है। विजातीय उपादान द्वारा हिन्दुओं की चिंता को विजातीय बनाना ही कांग्रेस की वर्तमान जातीयतावाद की भित्ति है। जिस जाति में शक्तिवाद की भांति शक्तिशाली चिंता है वह जाति इस पाश्चात्यकरण की नीति को ग्रहण नहीं करेगा यह हिंदू महासभा के सिर उठाने से ही प्रमाणित हो जायगा। झूठमूठ कुछ आदर्शों के पीछे दौड़ कर कांग्रेस अशांति वृद्धि तथा जातीय शक्ति क्षीण कर रही है। कांग्रेस इस समय संग्राम की बोली सुना कर युवकों को तरह तरह से झाँसा दे रही है। कांग्रेस यदि समझती हो कि झाँसेबाजी के भीतर से जाति को स्वाधीन बनाने का पथ बनायेगी तो यह उसकी बड़ी भूल होगी। सब समय संग्राम द्वारा भी शक्तिवृद्धि नहीं होता है। संग्राम का एक समय होता है तथा उसका विज्ञान भी है। हम देशवासियों से यह कह देना चाहते हैं कि झाँसा देने का विज्ञान तथा शक्तिविज्ञान एक वस्तु नहीं है। केन्द्रीय शक्ति के साथ लड़ने ही से सब समय शक्ति वृद्धि नहीं होती।

बृटेन और भारत का सम्बन्ध तथा शक्तिवाद—

७६. बृटेन से भारत का बहुत दिनों से सम्बन्ध है। बृटेन के राजा भारत के सम्राट हैं। सम्राट से हमारा सम्बन्ध बहुत ही थोड़ा है। बृटिश मंत्रिसभा ही हमारे साथ सम्राट से सम्बन्ध रखनेवाली सब काम करती है। यह मंत्रिसभा सम्राट अपेक्षा ब्रिटेन के जन साधारण के निकट अधिक उत्तरदायी है। अर्थात् सम्राट हमारे साथ प्रत्यक्ष रूप से कोई सम्बन्ध ही नहीं रखते। वायसराय इस देश में उनके प्रतिनिधि हैं। वे सम्राट तथा मंत्रिसभा द्वारा निर्दिष्ट कानूनों की रक्षा करने का भार लेकर इस देश में आते हैं और उसे कर चल देते हैं। करीब दो सौ वर्ष हम ब्रिटेन के शासनाधीन रह कर स्वास्थ, शिक्षा, अन्न, वस्त्र, गृह, शिल्प तथा वाणिज्य आदि सभी क्षेत्रों में अत्यन्त हीन दशा को प्राप्त हुये हैं। सम्राट का कर्तव्य है कि प्रजा के इन सब दुःखों का जड़ काट प्रजाओं को सुखी करें। सन् १९३९ साल के भारतशासनविधान के अनुसार यहाँ मन्त्रिसभायें

बनाई गई हैं। इसलिये इन मन्त्रिसभाओं का कर्त्तव्य है कि भारत की इस दुर्दशा का प्रतिकार करने के लिये प्रस्ताव करें और वाइसराय यदि उसमें राज़ी न हों तो उसे सम्राट के पास पहुँचाने का रास्ता निकालें। ब्रिटेन के जनसाधारण के निकट उत्तरदायी मन्त्रिसभाओं ने भारत की भयंकर दुर्दशा की है। भारत इस मन्त्रिसभा के साथ सब प्रकार का सम्बन्ध छिन्न करना चाहता है। ब्रिटेन की मंत्रिसभा ब्रिटेनवासियों का प्रतिनिधि होने के कारण वह भारतशासन में ऐसी नीति का प्रयोग करती है जिसका परिणाम यह होता है कि भारत का सब प्रकार सुख सम्पद ब्रिटेन के धनी, गरीब, बनिया, मजदूर, महाजन, जमीदार, दवाईवाले, कारखानों के मालिक इत्यादि सब श्रेणियों की लोगों के परिपुष्टि के लिये लगाया जाता है और भारत के धनी, गरीब सभी शोषित होते हैं। उस देश के जमीदारों के लड़के ही साधारणतः यहाँ मोटे वेतन बड़े बड़े पदों पर नियुक्त होकर आते हैं। हमारे देश की सरकार की आमदनी का एक बड़ा हिस्सा इस देश में अंग्रेजी सैनिकों के पालने में व्यय होता है। ग्रेट ब्रिटेन के मिलवालों के स्वार्थ के लिये देशीय सब शिल्पों को नष्ट कर दिया गया है। अंग्रेजी औषधवालों को धनी बनाने के लिये हमारी देशीय चिकित्सापद्धति को कानूनन सरकार द्वारा असमर्थित चिकित्साओं में रखा गया है। हमारे देश के बेकार लोगों को तो काम मिलने का कोई बन्दोबस्त नहीं, परन्तु तिस पर उस देश के सैनिक तथा सिविलियनों के पालने का बोझा हमारे कन्धे है। व्यवसाय तथा वाणिज्य के सभो केन्द्र विदेशियों के करतलगत है। इस देश की दारिद्रय तथा बेकार समस्या के लिये इंगलैण्ड की मंत्री सभा द्वारा परिचालित शासननीति ही दायी है। इन सब अनीतियों का प्रतिवाद करने से भी कानूनन दण्ड मिलता है। इस प्रकार का बहुमुखी शोषण किसी विकाशवादी राजशक्ति की नीति नहीं हो सकती। ब्रिटेन और भारत के सम्बन्ध के जिस किसी अंश ही की आलोचना की जाय सभी अत्यंत नैराश्यजनक और विरक्तिकर हैं। इसका प्रतिकार होना आवश्यक है। जब तक ब्रिटिश मंत्रिसभा के साथ भारत का सब सम्बन्ध छिन्न नहीं होगा तब तक भारत की इस व्यापक दरिद्रता तथा बेकार समस्या का समाधान असम्भव है। भारत जिस नीति द्वारा शासित होता है उसे विकाश नीति नहीं कहा जा सकता। यह सम्पूर्ण आसुरिक नीति है। इसका शीघ्र प्रतिकार होना चाहिये।

कम्यूनल ऐवार्ड और शक्तिवाद—

७६. कम्यूनल ऐवार्ड क्या है यह जानना प्रत्येक शक्तिवादी के लिये आवश्यक है। केन्द्रीय शासननीति समझना और उसे शक्तिस्तर के आदर्श की ओर अग्रसर होने को बाध्य करने के साथ ही शक्तिवादी के कर्मलक्ष्य का मूल सम्बन्ध विद्यमान है। इसलिये 'गवर्नमेन्ट आफ़ इण्डिया ऐक्ट' न पढ़ने से शक्तिवादियों को कार्यक्षेत्र में असुविधा होगी। इस शासनपद्धति को ग्रहण कर इसमें किस किस स्थान पर किस प्रकार आघात (लड़ाई) देकर इसे किस प्रकार काम के उपयोगी बनाया जा सकता है इस सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक आलोचना होना आवश्यक था। यह भी कहना आवश्यक है कि यह कांग्रेस ही का कर्त्तव्य था। कांग्रेस ने वैसा नहीं किया है। कांग्रेस ने उसकी शक्ति के बारे में देश को तो कोई आभास ही नहीं दिया बल्कि हमेशा उसके विरुद्ध आचरण ही करती रही। कांग्रेस ने मुँह से एक बात कही है और कार्यतः अन्य प्रकार किया है। दुर्बलस्तर का चिन्ताविज्ञान ग्रहण करने के कारण कांग्रेस का ऐसा भूल होना स्वाभाविक ही है। गान्धीवाद की दुर्बलता यह है कि वह शक्तिविज्ञान समझने में बाधा देती है और कतिपय बोली के चक्कर में आदमियों को नचाते हैं। शासनपद्धति कितनी ही दुर्बल क्यों न हो शक्तिहीन गान्धीवाद के लिये उसे त्याग करने की अपेक्षा ग्रहण करना अधिक श्रेय है। यह प्रत्येक शक्तिवादी याद रखें। दुर्बल कर्मविज्ञान ग्रहण करने के कारण विगत बीस वर्ष से गांधीवादी कांग्रेस केवल भूल करती आ रही है। इसलिये शक्तिवाद का उत्थान अब अपरिहार्य है।

७७. गवर्नमेन्ट आफ़ इन्डिया ऐक्ट' दो भागों में विभक्त है। इसके एक अंश में प्रादेशिक स्वायत्तशासन (प्राविंशियल अटोनोमी) तथा दूसरे अंश में फेडरेशन है। फेडरेशन से देशीय राज्यों का सम्बन्ध है। प्रादेशिक स्वायत्त शासन में प्रादेशिक मंत्रियों की जितनी क्षमता है उससे देशीय राजाओं की शक्ति अधिक है। देशीय राजा लोग यदि शक्तिविज्ञान समझ सकें तो वे अपनी प्रजाशक्ति को अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिये उपभोग कर सकेंगे। देशीय राज्यों के प्रजा लोगों ने ब्रुटिश भारतीय कांग्रेस के साथ योगदान कर अत्यंत भूल की है। उनका कर्तव्य है कि शक्तिवाद समझें तथा अपने अपने राजाओं के साथ मिलजुल कर अपने शासन व्यवस्था की

उन्नति करें। कोई कोई देशीय राज्यों को प्रादेशिक मंत्रिसभाओं के अधीन करने के लिये आन्दोलन कर रहे हैं। देशीय राज्यों के प्रजाओं के लिये यह बात अत्यन्त हानिकारक होगी। यदि देशीय प्रजागण इस प्रकार आन्दोलन से सहानुभूति करें तो यह अत्यन्त विस्मयकर बात होगी। हम अत्यन्त दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि बहुत विषयों में देशीय राज्यों की प्रजा ब्रिटिश भारतीय प्रजा से सुखी हैं। वहाँ की प्रजा यदि चेष्टा करे तो वहाँ की शासन व्यवस्था ब्रिटिश भारतीय शासनव्यवस्था से उन्नत और सुख के अनुकूल होगी। कांग्रेस फेडरल व्यवस्थापक सभा में देशी राज्यों का वोट पाकर संख्यागरिष्ठ होना चाहती है। इसलिये सामन्ततंत्र (Feudalism) तोड़ वहाँ प्रजातंत्र की स्थापना द्वारा अपना स्वार्थ साधना चाहती है। देशीय राज्यों की प्रजा के प्रति सहानुभूति दिखाने का यही कारण है। देशी राज्यों की प्रजा से हमारा यह अनुरोध है कि वे कांग्रेसी तथा लिगी मंत्रिसभाओं की कार्यों का विचार कर सावधान हो जायँ। एक प्रदेश को शासन करने के लिये गांधीवाद सम्पूर्ण अनुपयुक्त कर्मविज्ञान है; वे यह समझने की चेष्टा करें। फिर बंगाल की मुसलिम प्रधान मंत्रिसभा की कुकीर्ति 'कलकत्ता म्युनिसिपल ऐक्ट' इत्यादि संख्यागरिष्ठ हिन्दुओं पर कानून द्वारा गुंडई प्रतिष्ठा के समकक्ष ही विवेचित होने के योग्य है। पाँच वर्ष के लिये निर्वाचित कोई भी मंत्री एक राजा के समकक्ष नहीं हो सकता। हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि भारत के लिये अब एक आसुरिक राजा का अस्तित्व स्वीकार करना बहुत ही कठिन है। राजा लोग जिससे दुर्बल चिंता ग्रहण कर दुर्बल न हों तथा दाम्भिक होकर आसुरिक न हो जायँ इसलिये प्रजा के हाथ में मंत्रिसभा का यथेष्ट काम सौंप देने की नीति प्रत्येक राजा को ग्रहण करना होगा। देशीय राजाओं को हम यही कह सकते हैं कि जो गान्धीवादीगण भारतशासन कानून का एक अक्षर परिवर्तन नहीं कर सके हैं वे राजाओं का एक बाल बाँका करने की शक्ति नहीं रखते। देशी राज्यों में राजतंत्र को तोड़ कर प्रजातंत्र की प्रतिष्ठा द्वारा प्रजा के वोट से फेडरेशन में कांग्रेस संख्यागरिष्ठ होगी यह भी ब्रिटिश राज में असम्भव है। कांग्रेस देशी राज्यों की प्रजा को उभाड़ कर फेडरेल व्यवस्थापक सभा में संख्यालपदल में परिणत होने का पथ बना रही है। हिन्दुओं के वोट के जोर से प्रादेशिक मंत्रिसभा ग्रहण कर कांग्रेस ने हिन्दुओं पर अधिकार तथा विश्वासघात

किया है। इधर राजाओं के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये प्रजाओं को उभाड़ने जाकर कांग्रेस ने उनकी सहानुभूति भी खो दी है। इसलिये फेडरेशन में कांग्रेस जो संख्यागरिष्ट दल में हो सकेगी ऐसी आशा नहीं की जा सकती।

७८. भारत शासनविधान के दोनों भागों हो में कांग्रेस को ठगाने के लिये हिन्दुओं को ठगाया गया है। हिन्दुओं ने भी गान्धीवादी कांग्रेस के झाँसे में पड़ अपने अधिकारों का संकोच मान ही लिया है। हिन्दुओं के इस अधिकार संकोचन के प्रतिकार करने की चेष्टा जिससे रुद्ध हो इसलिये कांग्रेस ने पहले ही से संख्यालघु सम्प्रदायों की ओर से वकालत करने के लिये 'संख्यालघु सम्प्रदायों की मांगों की रक्षा करने का दायित्व' ग्रहण किया है। हिन्दू गांधीवादी जातीयतावाद के धोखे में पड़ किस प्रकार भुगत चुके हैं वह भारत शासनविधान बनने के पहले का इतिहास पर्यालोचना करने से ही पता चलेगा। हम कांग्रेस को क्षमा कर सकते हैं क्योंकि वह एकदल शक्तिहीन भाववादियों का अड्डा था, किन्तु महासभा को क्षमा नहीं कर सकते; क्योंकि उसके द्वारा भारत के बृहत्तम सम्प्रदाय को हानि पहुँची है और इसी कारण ही भारत के जातीयतावाद को भी हानि पहुँची है। केवल हिन्दुओं के संख्यानुसार ही हिन्दू न ठगे जाने से ही भारतीय जातीयतावाद शक्तिशाली रहती है। कांग्रेस यदि इस ओर ध्यान दे तो उसके गान्धीवाद को भी धक्का पहुँचेगा। वह सब छोड़ सकती है परन्तु गांधीवाद त्याग करना उसके लिये असम्भव है। इसलिये वे अब इन सब व्यवस्थापक सभाओं के आसनों के लिये न लड़ कर किसान और मजदूरों के पीछे पड़ गये हैं। उसमें भी देखा गया कि मुस्लिम लीग के सामने उनकी कुछ न चली। परन्तु, इससे भी वे निराश नहीं हुये हैं; क्योंकि इस प्रकार उन्हें जातीयतावाद के प्रधान समर्थक हिन्दुओं को दो भागों में बाँट देने का उपाय सूझ गया है! इस बीच में गाँधीबाबा और उनके चेले बहुत बार मुस्लिम लीग के गुरुदेव मि० जिन्ना के पैरों तले पड़ आये हैं; परन्तु गुरुदेव शायद प्रसन्न नहीं हुये हैं। वह प्रसन्न कभी न होंगे यह शक्तिवादी खूब जानते हैं। दक्षिण और बामपन्थी कांग्रेसी आगे चल बहुत कुछ समझेंगे। शक्तिवादी लोग अभी उन दोनों को छोड़ कर ही चलेंगे। शक्तिवादी जान रखें कि भारत की मुक्ति के लिये संख्यानुसार दी हुई उन हिन्दू सीटों को

बढ़ाने की विशेष आवश्यकता है। या तो साम्प्रदायिक बँटवारा समन्वित शासनविधान बदल लेना पड़ेगा अथवा संख्यानुसार प्रत्येक सम्प्रदाय को आसन देने की नीति को मानकर इसका संशोधन करना होगा। जो भारत की स्वाधीनता चाहते हैं उनके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है; क्योंकि केवल आदर्शवाद की बोलियाँ सुना कर जातीयता विरोधियों को जातीयतावादी नहीं बनाया जा सकता है। फिर कांग्रेस को यह भी याद रहे कि हिन्दुओं के प्रति विश्वासघात कर हिन्दुओं के वोट भी उसे अधिक दिन न मिलेंगे। केन्द्रीय शासन नीति की अन्याय और अनीति के विरुद्ध लड़ने के विज्ञान द्वारा ही एक जाति को शक्तिशाली बनाया जा सकता है। जिस देश के जातीयतावाद को शक्तिहीन बनाने के लिये इतनी बड़ी एक अनीति उस देश के शासनविधान में है उस जाति को शक्तिशाली बनाने के लिये इसे एक अलौकिक वरदान स्वरूप ही जानना चाहिये। महासभा के कर्म्मीयों को इस ओर ध्यान देकर जोर आन्दोलन आरम्भ करना चाहिये और गांधीवाद को भारत से मिटा कर शक्तिशाली जातीयतावाद की स्थापना करने में सहायता करना चाहिये। महासभा शक्तिशाली नीति ग्रहण करने से कांग्रेस अपनी नीति परिवर्तन करने को बाध्य होगी अथवा उसकी कोई स्वतंत्र सत्ता ही न रहेगी। महासभा किस प्रकार कहाँ तक अग्रसर होगी वह हम नहीं जानते। इसलिये शक्तिवादी अकारण किसी पर विश्वास स्थापन करने की नीति त्याग कर अपने स्वाधीन मतवाद पर अग्रसर होंगे। भारत शासन विधान में अभ्यंतरीय शासन में बहुत कुछ अधिकार देशवासियों को मिल गया है। उस शासनपद्धति को फेडरेशन की एक सीढ़ी कही जा सकती है। गांधीवादी इस प्रकार अदूरदर्शी राजनैतिक ज्ञान का परिचय दे रहे हैं कि भारत को भारत शासनविधान के फेडरेशन का अंश प्राप्त करने में भी बहुत समय लगेगा। कांग्रेस यदि शक्तिवाद न ले तो यह लोकप्रिय प्रतिष्ठान अभ्यंतरीन शासन की व्यवस्था में लोगों के सामने अत्यन्त अयोग्य प्रमाणित होगा तथा पूर्ण फेडरेशन वसूल करने में बहुत समय नष्ट करेगा।

७९. इस देश में इस समय नियमतांत्रिकवादी तथा पूर्ण स्वाधीनता वादी इस प्रकार के लक्ष्य सम्पन्न दो मतवाद हैं। नियमतांत्रिकता का लक्ष्य डमिनियन स्टेटस है। डमिनियन स्टेटस में सम्राट के अधीन अभ्यन्तरीन

शासन व्यवस्था, परराष्ट्रीय विभाग तथा सैन्य विभाग पर पूर्ण अधिकार रहता है। सम्राट की अधीनता मानना छोड़ 'डुमिनियन स्टेट्स' तथा 'पूर्ण स्वाधीनता' में कोई विशेष भेद नहीं रहता है। इसलिये डोमिनियन स्टेट्स तथा पूर्ण स्वाधीनता शक्तिवाद की दृष्टि में एक ही वस्तु हैं। शक्तिवाद राजतन्त्र स्वीकार करता है किन्तु केन्द्रीय शासन में दुर्बल नीति तथा आसुरिक नीति को नहीं मानता।

८०. जिनका लक्ष्य पूर्ण स्वाधीनता है उनसे हमारा यह अनुरोध है कि वे इसी क्षण अहिंसावाद त्याग दें। वे यदि एक दिन भी इस अहिंसावाद के सपक्ष वकालत करें तो यह अहिंसा उनकी आशा तथा अकांक्षा के शत्रु रूप से ही पुष्ट होती रहेगी। केवल कृषक तथा मजदूर विप्लव से भी कुछ न होगा; क्योंकि इस प्रकार आन्दोलन या संग्राम आरम्भ करने से एक और अधिक शक्तिशाली दल विरुद्ध पक्ष में भिड़ जायगी। इसलिये पूर्ण स्वाधीनतावादियों को समाजतान्त्रिक आदर्श त्याग देना पड़ेगा। एक पूर्णांग समाज जिस किसी विप्लवी शक्ति के पीछे रहना चाहिये। इस प्रकार का समाज वर्तमान भारत में केवल हिन्दू ही हो सकते हैं। इसलिये गांधीवादियों के साथ एकमत हो हिन्दुओं का स्वार्थ तथा शक्ति नष्ट करने के लिये जिन्होंने कमर कसा है उन्हें यह चेष्टा सर्वथा त्यागनी पड़ेगी। हिन्दुओं का स्वार्थ बलिदान दे मुसलमानों के मनोरञ्जन करने की नीति द्वारा भी मुसलमान जातीयता के समर्थक न बनेंगे। विश्वासघात के विनिमय केवल पूर्ण स्वराज्य के झाँसे द्वारा हिन्दू भी अब स्वपक्ष में न रहेंगे। शीघ्र ही सबकी आँखें खुल जायँगी। पूर्ण स्वाधीनतावादी चाहे सब हिन्दू हों या मुसलमान हों या अन्य किसी देश या समाज के मनुष्य हों यह हम नहीं जानना चाहते; परन्तु यह उन्हें स्मरण रहे कि उनके पीछे सम्पूर्ण हिन्दू समाज का समर्थन रहना चाहिये। इस पथ के पथिक हिन्दू समाज के प्रतिकूल होकर नहीं चल सकते। इनके पीछे व्यवस्थापक सभाओं का समर्थन रहना अत्यन्त अपरिहार्य है। गान्धीवादीगण जब तक व्यवस्थापक सभाओं के कर्णधार रहेंगे तब तक ऐसा नहीं हो सकता। इसलिये पहले इन्हें देश की चिन्ता से गान्धीवादियों के प्रभाव को मिटाने के काम में लगना पड़ेगा। जिस शक्ति के विरुद्ध विप्लव मचाना हो उस शक्ति के किसी शत्रु का अस्त्रबल यदि विप्लवीओं के सपक्ष रहे तो अति उत्तम है। फिर यदि

सैन्य विभाग विप्लवी न हो तो कोई भी विप्लव सफल नहीं होता। इसलिये इन सब ओर चिन्ता तथा कर्मलक्ष्य नियुक्त न कर पूर्णस्वाधीनतावादी गण यदि अकारण नियमतांत्रिकों को दोष देते रहें तो कोई बुद्धिमानी न होगी। इस प्रकार सब प्रकार से शक्तिलाभ करने का सुयोग पाने पर भी जब तक बृटिश विपद के सम्मुखीन न हो तब तक इन्हें अपेक्षा करनी होगी। इनकी कर्मधारा की एक पहलू और है। वह यह कि विप्लव के समय समाज में गुण्डों की उपद्रव दमन करने के लिये प्रस्तुत रहना। आज भारत के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक गुण्डों ने जो उपद्रव आरम्भ किया है उसके बिरुद्ध इस पथ के पथिकों की कर्मधारा का विशेष संयोग रहना प्रयोजन है। इन्हें संत्रासबाद (टेरारिजम्) छोड़ना होगा तथा प्रकाश्य ही में अपनी कर्मधारा आलोचना कर उनका कर्मविज्ञान ही अधिक शक्तिशाली है यह प्रमाण करना होगा। यह पथ वर्तमान समय संभव है या असंभव इसे पूर्ण स्वाधीनतावादीगण ही विचार कर स्थिर करेंगे।

८१. अहिंसात्मक विद्रोह कभी पूर्णस्वाधीनता पाने का विद्रोह नहीं हो सकता। यह पूर्णतया नियमतान्त्रिक विद्रोह है उसको पूर्णस्वाधीनता प्राप्त करने का उपाय समझने के कारण ही भारत की स्वाधीनता के प्रधान अवलम्बन—हिन्दूलोग भारत शासन विधान में नाना प्रकार से शक्तिहीन हो गए हैं। बृटिश सरकार ने बहुत सालों तक इस अहिंस विद्रोह की शक्ति परीक्षा कर साम्प्रदायिक निर्णय दे इस आन्दोलन की अग्रगति को हमेशा के लिए रुद्ध कर दिया है। कांग्रेस हिन्दुओं का स्वार्थ बेचकर मुस्लिम लीग की गति को कांग्रेसमुखी करने में सफल नहीं हो सकी है। यदि हो पाती तो भारतशासनविधान गान्धीवाद द्वारा ही नया रूप धारण करती। गान्धीवादी कांग्रेस के लिए अब नियम तांत्रिकता या विद्रोह कोई भी रास्ता खुला नहीं है। फिर भी इसके पीछे जो समय नष्ट करना चाहे उनके कार्य में शक्तिवादी सहायक न होंगे। वे भी एक दिन समझेंगे परन्तु बहुत हानि पहुँचाने के बाद।

८१. नियमतांत्रिक उपाय से किस प्रकार काम लेना पड़ेगा अब उसकी संक्षिप्त आलोचना होगी।

(क) शक्तिवाद ग्रहण करना होगा। चूंकि समय पर प्रयोग करने से सत्याग्रह द्वारा भी कुछ फल प्राप्त हो सकता है अतएव शक्तिवादियों

के लिए बहुत से प्रश्नों में यह भी एक प्रयोजनीय प्रश्न होगा।

(ख) हिन्दू समाज का समर्थन पूर्णतया पाने के लिए हिन्दुओं की स्वार्थरक्षा तथा भारतीय संस्कृति की रक्षा करने की नीति को मान लेना पड़ेगा। एवं व्यवस्थापक सभाओं में संख्यानुपात इन्हें जितनी सीटें मिलनी चाहिएँ उतना उद्धार करने के लिये सम्पूर्ण शक्ति प्रयोग करना पड़ेगा। व्यवस्थापक सभा में प्रत्येक सम्प्रदाय के न्यायपूर्ण अधिकारों की रक्षा करना शक्तिवादी की कर्मनीति का अपरिहार्य अंश है।

(ग) श्रेणी संघर्षवाद त्याग कर ग़रीबों की अवस्था की उन्नति तथा बेकारों के लिये कर्म की व्यवस्था करने का आदर्श ग्रहण करना पड़ेगा।

(घ) देशीय राजाओं के 'वोट' तथा 'समर्थन' जिससे जातीयता के अनुकूल हों इसलिये उनके विरुद्ध प्रजा आन्दोलन करने की नीति त्यागनी पड़ेगी तथा उनके राज्य में शासन नीति की उन्नति के लिये राजा तथा प्रजा में शक्तिवाद प्रचार कर राजा तथा प्रजा मिश्रित शक्तिवादी शासन नीति की स्थापना करने में सहायता करनी होगी।

(ङ) सब संख्यालघिष्ठ सम्प्रदायों को बिना कोई शर्त शक्तिवाद के अनुकूल आने के लिये कहा जायगा। जो न आना चाहें उन्हें संख्यानुसार उनकी न्यायपूर्ण प्राप्य अधिकार देने की नीति मान लेना पड़ेगा तथा उन्हें संस्कृति सम्बन्धीय स्वाधीनता भी दी जायगी। कोई सम्प्रदाय यदि संख्यानुसार अपने न्यायपूर्ण प्राप्य से अधिक पाने के लिए लड़ें तो उसे आसुरीक नीति मानना होगा।

(च) सम्राट की आधीनता स्वीकार करनी होगी। और सम्राट के अधीन भारतीय मन्त्री सभा को बृटिश मन्त्री सभा के समकक्ष बनाने का लक्ष्य रखना होगा।

(छ) बृटेन भारत के उपरोक्त लक्ष में जब तक सहमत न होगा तब तक नियमतांत्रिक विरोधिता चलानी पड़ेगी। साथ साथ शक्ति बढ़ानी पड़ेगी।

(ज) नियमतांत्रिकों को हिन्दुस्तानी भाषा चलाने की चेष्टा त्यागनी पड़ेगी। फेडरल व्यवस्थापक सभा में अंग्रेजी भाषा ही (कानूनन) व्यवहार किया जा सकता है। उसी को अभी व्यवहार करना होगा। हिन्दुस्तानी

भाषा पढ़ न तो उर्दू साहित्य ही समझ पड़ती है न किसी प्रादेशिक भाषा की आलोचना ही की जा सकती है ! इसे न हिन्दी भाषा भाषी समझते हैं और न उर्दू बोलने वाले ही। इसके द्वारा देश के लोगों को भूत, वर्तमान, भाविष्यतहीन अद्भुत प्रकार से शिक्षा देने की चेष्टा कोई काम न आयेगी। पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने पर केन्द्रीय व्यवस्थापक सभा में अंग्रेजी चलाने की आवश्यकता न रहने पर किसी शक्तिशाली प्रादेशिक भाषा चलाने की आवश्यकता हो सकती है।

८२. शक्तिवाद के आश्रय में नियमतान्त्रिक तथा पूर्ण स्वराज्य का आदर्श दोनों ही ग्रहण किया जा सकता है। शक्तिवाद के आश्रय में नियमतांत्रिकता इतना शक्तिशाली अस्त्र है कि उसका व्यवहार समझ आने पर देश में एक नवीन जागरण तथा शक्ति आयेगी।

८३. भारत शासनविधान में बहुत से संरक्षित विभाग हैं। नियमतांत्रिकगण उन विभागों पर लोलुप दृष्टि डालेंगे (उन विभागों पर कब्जा करने के लिये कोशिश करेंगे)। संरक्षित अंश में सैन्य विभाग, परराष्ट्र विभाग, ब्रिटेन का वाणिज्यस्वार्थ तथा रेलवे इत्यादि हैं। सैन्य विभाग को संपूर्ण रूप से भारतीय करण करना, परराष्ट्र विभाग की भारत के स्वार्थ विरुद्ध कारवाई को रोकना, बृटेन के वाणिज्य स्वार्थ के विनिमय भारत के वाणिज्य स्वार्थ को उन्नत करने की चेष्टा करना, रेलवे का माल भारत ही में खरीदने की चेष्टा करना, रेल गाड़ियों में अतिरिक्त यात्रियों को डिब्बे में ठूँस देने के नियम को एकदम रद्द कर देने की चेष्टा करना, इस भांति विभिन्न विषयों पर प्रस्ताव पास करा कर उनको कार्य में परिणत करने के लिए वाध्य करना होगा। गवर्नमेन्ट जनमत अग्राह्य करने से जनसाधारण को सरकार विरोधी देशव्यापी आन्दोलन करना होगा। नियमतांत्रिकगण एक ही दिन में पूर्णस्वाधीनता प्राप्त करने का दावा कर गड़बड़ न करेंगे। इससे शक्तिहीन होने की संभावना है। इधर मुस्लिम लीग की ओर से भारत को भिन्न भिन्न भागों में विभक्त कर भारत शासन के लिए नित्य नई परिकल्पताएँ बनाई जा रही हैं। इन परिकल्पनाओं का एक मजेदार वैशिष्ट यह है कि इनमें संरक्षित विभाग पर अधिकार वृद्धि करने की कोई बात ही नहीं रहती परन्तु हस्तान्तरीत विभागों को किस प्रकार साम्प्रदायिक मुस्लिम स्वार्थ की पुष्टि के लिए लगाया जाय उस ओर विशेष चेष्टा रहती

है। इन सब परिकल्पनाओं को कोई जैसे हास्यास्पद कह न उड़ा दें। किसी समय इन सब परिकल्पनाओं की छाया काम आवेगी। इसलिये नियमतांत्रिक गण इन सब परिकल्पनाओं का दोष दिखा कर इसका प्रतिवाद करेंगे। भारत शासन विधि नियमतांत्रिकगण अवश्य ग्रहण करेंगे। इसकी पक्षपात मूलक अंशों का संशोधन पीछे आरम्भ करेंगे। इसको उलटने पलटने की स्कीमों को हमेशा समालोचना के साथ वर्जन करेंगे। अहिंसावादी कभी नियमतांत्रिकता की सीमा के बाहर नहीं जा सकते। ये चाहे दक्षिण या वामपन्थी जो ही क्यों न हों, अहिंसावादी नियमतांत्रिक हैं इस बात को स्वीकार करना ही पड़ेगा। अहिंसावादी होकर जो पूर्णस्वाधीनता की बोली बोलते हैं वे या तो अपने कर्मविज्ञान की शक्ति नहीं जानते अथवा वे झूठे और धोखेबाज हैं। शक्तिवादी न ऐसे नेताओं की प्रशंसा करेंगे और न इनका अनुसरण ही करेंगे। शक्तिवादी की दृष्टि में ऐसे नेता के चरित्र का कोई अंश भी प्रशंसनीय नहीं है। जिनके कर्मनीति में हिंसा या अहिंसा का भंडईपन नहीं है अर्थात् जो शक्तिवादी हैं वे नियमतान्त्रिक और पूर्ण स्वराजवादी दोनों ही हो सकते हैं।

४. कांग्रेस की अदूरदर्शी लड़ाइयों के सुयोग से लाभ उठा कर मुस्लिम लीग ने भारत शासनविधान में एक शक्तिशाली अंश प्राप्त कर लिया है। यह अब पूर्णतः एक जातीयताविरोधी शक्ति में परिणत हुआ है। भारत शासनविधान में संख्यालघिष्टों की स्वार्थरक्षा करने का भार गवर्नरों के हाथ में संरक्षित रखने के बाद भी व्यवस्थापक सभाओं में संख्यालघु सम्प्रदायों को उनकी संख्यातिरिक्त आसन देने की व्यवस्था की कोई प्रयोजन ही नहीं रहता है। यह उन्नततर सभ्यता पर प्रतिष्ठित हिन्दुओं को ठगाने के लिये केवल एक नीच चालमात्र है। हिन्दुओं के लिये भी यह अत्यन्त अपमानकर विधान है। मुस्लिम लीग मौका ढूँढ़ रही है कि किस तरह गांधीवादी कांग्रेस को फिर बृटिश सरकार से लड़ाया जाय और उस मौके में भारत की जातीय शक्ति को दुर्बल कर अपनी साम्प्रदायिक शक्ति वृद्धि करे। कांग्रेस जिस विज्ञान पर लड़ने की बात सोच रही है तथा जिस विज्ञान पर लड़ कर पहले भी हानि उठाया है उस प्रकार लड़ने का फल यही होगा कि एक दल जातीयतावादियों को महासभा का आश्रय लेकर उसे प्राप्त करने के लिये फिर एक बार लड़ना पड़ेगा। कांग्रेस जातीयतावाद के

सामने अकारण कुछ समस्याओं की सृष्टि कर रही है। कांग्रेस का कर्तव्य है कि इस नारीजनोचित्त गांधीवाद विज्ञान की शक्ति के सम्बन्ध में ज्ञानप्राप्त करने के लिये शक्तिवाद आलोचना करे और इस प्रकार की अभिमान की लड़ाई त्याग दे।

८५. संक्षेप में हमने कम्युनल ऐवार्ड की आलोचना की। पाठकगण से यही हमारा शेप निवेदन है कि चाहे तुम नियमतांत्रिक हो या पूर्ण स्वराजवादी हो यदि तुम अपने देश के हितार्थं कुछ करना चाहते हो तो शक्तिवाद विज्ञान ग्रहण कर करना था एक विराट जाति की भाग्य को लेकर कन्दुकवत् क्रीड़ा से दूर रहना। यह जनसाधारण के राज्य का युग है। इस युग में चाहे तुम वृक्षतलवासी भिखारी हो, या वनवासी योगी हो, अथवा अर्थहीन कंगाल हो, या वित्तशाली महाजन हो; जमीदार हो या राजा, कोई भी पहले की तरह निश्चिन्त होकर जमीदारी या राज्य भोग नहीं कर सकोगे। सभी को कर्मक्षेत्र में उतरना होगा, सोचना होगा तथा कर्म करना होगा। सभी को पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन में भाग लेना पड़ेगा। इस शासन में तुम कुछ कर सको या न सको, तुम्हें शक्तिविज्ञान समझना ही पड़ेगा। सामान्य सुविधा का सुयोग लेने के लिए जो भारतीय संख्यालघिष्ठ सम्प्रदाय का मलिन वेश धारण कर विदेशियों की कृपा के कंगाल बने हैं वे उस मलिन वेश को त्याग करें तथा शक्तिवाद के आश्रय में जातीयता का अंश ग्रहण कर गौरव अर्जन करें। यदि वैसा न करो तो तुम शक्तिहीन संख्यालघिष्टों का स्थान ग्रहण करने को बाध्य होगे। तुम्हारी दीनता से शक्तिवाद की दीनता न होगी। तुम नियमतान्त्रिक या पूर्ण स्वराजवादी चाहे कुछ भी क्यों न हो नियमतन्त्र का ढाँचा ग्रहण करना तुम्हारे लिये अपरिहार्य है। इसे यदि तुम शक्तिविज्ञान के अनुसार ग्रहण कर सको तो यह तुम्हारे लक्ष्य के काम देगा नहीं तो यह तुम्हारे घोर शत्रु का काम करेगा।

संक्षेप में शक्तिवाद का कर्मलक्ष्य और कर्म के विभिन्न दिक्—

८६. अपनी मातृभूमि को पूर्ण स्वाधीन बनाना होगा। इस लक्ष्य पर पहुँचने के लिये जिस प्रकार शक्ति अर्जन करना आवश्यक हो शक्तिशाली चिंता के स्वर में प्रतिष्ठित होकर उसे अर्जन करना पड़ेगा। इस लक्ष्य के पथ को सहज बनाने के लिये डुमिनियन स्टेटस इस समय के लिये लक्ष्य बनाना पड़ेगा एवं यथाशक्ति ब्रिटेन के अनुकूल रह कर प्रस्तुत होना पड़ेगा। भारत के गौरव

के युग में राजर्षियों की चिन्ता में शक्तिवाद को स्थान मिला था, परन्तु जातीयता की भित्ति पर समष्टि-समाज में इस चिन्ता को प्रतिष्ठित करने की चेष्टा न करने के कारण ही समाज में इस शक्तिशाली चिन्ता को प्रतिष्ठा स्थायी नहीं हुई। समष्टिसमाज में यह शक्तिशाली चिन्ता यदि प्रतिष्ठित होती तो भारत पर पौरहित्यवाद कभी अपना प्रभाव जमा ही न पाती। फलतः इस पृथ्वी तथा भारत पर अनेक अत्याचार तथा अनाचार की ताण्डव लीला होती चली जा रही है। भारत में उन्नत विज्ञान की भित्ति पर अनेक यन्त्रों का भी आविष्कार हुआ था; परन्तु समष्टि जीवन में उनकी प्रतिष्ठा न होने के कारण वे सब फिर लोप हो गये हैं। इन सब परिणतियों पर विचार कर शक्तिवादी सावधान होंगे तथा समष्टिजीवन में इसे प्रतिष्ठित करने के लिये प्रत्येक उपाय का अवलम्बन करेंगे। पौरहित्यवाद के प्रभाव में पड़कर भारत ने आर्य चिन्ता का सूत्र खो दिया था। इसके फलस्वरूप लूटमार का आदर्श लेकर भारत के पश्चिम देशस्थित मुसलमानों ने भारत को आक्रमण करने पर भारत का पतन हुआ। कई शताब्दियों तक भारत में लूटमार तथा गुण्डईपन का राज चलता रहा। आखिर में, इस अनाचार से मुक्ति पाने की आशा में भारत ने पाश्चात्य शोषणवाद को इस देश में प्रतिष्ठित होने का सुयोग दिया। वर्तमान समय में भारत अब इन दो अनीतियों के सम्मुखीन हुआ है। ये दो अनीति अब एक दूसरे से मिल गये हैं। एकमात्र शक्तिवादी भारत ही इस लूटमार तथा शोषणसभ्यता का मूलोच्छेद कर सकता है। इस पथ में गान्धीवाद तथा समाजतन्त्रवाद प्रधान बाधायें होने पर भी चिन्ता का कोई कारण नहीं है, लूटमार करने वाले ही समाज की आँख खोलने में सहायता करेंगे।

८७. शक्तिवादी दुर्बल कर्मविज्ञान (५ तथा ६ कला के) अत्यन्त घृणापूर्वक त्याग करेगा। आसुरिक कर्मविज्ञान तथा अपुष्ट कला के कर्मविज्ञान से आत्मरक्षा करने का शक्तिशाली उपाय अवलम्बन करेगा। आसुरिक कर्मविज्ञान तथा दुर्बल कर्मविज्ञान को एक ही चीज जानना।

८८. एक देश के अधीन यथेष्ट साम्राज्य न रहने से किसी देश में ही धनिकों का शासन (शोषणवाद) अधिक दिन नहीं चल सकता। फिर लूट, मार तथा गुंडईपन पर भी कोई शासनतंत्र स्थायी नहीं हो सकता। शक्तिवादी शासननीति इन दोनों का घोर विरोधी है। यह जानते हुए भी

एक दल अल्प तथा मन्दबुद्धि सम्पन्न युवक इस देश में पाये जायेंगे जो शक्तिवाद को धनिकों के शासन का बाहक कह प्रचार करने की चेष्टा करेंगे। कर्मनीति की इस स्वाभाविक परिणति के विज्ञान को न जानने वालों को जिससे समाज शीघ्र ही पहचान सके शक्तिवादी वैसी व्यवस्था कर नीरव रहेंगे।

८९. पौरहित्यवाद का आश्रय त्याग समग्र आर्ष चिन्ता तथा भारतीय महापुरुषों को निजी बना लेंगे। भारत से गुंडईपन का मूलोच्छेद करने के लिये समाज तथा शासन के कानूनों को विशेष शक्तिशाली बनायेंगे। ऐसी स्थिति में प्रतिष्ठित होने के बाद देखेंगे कि जिस किसी अभारतीय सभ्यता ही को भारत ने अपने में विलीन कर लिया है। वर्तमान समय अनेक लोग मुसलिम समस्या पर चिन्तित हो रहे हैं। हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि लूटतराज को ध्वंस करने पर केवल नमाज पढ़ तथा मसजिद मरम्मत कर आर्षचिन्ता के सामने यह सभ्यता अधिक दिन टिकने की शक्ति नहीं रखता। पौरहित्यवाद ने ही इस दार्शनिक भित्तिहीन मतवाद का भारत में स्थान बना दिया है। विधर्मी तथा विदेशी राजशक्ति ने इस देश में राज्य करने के लिये इनमें गुंडईपन का प्रश्रय दे इन्हें इतने दिनों तक जिला रखा है, नहीं तो बहुत दिन पहले ही भारतीय सभ्यता में विलीन हो गया होता। वर्तमान भारत शासनविधान में गान्धीवादी तथा समाजतान्त्रिकों की अदूरदर्शिता के कारण यदि कोई परिवर्तन न हो तो शक्तिवाद उसी के जरिये इतना शक्ति प्राप्त करेगा कि भारत की सामाजिक तथा राजनैतिक मुक्ति का पथ सुगम हो जायगा।

९०. शक्तिवाद को चिन्ताजगत् की लड़ाई जानना। चिन्ताजगत की इस शक्तिशाली शक्ति के साथ जड़ शक्ति का मिलन होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि देश में शोषणवाद, गुंडईपन तथा नारीहरण का अस्तित्व रहे तथा पौरहित्यवाद के पीड़न का प्रभाव रहे तो शक्तिवाद इस देश में सहज ही में अपना स्थान बना लेगा।

९१. जाति तथा वर्ण का कोई विचार न कर सब से अधिक मेधावी, चरित्रवान् तथा स्वास्थवान् स्वदेशवासी को सरकारी पद में ग्रहण करने की नीति भिन्न अन्य कोई साम्प्रदायिक विभाग पर सरकारी पदों को बाँटने की नीति की अत्यन्त तीव्र विरोधिता करना होगा। राजपुरुष का कार्य अयोग्य

व्यक्ति द्वारा सुसम्पन्न नहीं हो सकता। किसी सम्प्रदाय को इस प्रकार का तनिक प्रश्रय देना भी शक्तिवादी समर्थन नहीं करेगा। इसके द्वारा साम्प्रदायिक झगड़ा को अनेक पथों में बढ़ने का सुयोग मिलेगा; अथवा देश की शासन-शक्ति अयोग्य लोगों के हाथ में चली जायगी। गान्धीवाद के फलस्वरूप पैक्टवादीयों ने इन विषयों में जो आग में ईंधन दिया है उसके द्वारा लूटमार तथा शोषणावाद को इस देश में अधिक दिन तक स्थायी रहने की सुविधा मिली है।

१२. शक्तिवाद में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई वा उच्च नीच का कोई प्रश्न ही नहीं है। इसमें है मनुष्य के राष्ट्रीय तथा सामाजिक जीवन में आसुरिकता, दुर्बलता तथा पूर्णशक्तिमत्ता नामक त्रिविध चिन्ताधारा तथा कर्मविज्ञान। मनुष्य की राष्ट्रीय तथा सामाजिक जीवन की दुर्बलता दूर होने के उपरान्त जो बाकी रहता है उसका नाम है "आसुरिकता तथा शक्तिवाद का संघर्ष"। ब्रिटेन तथा देश के एक श्रेणी के नेता यदि शक्तिवादियों को इस प्रकार का संघर्ष का सुयोग दें तो यही संघर्ष ही भारत को शक्तिशाली तथा मुक्त करेगी। हिन्दूमुसलमान मिलन या विच्छेद का कोई प्रश्न ही शक्तिवाद में नहीं उठ सकता। इसकी दृष्टि में सब मनुष्य समान हैं; यहाँ संघर्ष केवल देवताओं तथा असुरों में है। इसलिये हिन्दू-मुसलमान मिलन-बैठकों के लिये जो अधीर हो रहे हैं उन सब भद्र महोदयों को देश के लिये शैतान की भांति विपज्जनक जानना। अतीत में मुसलमान समाज के एक बड़े अंश ने जिस प्रकार से अपना आत्म परिचय दिया है उस कारण शक्तिवादी लोग यदि हिन्दुओं में अधिक संख्यक शक्तिवादी न प्रस्तुत कर लें तो अत्यन्त भूल करेंगे। वर्तमान साम्प्रदायिक शासन के दिनों में असाम्प्रदायिकता का आदर्शवाद कोई काम न देगी। जब तक साम्प्रदायिक बँटवारा जारी रहेगा तब तक साम्प्रदायिक रूप से ही शक्तिवाद की भित्ति देनी पड़ेगी। जब साम्प्रदायिक बँटवारा संशोधन हो जायगा तब शक्तिवाद के साथ साम्प्रदायिकता की मलहम पट्टी की भी कोई आवश्यकता न होगी। शक्तिवाद व्यक्ति, देश, समाज या प्रदेश जिस किसी सीमा के भीतर एक ही प्रकार का रहता है। गान्धीवाद, समाजतन्त्रवाद, तथा कांग्रेसवाद की भांति इसमें धर्म जाने का डर नहीं है। जिनकी नीति आसुरिक नहीं है उनके साथ शक्तिवाद का कभी संघर्ष न होगा। दुर्बलस्तरकी कर्मनीति

(गांधीवाद, पौरहित्यवाद, समाजतंत्रवाद) आसुरिकता का प्रश्रय दाता है। इसलिते शक्तिवादी अत्यन्त घृणापूर्वक उसे परित्याग करेंगे।

९३. किसी कर्म को हीन न समझना। कर्म मनुष्य को अन्न देता है तथा अन्न ही जीवन है। अतएव कर्ममात्र ही शक्तिवादी के लिये अत्यन्त पवित्र तथा ग्रहणीय वस्तु है। युवकगण जिससे बेकार घर न बैठ मजदूरी, कुली का काम, खेती, ब्याह का बाजा; मन्दिर में बाजा बजाने का काम, बाल काटना, धोबी, बढ़ई, खोदनेवालों, राजमिस्त्री, मछली पकड़ना, गाड़ीवान, पानी उठाना, कलई करना, जूता बनाना, तरकारी बेचना इत्यादि छोटे मोटे नाना प्रकार के कामों में आत्मनियोग कर कुछ रोजगार कर सकें इसलिये सर्व्वत्र संगठन करना होगा। स्मरण रखना चाहिये कि मोटे कामों ही के बीच से किसी संगठन की शक्ति तथा प्रतिभा अधिक शक्तिशाली होती है।

९४. देश के प्रत्येक बालक जिससे सुन्दर स्वास्थ्य, सुशिक्षा, सत्साहस तथा चरित्रबल लाभ कर सकें तथा जिससे वे मोटा, महीन सब प्रकार कामों के उपयुक्त बन सकें इसलिये सब को चेष्टा करनी होगी। खेल कूद के साथ प्रत्येक युवक को सामरिक शिक्षा देने की व्यवस्था करनी होगी। ये युवकगण जिससे हलके चिन्ता में अभ्यस्त नेताओं के निर्देश से एक ही दिन में स्वराज्य लाभ करने की आशा में व्यर्थ ही दुःसाहसिक कार्यों में लिप्त न हों इसलिये उन्हें सतर्क कर देना होगा। हाँ यह कहना अत्यन्त आवश्यक है कि युवकगण लुटेरों के अत्याचार के समय समाज को उनसे रक्षा करने में साहसपूर्वक आत्मनियोग करेंगे तथा सदैव गुंडों से स्त्रियों की रक्षा करने में यत्नशील होंगे।

९५. नारियाँ युवकों से सम्पूर्ण स्वतंत्र रहकर, अच्छा स्वास्थ्य चरित्रबल अर्जन तथा गुंडों से आत्मरक्षा करने का सत्साहस तथा कौशल शिक्षा करेंगी। सब बुद्धिमती तथा विलासिताहीन होंगी, विभिन्न प्रकार की कलाओं तथा गृहस्थी करने की सुशिक्षा अर्जन करेंगी; कुछ कुछ चिकित्साविद्या, स्वास्थतत्त्व तथा शरीरतत्त्व भी आलोचना करेंगी तथा वृहत्तर जीवन की समस्याओं के सम्बन्ध में चिंता करेंगी। यह अधिकांश देखा जाता है कि नारियाँ ही नारियों के सुख की विशेष विरोधी होती हैं; इसलिये उन्हें ईर्ष्या द्वारा परिचालित न होकर परस्पर परस्पर की हितैषिनी बनना होगा।

१६. शक्तिवादी घर तथा बाहर सर्वत्र सब के साथ सद्व्यवहार करेंगे; परन्तु आसुरिकता, गुंडईपन, तथा दुर्बल चिन्ता के विरुद्ध कठोर होंगे। एक मनुष्य को भी शक्तिवादी बनाने के लिये असीम धैर्य्य अवलम्बन करेंगे। अन्याय या अविचार न रहने से अकारण कभी केन्द्रीय शासन तन्त्र को तंग करनेवालों के दल में भाग न लेंगे।

१७. १६३६ ई० का युद्ध तथा शक्तिवाद—त्रिपुरी कांग्रेस के पूर्व ही हमारा यह शक्तिवाद लिखा गया था। इस अति अल्प समय में ही अन्तर्जातीय तथा भारतीय चिन्ता में अनेक परिवर्तन आ गये हैं। इस युद्ध में भारतवासी राजनैतिक क्षेत्र में जो शिक्षा लाभ करेंगे उससे भारत की चिन्ता में एक नये अध्याय की सूचना होगी। यूरोपीय समर इतना शीघ्र आरम्भ होगा यह धारणा नहीं की गई थी; ब्रिटेन की नीति जर्मनी को संतुष्ट करने के अनुकूल ही थी। जर्मनी का लक्ष्य था कि ब्रिटेन युरोप की अन्यान्य कई (इटली तथा फ्रान्स) शक्तियों की सहायता से ब्रिटेन का सर्वनाश करेंगे। जर्मनी इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये फ्रान्स को बहुत दिनों से अपने दल में मिलाने की चेष्टा में था। जर्मनी इस लक्ष्य की ओर कुछ दूर अग्रसर भी हुआ था यह कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। फलतः यदि फ्रान्स की मित्रता पर ब्रिटेन का विश्वास अटूट माना जाय तो ब्रिटेन के लिये इतना शीघ्र युद्ध में अवतीर्ण होने का कोई कारण नहीं है। वास्तविक इसे छोड़ ब्रिटेन के लिये अभी युद्ध क्षेत्र में उतरने का कोई दूसरा कारण ही नहीं है। परन्तु, यह ब्रिटेन स्वयं भी भलीभांति जानता है कि इस युद्ध में उसे हो अधिक तथा गहरी क्षति स्वीकार करनी पड़ेगी। इस युद्ध में अब तक ब्रिटेन् ने बड़ी बुद्धिमानी के साथ अपनी शक्ति को रक्षा कर युद्ध करने की नीति अवलम्बन किया है, किन्तु फिर भी फल क्या होगा यह नहीं कहा जा सकता। यूरोप की आन्तर्जातिक स्थिति में कब किस प्रकार का परिवर्तन होकर किस पक्ष का सर्वनाश होगा यह कहना अति कठिन है। इस युद्ध को जो जिस दृष्टि से से ही क्यों न देखे यह जो स्वार्थ का संघात है यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता। शक्तिवाद की दृष्टि में यह केवल दो आसुरिक शक्तियों का संग्राम छोड़ इसमें समझने का और कुछ है ही नहीं। ब्रिटेन भारत से जब तक अपनी शोषननीति हटा न लेगी तब तक भारतवासियों के लिये यह

मानना कि ब्रिटेन बड़ा उदार तथा आदर्शवादी देश है ऐसी आशा करना व्यर्थ है। उस उपलक्ष में कांग्रेस शासित प्रदेशों में नियमतान्त्रिक विद्रोह (असहयोग) घोषणा की गई है। इसके परिणाम स्वरूप भारत को कोई सुविधा प्राप्त होगी यह अभी विश्वास नहीं कर सकते, परन्तु इसके द्वारा हिन्दुओं की शक्ति खर्व होने की एक और अध्याय की सूचना हुई। अवश्य अंग्रेजों का विपद् और गहरा रंग पकड़ने से अंग्रेज भी सुर नरम करेंगे; क्योंकि देश की चिन्ता गांधीवाद से हट जा रही है। भलाई तो इसी में है कि यह गान्धीवाद विद्रोह यदि और अधिक अग्रसर न हो, नहीं तो इसके फलस्वरूप समाज को विशेष हानि पहुँचेगी। इस समय गांधीवादी दल पदत्याग न कर यदि अन्य किसी उपाय से अपना असन्तोष प्रकट करते तो अधिक अच्छा होता। अतीत की अभिज्ञता से यही प्रमाण होता है कि व्यापक विद्रोह आरम्भ होने के साथ ही साथ मुसलमानों का गुंडईपन बढ़ने लगता है, परन्तु गाँधीवादी तथा समाजतांत्रिक नेताओं ने इसका प्रतिकार करने के लिये आज तक कोई पथ आविष्कार नहीं किया है। इसलिये इस समय नेतागण को सावधान हो कर व्यापक विद्रोह में ईंधन न देने ही से अच्छा होगा। महासभा की चिन्ता जब तक व्यापक नहीं हो उठती है तब तक देश किसी प्रकार विद्रोह के लिये तैय्यार नहीं है, यह चिन्ताशील मात्र ही समझ सकते हैं। इस युद्ध ही में प्रमाण हो जायगा कि विगत पचास साल हमारी जाति किस प्रकार व्यर्थ कर्म के पीछे लगी रही। कांग्रेस देश में जो जागरण लाने का दावा करती है वह युग का जागरण है, उसमें कांग्रेस की कुछ भी कृतित्व नहीं है। किन्तु यह पचास साल विशेषकर विगत बीस वर्ष जिस अदूरदर्शिता के साथ नेताओं ने कांग्रेस को भ्रान्त पथ में परिचालित किया है, इसलिये चिन्ताशील मनुष्यों के निकट उनका यह अपराध अक्षम्य है। जब तक गान्धीवाद तथा समाजतान्त्रिक आदर्श निष्प्रभ नहीं होगा एवं शक्तिशाली चिन्ता दृढ़ता से जड़ न पकड़ेगी तब तक देश में विद्रोह मचाना आत्महत्या करने के तुल्य ही समझना चाहिये। इस महायुद्ध के उपलक्ष में हमने विलायत से जो घोषणायें सुनी हैं उससे यही स्पष्ट प्रकट होता है कि भारत को इस युद्ध में विशेष कुछ न मिलेगा। ब्रिटिश जानते हैं कि भारत के नेताओं ने भारत को अब बहुत दिनों के लिये शक्तिहीन कर रखा है। मुसलिम लीग की अत्यन्त स्वार्थपरता, गान्धीवादियों द्वारा हिन्दू स्वार्थ खर्व

कर मुसलमानों की पूजा, सोश्यलिष्टों द्वारा गान्धीवादियों की इस अपचेष्टा का समर्थन तथा सोश्यलिज्म के श्रेणीविद्वेष के प्रचार ने स्वाधीनता के प्रधान समर्थक हिन्दूसमाज को दो विभिन्न चिन्ताओं द्वारा विच्छिन्न कर भारत को इस सुयोग में शक्तिहीन बना दिया है। इस समय कांग्रेस विद्रोह मचाने पर भी शक्तिवाद को उसके उपयुक्त स्थान में प्रतिष्ठित होने का सुयोग मिलेगा तथा विद्रोह न मचाने पर भी गान्धीवादी कांग्रेस अपनी प्रतिष्ठा खो कर शक्तिवाद की प्रतिष्ठा के लिये रास्ता साफ कर देगी। १९३९ साल का यह यूरोपीय युद्ध भारत के चिन्ताजगत में एक नये अध्याय का सूचना करेगी यह देशवासी भी क्रमशः समझ पायेंगे। यदि शक्तिशाली न होकर कांग्रेस इस समय व्यापक विद्रोह घोषणा करे तो इसके परिणाम गुंडईपन के ठेकेदार भी अपना कुकर्म आरम्भ करेंगे, यह एकदम सुनिश्चित है। शक्तिवादियों का उस समय कर्तव्य होगा कि गुंडों के आक्रमण से नारियों तथा शिशुओं की रक्षा करने के लिये प्रस्तुत रहें तथा गांधीवादी कांग्रेस के संघर्ष से सावधानी से दूर रहें। जिस समाज ने भारत में लूटमार, नारियों का अपमान तथा बच्चों की हत्या के लिये प्रसिद्धि लाभ की है उन पर हमारी कितनी गंभीर घृणा है उसका निदर्शन भारत के गौरव के दिन के इतिहास में लिखित रहेगा। यह सच है कि आज जो साम्प्रदायिक झगड़ा भारत के वायुमंडल को विशाक्त कर रही है वह शीघ्र ही मिट जायगी, परन्तु इतिहास के पन्ने युग युग तक इस गुंडई के कलंक से कलंकित रहेंगे। जिस गांधीवाद ने भी इस अनीति के आग में ईंधन दिया है उसकी स्मृति भी इतिहास से मिट नहीं जायगी। यह महायुद्ध यदि दीर्घकाल तक स्थायी हो तो शक्तिवाद भारत के लिये अमृत का काम करेगा।

९८. **रूस का भारत आक्रमण (?)**—बहुतेरों का अनुमान है कि अफगानिस्तान के बीच से रूस भारत पर आक्रमण करेगा। उस समय भारत का क्या कर्तव्य होगा इस सम्बन्ध में प्रश्न उठ सकता है। रूस की साम्राज्यलिप्सा दिन दिन जैसी बढ़ रही है तथा ब्रिटेन का अधीनस्थ भारत जिस प्रकार शोषित तथा शासन द्वारा उत्पन्न की हुई अन्तर्कलह से जर्जरित हो रहा है ऐसी अवस्था में रूस द्वारा भारत आक्रमण तथा भारतवासियों के एक शक्तिशाली अंश का रूस का अनुगमन करना कोई अस्वाभाविक नहीं

है। यह अत्यन्त चिन्तनीय विषय है कि ऐसे समय पर शक्तिवादी क्या करेंगे। किसी देश ही में धनसाम्यवाद की स्थापना नहीं हो सकती। रूस में भी वह स्थापित नहीं हुई है, परन्तु रूस ने साम्राज्यविस्तार के लिये ग़रीब, कृषक तथा मध्यवित्तों के एक बड़े अंश को अपनी ओर करने के लिये एक शक्तिशाली कर्मविज्ञान आविष्कार कर लिया है। केन्द्रीय शासन कभी सोश्यलिष्ट कर्मविज्ञानानुसार नहीं चल सकता। रूस के राष्ट्र नायकगण इस स्वाभाविक सत्य को जानते हैं तथा अपनी शासन नीति को 'ट्रानजिटरी स्टेज' कह चलाने की चेष्टा कर असली सत्य को छिपाते हैं। कुछ दिन पहले भी रूस में गवर्नमेन्ट का विरोधी एक अत्यन्त शक्तिशाली सोश्यलिष्ट सिद्धान्तों पर सचमुच विश्वास रखनेवाला दल था। प्रति वर्ष इस संघ के सहस्रों को मृत्युदण्ड दिया जाता था। रूस के राज्यविस्तार का कार्य आरम्भ होने के साथ ही साथ इस दल का काम स्वभावतः ही निष्प्रभ हो जायगा; क्योंकि जो जातियाँ शक्तिस्तर की चिन्ता से अनभिज्ञ हैं उनमें दूसरी जातियों पर आधिपत्य करने का लोभ रहना स्वाभाविक है। यह आसुरिक मनोवृत्ति ही का लक्षण है।

६६. सोश्यलिज्म का एक मजेदार वैशिष्ट्य यह है कि जिस किसी देश ही में जिस किसी शासनतन्त्र का विरोधी एक दल की स्थापना इस नाम से हो सकती है। अवश्य अनेक साम्राज्यों के शोषक और शासक इंगलैण्ड तथा फ्रान्स में इनका अस्तित्व न रहने ही के बराबर है, क्योंकि जब तक ये पार्लियामेण्ट में संख्यालघु रहते हैं तब तक ये शासननीति के तीव्र विरोधी होते हैं। फिर ज्यों ही ये संख्यागरिष्ठ हुये त्यों ही इनके नेता वागाडम्बर का आदर्श त्याग अपने दल के बड़े अंश को लेकर उसी क्षण रक्षणशील दल में जा भिड़ते हैं। रूस साम्राज्यविस्तार में मनोनियोग करने के बाद उस शासन तन्त्र के विरोधी प्रकृत सोश्यलिष्टों की मनोवृत्ति भी एक दिन इंगलैंड तथा फ्रांस के सोश्यलिष्टों की भांति हो जायगी। साम्राज्यवादी देशों में सोश्यलिष्ट दल का अस्तित्व उनके अधीनस्थ देश के एक दल युवकों के लिये मृगतृष्णा की भांति ही विपज्जनक है। शक्तिवादी जान रखें कि यह मरीचिका अधीनस्थ साम्राज्य की जातीय चिन्ता को दो भागों में विभक्त कर उस देश को शक्तिहीन बना देश को विपद में डालने के लिये ही विद्यमान है। भारत में सोश्यलिष्टों का अस्तित्व रहने के अनेक

कारण हैं । इस विषय में इंगलैण्ड, फ्रान्स, रूस सभी अल्पाधिक व्यय कर अपनी स्वार्थरक्षा के लिये इनका अस्तित्व बनाये रखने में यत्नशील हैं ।

१००. रूस का साम्राज्यविस्तार तथा साम्राज्यशासन की नीति के साथ इंगलैण्ड का साम्राज्यविस्तार तथा साम्राज्यशासन के आदर्श में अन्तर है । रूस राज्यविस्तार कर उसे आश्रित राज्य बना रखता है । इंगलैण्ड हस्तगत राज्य को युग युग शोषण करने के लिये उस जाति को निष्प्रभ कर जिन्दा रखती है । रूस राज्यविस्तार कर अधिकृत देश के स्वाधीन तथा सतेज अंश को बूर्जुआ दल के अन्तर्भुक्त कह उनका सिर काट उस देश के मजदूर, कृषक तथा मध्यवित्त श्रेणी के एक अंश को अपनी ओर मिला देश के प्रभुत्व को अपने हाथों उठा लेती है । शक्तिवादी रूस की इस नीति को घृणा करते हैं । इस नीति के बल रूस युग युग जिस किसी उन्नत सभ्यता पर प्रतिष्ठित देश को अपने अधीन कर रखने में समर्थ है शोषणवाद से यह शिरश्छेद की नीति कम विपज्जनक नहीं है । एक जाति के साहसी, त्यागी, धीर तथा उन्नत चिन्ता में अभ्यस्त मनुष्यों को ध्वंस कर उस जाति के मध्यस्थित केवल पशुस्तर के मनुष्यों की रक्षा कर राज्य करने की नीति को हम क्या कह सकते हैं ? रूस की राष्ट्रनीति तथा सोश्यलिष्ट नीति एक वस्तु नहीं है, इसके हम अनेक प्रमाण दे सकते हैं; परन्तु रूस राष्ट्रनायकों की अनेक राष्ट्रों की स्वाधीनता हरण कर अपनी प्रभुत्व शक्ति वृद्धि करने की चेष्टा वर्तमान युग की साम्राज्य तथा धनतान्त्रिक गण की साम्राज्य विस्तार के सहित तुल्य रूप से तुलनीय न होने पर भी, मध्ययुग के प्रभुत्व-वादी सम्राटों की नीति के सहित पूर्णतया तुलनीय तथा निन्दनीय है । भारत पर लूटमार तथा शोषणवाद किस प्रकार आधिपत्य जमा कर बैठी है इसे हम मर्म से अनुभव कर रहे हैं । हमारी समझ में रूस की राज्य-विस्तार की सीमा भारत की सीमा अतिक्रम करने से भारत की उन्नत चिन्ता तथा आदर्श के साथ उसकी एक भीषण टक्कर होगी । हमारे मतानुसार रूस को भारत में बुला लाने की अपेक्षा शक्तिवाद के सहारे लूटमार को खत्म करने का शक्ति अर्जन कर शोषणवाद का उच्छेद करना सुगम तथा उचित होगा ।

१०१. रूस यदि भारत अधिकार कर ले तथा रूस को यदि अपने

सोश्यलिष्ट दार्शनिक भित्ति पर तनिक भी विश्वास हो तो रूस की नीति अवश्य ही भारत की शक्तिवाद के निकट पराजित होगी। परिणामस्वरूप केवल भारत ही में शक्तिवाद की प्रतिष्ठा न होकर रूस में भी उसकी प्रतिष्ठा होगी। परन्तु मनुष्य का प्रभुत्व करने का लोभ तथा अल्पबुद्धियों का अपने दल पर मोह अत्यन्त विपज्जनक वस्तु है। इसलिये हम यह क्योंकर विश्वास करें कि हमारे देश के सोश्यलिष्ट दल मोह में फँस रूसीय राष्ट्रनायकों के प्रभुत्व के सहायक न होंगे? मुसलमान लोग जाति तथा रक्त में हिन्दू होते हुये भी आज दल मोह में फँस किस प्रकार भारत का सत्यानास करने पर तुले हुये हैं यह हम नित्य प्रत्यक्ष कर रहे हैं। रूस की आर्थिक व्यवस्था इतनी शक्तिशाली है कि किसी देश में प्रतिष्ठित रूसी गवर्नमेन्ट अपने प्रतिकूल जिस किसी दल को भूखा मार डालने में समर्थ है।

१०२. रूस के आक्रमण में भारत के एक शक्तिशाली अंश में यदि रूस के अनुकूल होने के लक्षण दीख पड़ें तो रूसी आक्रमण को प्रतिहत करना असम्भव होगा। इंगलैंड का शोपणश्रृङ्खल यदि उसके पहले ही छिन्न हो जाय तो शक्तिवाद आशा करता है कि रूसी आक्रमण में भारत का कोई शक्तिशाली अंश रूस के अनुकूल न होगा। भारत पर, इंगलैंड के शोपण जाल से मुक्त होने पर भी, यदि रूस का आक्रमण हो और उस समय पर यदि दीखे कि कोई अंश रूस के अनुकूल हुआ है तो शक्तिवादी का कर्त्तव्य होगा कि उन युवकों के सहित कठोर नीति प्रयोग के समर्थक होना तथा सम्मिलित रूप से रूस के आक्रमण को बाधा देना। पहले ही कहा गया है कि इंगलैंड यदि भारत पर से शोषण जाल उठा ले और शक्तिवादी इंगलैंड का मित्र बन सम्राट के आधीन में रहे तो शक्तिवाद के विचार में भारत की स्वाधीनता कोई कमी वेशी न होगी। इंगलैण्ड भी भारत से मित्रता सूत्र में यदि आबद्ध रहे तो इंगलैंड का अत्यन्त कल्याण होगा। यहाँ यह भी कहना आवश्यक है कि इंगलैंड की सामरिक शक्ति तथा कौशल यदि भारत के पीछे न रहे तो तिरस्त्रीकृत भारत आभ्यन्तरीन कर्मनीति के विज्ञान में एक होने पर भी रूसी आक्रमण को प्रतिहत न कर सकेगा। भारत की जातीय चिन्ता जिससे दो भागों में विभक्त न हो जाय, भारत का शासन भार जिससे विदेशियों के हाथों न जाकर

भारतवासियों ही के हाथ रहे तथा भारतीय चिन्ताशीलों को बूजैवा दल में डाल उनके सिर काटने की नीति यहाँ युग युग के लिये स्थापित न हो सके, इन सब ओर विचार कर शक्तिवादी कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण होंगे। देश को अनजान रूस के हाथों उठा देने की अपेक्षा इस युद्ध में इंगलैंड का शोषण जाल छिन्न करना हमारी समझ में सहज है। शक्तिवादी जान बूझ कर देश को हानि न पहुँचायेंगे, परन्तु सब कुछ निर्भर करता है इंगलैंड के व्यवहार पर। दीर्घ युद्ध में भारत की चिन्ता को शक्तिशाली होने का समय मिलेगा और असन्तुष्ट भारत हो ब्रिटेन के प्रतिकूल जाने को उत्साहित होगा। अंग्रेज सायद सोचते होगें कि रूसी आक्रमण में भारत असन्तुष्ट रहने से भी कोई डर नहीं है, क्योंकि वे देख रहे हैं असन्तुष्ट भारत का एक शक्तिशाली अंश (राजा, जमीनदार, धनी प्रभृति) रूस के विरोध में खड़े होकर साथ देगें। अंग्रेज की यह आशा को रूस कमजोर कर दे सकते हैं, यदि रूस असन्तुष्ट भारत को ऐसी घोषणा देकर आक्रमण करे कि—रूस भारतीय राजाओं का अधिकार रक्षा करते हुये प्रजाओं की अवस्था को उन्नति करने के सहायक होंगे। अतएव रूसी आक्रमण में भारत को असन्तुष्ट रखना अंग्रेज के लिये दूरदर्शितासूचक न होगा।

युद्ध आरम्भ में भारत की राजनैतिक चिन्ता—

१०३. महायुद्ध आरम्भ हुये चार महीने हो गये। जनवरी (१९४० ई०) युद्ध का पंचम माह है। इन चार महीनों में भारत को बहुत कुछ सीखने का सुयोग मिला है। भारत की स्वाधीनता के उपासकगण तीन शक्तिशाली दलों में विभक्त हैं—गान्धीवादी, वामपन्थी तथा महासभापन्थी। भारत की स्वाधीनता के विरोधियों में विलायत का रक्षणशील दल तथा इस देश के मुस्लिम लीगियों का नाम विशेषरूप से उल्लेख योग्य है। स्वाधीनता के उपासकों को इन दोनों दल की कर्मनीति तथा चिन्ताधारा को सन्देह की दृष्टि से देखना कर्त्तव्य है। स्वाधीनता चाहनेवाले ये दलों का चिन्ताविज्ञान तथा कर्मधारा विभिन्न प्रकार की होने पर भी ये स्वाधीनता के विश्वस्त उपासक होने के कारण इनकी कर्मधारा एक ही ओर अग्रसर होने को बाध्य है। हम गान्धीवादियों को शीघ्र मुसलमानों को खुशामद करने की नीति तथा वामपन्थियों को श्रेणीविद्वेष त्याग करने को कहते हैं। महासभा ब्रिटेन के

अनुकूल रह कर संघबद्ध होना चाहता है, इसलिये कोई कोई इसे नापसन्द करते हैं। परन्तु, महासभा ने इस समय ऐसी नीति ग्रहण कर बड़ी दूरदर्शिता का परिचय दिया है। महासभा शक्तिशाली न होने से केवल मुस्लिम गुंडई द्वारा ही पचास वर्ष तक भारत की स्वाधीनता प्राप्त करने की चेष्टा को रोक रखा जा सकता है। लीगवाले चाहते हैं कि हिन्दू स्वाधीनता अर्जन करें तथा उसका फल मुसलमान भोग करें। यदि भारत में शरियत की शासन ही न स्थापित हो सके तो वे ब्रिटिश शासन को कायम रखने के लिये ही सब शक्ति प्रयोग करेंगे। इसी लिये शायद शरियत तुर्की वीर कमाल आतातुर्क को इतना अप्रिय था। ये गांधीवादियों को जिस प्रकार गुंडई के डर से दबा रखना चाहते हैं महासभा को उस प्रकार दबा न सकेंगे। ये हिन्दुओं को जितना ऐक्य शक्तिहीन तथा दुर्बल समझते हैं वास्तविक हिन्दू उतने संघशक्ति-हीन तथा दुर्बल नहीं हैं। लीगी मुसलमानों का शासन सभ्य समाज के लिये कितना अनुपयुक्त है उसका प्रमाण बंगाल की हक मन्त्रिसभा के रेकार्ड में मिलेगा। इस मन्त्रिसभा के शासनकाल में बंगाल की व्यवस्थापक सभा के अधिवेशनों का विवरण पढ़ने से यही पता चलेगा कि मानों वह व्यवस्थापक सभा नहीं है, वह केवल हिन्दुओं पर साम्प्रदायिक गुंडईपन करने के लिये अखाड़ा मात्र है। इस गुंडईपन की आग में दक्षिण तथा वामपन्थी कांग्रेसियों ने भी यथेष्ट ईंधन दिया है। विलायती स्वार्थवादियों के समर्थक एंग्लो-इंडियन संवादपत्रों के पढ़ने से यही पता चलता है कि सारे भारत में लीगवाले तथा ब्रिटिश मिल कर एक षड्यन्त्र चला रहा है। ये अखबारें निर्लज्ज होकर मुस्लिम अनीति का प्रश्रय देती हैं तथा हिन्दुओं को गान्धीवाद के मोह में फँसा युगों दबा रखना चाहती हैं। यदि भारत शक्तिवाद समझ सके तो सब अनीतियों ही का अवसान होगा। इस प्रकार भारत की स्वाधीनता रोक कर अंग्रेज भी इस महायुद्ध से कोरे निकल आयेंगे इसमें यथेष्ट सन्देह है। वर्तमान युद्ध अंगरेजों की अनीति का ही परिणाम है, यह ऐतिहासिक मात्र ही जानते हैं। शेष प्रार्थना यही है कि शक्तिवाद गान्धीवादी, वामपन्थी तथा महासभापन्थियों को शक्तिशाली बनावे तथा उनमें एकता लावे तथा महासमर दीर्घजीवी हो; तभी प्रकृति अनेक अविचार के मीमांसा में सहायक होगी।

समाप्त।

ग्रंथकार लिखित पुस्तकों का परिचय

जो—कर्मविज्ञान, मनोविज्ञान, शक्तिविज्ञान, धर्मविज्ञान और समाजविज्ञान के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं [illegible] अवश्य पढ़ें।

प्रत्येक स्तर के मनुष्यों का कर्मलक्षण, चरित्रलक्षण और अनुभूति-लक्षण जानकर सज्जन, दुर्जन, कर्मी, साधक या किसी भी मनुष्य का चरित्र समझने की चेष्टा करें और धर्म का निगूढ़ मर्म समझें।

इसे पढ़कर जीवन को उद्यमी बनावें और जीवन को कर्मठ और सुखमय करें सब सम्प्रदाय के मनुष्यों के लिये उपयोगी है।

१. शक्तिवाद (बंगला) मूल्य [illegible]
२. कर्मविकाश का पथ (हिन्दी) प्रथम भाग ,, [illegible]
३. कर्मविकाश का पथ (बंगला) ,, ,, [illegible]
४. कर्मविकाश का पथ (बंगला) द्वितीया भाग ,, [illegible]
५. कर्मविकाश का पथ (बंगला) तृतीय भाग ,, [illegible]

प्रधान पुस्तकालयों में अनुसन्धान कीजिये या निम्न पते पर लिखिये :—

कुञ्जलाल, टिकौर, चुनार, (यू. पी.)